www.jvbi.ac.in

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं की ओर से रमेश कुमार मेहता (कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान) द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। मुद्रणालय - तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर में मुद्रित। सम्पादक - डॉ. समणी भास्करप्रज्ञा।

RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol: 12, Issue : 1-2, January-December 2020

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

बेस्ट इन क्लास यूनिवर्सिटी अवार्ड
06

पूर्व कुलपति डॉ. रामजी सिंह को पद्म पुरस्कार सम्मान
08

चार दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ
21

Grand Release of Jain Monograph Series
24-25

महिला सप्ताह के तहत विविध कार्यक्रम
38

Jain Vishva Bharati Institute

(Deemed University)

Ladnun-341306, District Nagaur (Rajasthan) INDIA

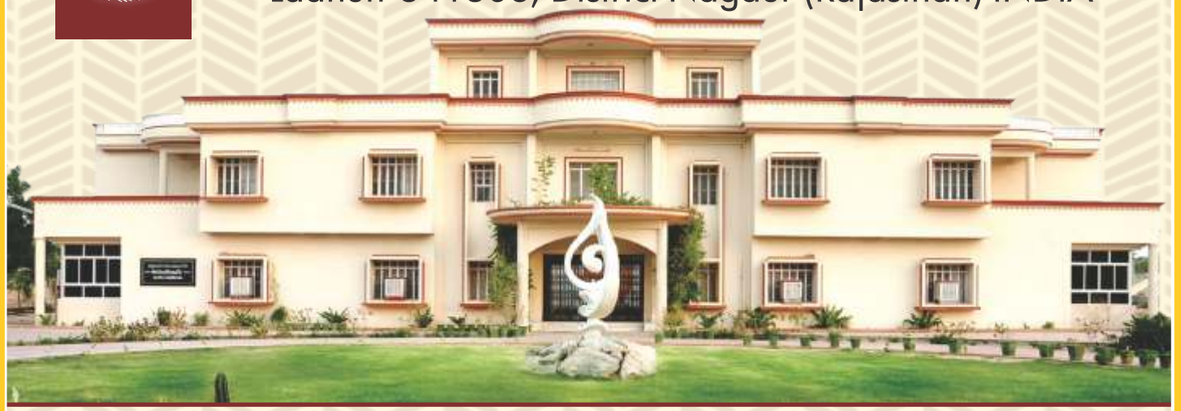

A University Dedicated to Oriental Studies & Human Values

D.Lit. Ph.D. M.Phil. M.A./ M.Sc.

Jainology and Comparative Religion & Philosophy
Prakrit & Sanskrit
Nonviolence and Peace
Yoga and Science of Living

Regular and Distance Education

- M.S.W., English, M.Ed., B.Ed.
- B.A., B.Com, B.Sc.
- Integrated Courses (B.A.-B.Ed. & B.Sc.-B.Ed.)
- Various Diploma & Certificate Courses

- Value-based Education with Spiritual Ambience
- Lush Green Campus with Gurukul Environment
- Education for Women Empowerment and Entrepreneurship
- Student Exchange Programme with various National and International Institutions

Highlights :

- "Jaina Presidential Award" by Federation of Jaina Association in North America
- Asia Education Summit & Awards 2018 for achieving "Best Deemed University in Rajasthan"
- Ranked 10th in Top-25 Private/Deemed Universities in India-2019 by Higher Education Review
- Recognized in "The 20 Most Admired Universities in India 2017" by The Knowledge Review
- Smart Classrooms
- Rich Placements
- Air Conditioned Auditorium
- Wi-Fi Campus
- Hostel/Mess Facility
- More than 15 Labs

For more detail please visit - www.jvbi.ac.in or Contact Tel. 01581-226110, 224332, 226230

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता
जैन विश्व भारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

मन की एकाग्रता साधें

प्रश्न किया गया- एगग्गमणसन्निवेसणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? भंते ! मन को एक अग्र पर केन्द्रित करने से जीव को क्या प्राप्त होता है ? उत्तर दिया गया- एगग्गमणसन्निवेसणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ। एक अग्र पर मन को केन्द्रित करने से चित्त का निरोध हो जाता है।

आदमी का मन चंचल होता है। उसकी दो अवस्थाएं हैं- व्यग्र और एकाग्र। जब मन के विभिन्न आलंबन बन जाते हैं, कभी यहां तो कभी वहां, यानी वह भ्रमणशील रहता है, विकेन्द्रित हो जाता है, यह मन की व्यग्र अवस्था है। जब मन एक आलंबन पर केन्द्रित हो जाता है, यह मन की एकाग्र अवस्था है। आदमी का मन बहुत अच्छा है, क्योंकि मन के द्वारा सुन्दर विचार किया जा सकता है, सुन्दर कल्पना की जा सकती है और मन से सुख भी मिलता है। परन्तु वही मन तब दुःखदायी बन जाता है, जब मन में खराब विचार आ जाते हैं, खराब कल्पनाएं आ जाती हैं। फिर मन दूषित बन जाता है। आदमी अपने मन की चंचलता के कारण दुःखी भी बन सकता है और मन की एकाग्रता से सुखी भी बन सकता है। मन को एकाग्र बनाने के लिए, मन को वश में करने के लिए अपेक्षा है अन्तर्मन में वैराग्य भाव की उत्पत्ति। ऊपर से भले ही किसी ने कितनी तपस्या कर ली, कितना ही दान दे दिया, कितने ही शास्त्रों का अभ्यास कर लिया, कितने ही क्रिया काण्ड कर लिए, ऊपरी आचार का भी पालन कर लिया होगा, किन्तु अगर भाव शुद्ध नहीं हैं तो वह तपस्या, साधना भी विशेष फलदायी नहीं होती। साधना को सफल बनाने के लिए वैराग्य का अंकुर पैदा करना होगा। जब वैराग्य का फल आएगा, तब मन अपने वश में रह सकेगा।

हमारे मन में राग-द्वेष के भाव आ सकते हैं। किसी के द्वारा थोड़ीसी प्रशंसा करने पर हम खुश हो जाते हैं और किसी के द्वारा कुछ निन्दा करने पर हमारे मन में आक्रोश आ जाता है, मन खिन्न भी हो सकता है। ऐसा क्यों होता है? क्योंकि हमारे मन को सहन करने का अभ्यास नहीं है। अगर सहन करने का अभ्यास हो जाए तो फिर भले कोई प्रशंसा करे या निन्दा करे, हमारे मन पर ज्यादा असर नहीं होगा। हम अपनी कामनाओं, इच्छाओं पर संयम करें तो मन नियंत्रित हो सकता है। आदमी अपनी साधना के द्वारा, ध्यान के द्वारा मन को संयमित करने का और मन को एकाग्र बनाने का प्रयास करे।

जो मन विषयों में एकाग्र होता है, शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श में एकाग्र होता है, वह मन आत्मा के साथ जुड़ जाए, परम तत्त्व के साथ जुड़ जाए तो आदमी का कल्याण हो सकता है।

कुछ लोग तपस्या, साधना आदि करते हैं, किन्तु उसके पीछे भी मन में कामना रहती है कि मुझे सत्ता मिले, पैसा मिले, पद मिले आदि। आदमी मन्दिर में भी जाता है तो कामनाओं को साथ लेकर आता है। कामनायुक्त धर्म से ज्यादा लाभ नहीं मिलता। निष्काम होकर भगवान की भक्ति करने से अधिक लाभ मिलता है।

आदमी के मन की एकाग्रता केवल पैसों के लिए न हो, केवल बाह्य विषयों के प्रति न हो। वह एकाग्रता परम प्रभु के प्रति हो जाए, आत्मा के प्रति हो जाए तो बेड़ा पार हो सकता है। यदि सही तरीके से, सही लक्ष्य से भक्ति या उपासना की जाए तो वासना का नाश हो सकता है, मन की पवित्रता बढ़ सकती है। हालांकि मन तो एक प्रकार का यंत्र है। मूल तो भाव है। भीतर जैसे भाव होते हैं, उनके अनुसार मन अच्छा या बुरा बन जाता है। जब भाव अपवित्र होते हैं तब आदमी आतंकवाद में जा सकता है, बलात्कार की ओर आगे बढ़ सकता है, हिंसा आदि गलत कार्यों की दिशा में अग्रसर हो सकता है। इसलिए ध्यान के द्वारा, योग के द्वारा, अध्यात्म की साधना के द्वारा गलत भावों का रेचन किया जाए तो मन स्वतः ही पवित्र बन जाएगा।

आर्षवाणी में सुन्दर कहा गया है कि एक आलम्बन पर मन को केन्द्रित करने से चित्त का निरोध होता है, चित्त शांत होता है। चित्त का निरोध हो जाने से आदमी को परम समाधि और शांति मिल जाती है।

अनुक्रमणिका

संपादकीय

विपरीत परिस्थितियों में भी कुशल प्रबंधन क्षमता के प्रदर्शन से रचे विकास के नए सोपान 05

विविध

01. संस्थान को मिला ''बेस्ट इन क्लास यूनिवर्सिटी अवार्ड 06
02. कुलपति प्रो. दूगड़ को विश्व कवि रविन्द्रनाथ टैगोर मैमोरियल अवार्ड 06
03. कुलाधिपति देश की सबसे अमीर महिलाओं में शुमार 07
04. संस्थान को मिला आईएसओ सर्टीफिकेट 07
05. पूर्व कुलपति डॉ. रामजी सिंह को मिला पद्म पुरस्कार 08
06. आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष समापन कार्यक्रम 08
07. आचार्य महाप्रज्ञ स्मृति ग्रंथ का विमोचन 09
08. अभिनंदन एवं मंगल भावना समारोह 10
09. स्वामी महेश्वरनंद की जैन संतों से चर्चा 11
10. आचार्य महाप्रज्ञ समाधि स्थल पर गोष्ठी एवं ध्यान 12
11. गांव-ढ़ाणी तक दिया जायेगा अहिंसा एवं योग में प्रशिक्षण 12
12. दो दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम 13
13. जैविभा पदाधिकारियों का अभिनंदन 14
14. बिहार के केन्द्रीय विश्वविद्यालय में व्याख्यान 14
15. होली के रंग में हुये सब सराबोर 15
16. संस्थान के कार्मिकों ने दी 1.15 लाख की सहायता 16
17. कौशल विकास कार्यक्रम 17
18. मानसिक स्वास्थ्य एवं कोविड-19 पर वेबिनार 18
19. संस्थान ने शुरू की ऑनलाईन लर्निंग एप्प 18
20. महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ पर राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी 19
21. रैकी और चक्रपद्धति पर कार्यशाला 19
22. सतर्कता, जागरूकता सप्ताह 20
23. चार दिवसीय सांस्कृति प्रतियोगिता का आयोजन 21
24. राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर दो दिवसीय राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी 22
25. ऑनलाईन राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित 22

प्राकृत एवं संस्कृत विभाग

01. प्राकृत वांगमय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार 23
02. दस दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 23

जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग

01. Grand Release of Jain Monograph Series 24
02. जैन योग पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित 25

अहिंसा एवं शांति विभाग

01. ग्राम व सामुदायिक विकास एवं शिक्षकों की भूमिका पर पांच दिवसीय कार्यशाला 26
02. एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर 27

समाज कार्य विभाग

01. कोविड-19 की परिस्थितियों में महिलाओं की भूमिका पर एक दिवसीय वेबिनार 28
02. महिला सुरक्षा व अधिकारों पर राष्ट्रीय वेबिनार 28

शिक्षा विभाग

01. महिला सशक्तिकरण में संविधान की भूमिका पर कार्यक्रम 30
02. मातृ भाषा दिवस/विश्व शांति दिवस/दीपावली 30
03. संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम 31
04. गणाधिपति तुलसी के महाप्रयाण दिवस पर ऑनलाईन संवाद/विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस 31
05. आईसीटी प्रशिक्षण के लिए सात दिवसीय कार्यशाला 32
06. तनाव प्रबंधन पर राष्ट्रीय ई-सिम्पोजियम 32
07. पांच दिवसीय ऑनलाईन एफडीपी कार्यक्रम 33
08. प्रसार भाषण माला/मानवाधिकार दिवस 33
09. पुस्तक समीक्षा 34
10. ऑनलाईन कक्षाओं का आयोजन/होली 35
11. शोध की विधियों पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला 36
12. संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम/एकता दौड़ 36
13. हिन्दी की वर्तमान प्रासंगिकता पर राष्ट्रीय संवाद कार्यक्रम 37
14. शिक्षा नीति के प्रतिबिम्ब पर वेबिनार 37
15. महिला सप्ताह के तहत विविध कार्यक्रम 38
16. रैगिंग अपराध निषेध सेमिनार 39
17. बसंत पंचमी/संविधान दिवस/मातृभाषा दिवस 39

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय

01. अ.भा. अन्तर्महाविद्यालय हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता 40
02. अर्न्तविद्यालयी नृत्य प्रतियोगिता 41
03. वित्तीय अनियमितताओं की रोकथाम पर राष्ट्रीय संगोष्ठी 42
04. भ्रूण हत्या व लैंगिक असंतुलन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी 43
05. सोशल डिस्टेसिंग में ऑनलाईन कक्षाओं संबंधित व्याख्यान 44
06. वित्तीय नियोजन में राष्ट्रीय वेबिनार/गरबा नृत्य की वर्चुअल प्रतियोगिता/पुस्तक समीक्षा/मानवाधिकार दिवस 45
07. मासिक व्याख्यानमाला/ 46-47

योग एवं जीवन विज्ञान विभाग

01. अन्तर्राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता में छात्रा पुरस्कृत 48
02. समग्र स्वास्थ्य के विकास पर वेबिनार 48

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

01. दूरस्थ विद्यार्थियों के लिए एप्प का शुभारंभा 49
02. दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता आश्वासन पर वेबिनार 49
03. पर्यावरण दिवस/देश भक्ति गीता प्रतियोगिता 49

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)

01. सात दिवसीय शिविर 50-51
02. स्वच्छता पखवाड़े में पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम 52
03. फिट इंडिया अभियान के तहत भ्रमण 53
04. सड़क सुरक्षा सप्ताह 53
05. पौधारोपण/क्विज प्रतियोगिता/गांधी जयंती 54
06. जैण्डर चैम्पियनशिप कार्यशाला 55
07. एक दिवसीय ऑनलाईन अभिमुखी कार्यक्रम 55

नेशनल कैडेट कौर (NCC)

01. पुरस्कार एवं पदक वितरण एवं सांस्कृति समारोह 55
02. पुलवामा शहीदों को श्रद्धांजलि 55

Samvahini

(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)
जैन विश्वभारती संस्थान

वर्ष-12, अंक-1-2
जनवरी-दिसम्बर, 2020

संरक्षक
प्रो. बच्छराज दूगड़
कुलपति

सम्पादक
डॉ समणी भास्कर प्रज्ञा

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन
पवन सैन

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ – 341306
नागौर, राजस्थान
दूरभाष : (01581) 226110 226230
फैक्स : (01581) 227472
E-mail : jvbiladnun@gmail.com
Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

विपरीत परिस्थितियों में भी कुशल प्रबंधन क्षमता के प्रदर्शन से रचे विकास के नए सोपान

कोविड और लॉकडाउन में ऑनलाईन गतिविधियों में सबसे अग्रणी

सन् 2020 में कोविड-19 ने अपना घातक रूप दिखाया और फिर लॉकडाउन की स्थिति से सामना करना पड़ा। इसके बावजूद जैन विश्वभारती संस्थान के शैक्षणिक व अशैक्षणिक स्टाफ ने संस्था की गतिविधियों को वर्क फ्रोम होम और ऑनलाईन सिस्टम से लगातार सक्रिय रखा। यह पहली बार था कि विश्वविद्यालय को बंद रखा जाकर भी वर्क फ्रोम होम का प्रयोग किया गया और उसमें पूर्ण सफल होकर अपनी क्षमता प्रदर्शित की गई। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के कुशल निर्देशन में सभी विद्यार्थियों, सम्पूर्ण शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक कार्मिकों के स्वास्थ्य और सम्पूर्ण परिसर की पूर्ण स्वच्छता और विशुद्धि बनाए रखते हुए सभी गतिविधियों को अबाध बनाए रखा।

कोरोना काल को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों के लिए ऑनलाईन कक्षाओं के लिए कार्यशालाएं आयोजित की गई। इसके लिए गूगल क्लासरूम और अन्य एप के बारे में बारीकी से प्रशिक्षण प्रदान किया गया। एफडीपी कार्यक्रम का आयोजन किया जाकर आईटी विशेषज्ञों के माध्यम से ऑनलाईन क्लासेज, चैट का उपयोग, गुणवता पूर्ण तरीके से शिक्षण कार्य करने, फिल्मोरा सॉफ्टवेयर का प्रयोग करके वीडियो तैयार करने, विविध एप की कार्यविधि के बारे में पूर्ण जानकारी दी गई। आईसीटी प्रशिक्षण के लिए सात दिवसीय प्रशिक्षण में गूगल फॉर्म का उपयोग बताया गया। प्रश्नोत्तरी तैयार करने प्रजेंटेशन, जांच व मूल्यांकन, एक्सल में परिणाम तैयार करने, प्रतिदिन ऑनलाईन उपस्थिति लेने और मासिक रिपोर्ट तैयार करने आदि में सबको पारंगत किया गया। इसी कारण यहां सभी कक्षाओं का संचालन ऑनलाईन करने में पूर्ण सफलता मिली। जूम, फेसबुक लाईव, व्हाट्सअप आदि विविध ऑनलाईन एप्प के माध्यम से की गई पढाई से यहां के विद्यार्थी भी प्रसन्न और उत्साहित रहे। छात्राओं ने भी इसके अनुरूप विभिन्न वीडियो तैयार किए, अपना प्रजेंटेशन दिया और असाइनमेंट बनाए। यूजीसी के निर्देशों के अनुसार भी ऑनलाईन स्रोतों का उपयोग शिक्षकों और विद्यार्थियों ने किया। घर बैठे परीक्षा देने की सुविधा भी विकसित की गई।

विश्वविद्यालय ने 'ऑनलाईन लर्निंग एप' बनाकर विद्यार्थियों को घर बैठे सॉफ्टवेयर के माध्यम से नीट, आईआईटी, जी, एनटीएसई, सीए, सीए फाउंडेशन, बीबीए एंट्रेंस, सीएमटी-एमएटी आदि विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारियों के लिए अध्ययन सामग्री हिन्दी व अंग्रेजी में वीडियो लेक्चर, पाठ्यपुस्तकें आदि उपलब्ध करवाने के साथ ही समसामयकि पत्र-पत्रिकाएं, नोट्स आदि की सुविधा भी प्रदान की गई। विभिन्न ई-बुक्स के निःशुल्क डाउनलोड की सुविधा और 'मॉक टेस्ट' देने की सुविधा एंड्रोयड फोन और डेस्कटॉप दोनों के लिए उपलब्ध करवाई गई।

कोविड-19 महामारी और मानसिक स्वास्थ्य के सम्बंध में समय-समय पर अनेक वेबिनार का आयोजन करके विशेषज्ञों की राय और सुझाव लिए गए। साथ ही विश्वविद्यालयों में होने वाले अनेक सेमिनार-संगोष्ठियों को कोविड गाईडलाईन को देखते हुए उन्हें वर्चुअल रूप में ई-संगोष्ठी आदि रूप में आयोजित किया गया।

ऑनलाईन राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगताओं का आयोजन किया गया। निबंध लेखन, स्लोगन, पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता, ऑनलाईन प्रश्नोतरी प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने बढ-चढ कर हिस्सा लिया। यह विद्यार्थियों को मानसिक रूप से प्रफुल्लित रहने और ऊर्जावान रहने में सहायक सिद्ध हुआ। संस्थान में कोविड-19 व लॉकडाउन से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं मानसिक समस्याओं आदि के निदान के लिए विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के मार्गदर्शन के लिए गठित 'कोविड-19 सेल' द्वारा परामर्श प्रदान करके विभिन्न समस्याओं का निपटान किया गया। कोविड की समस्या से जूझने के लिए संस्थान के कार्मिकों ने अपना एक दिन का वेतन देकर सरकार के साथ सहयोग प्रदान किया। संस्थान ने 1 लाख 15 हजार 140 रूपए का चैक प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष में जमा करवाया।

जैन विश्वभारती संस्थान को वर्ल्ड फैडरेशन ऑफ एकेडेमिक एंड एज्युकेशनल इंस्टीट्यूट एंड सीएचआरओ, एशिया द्वारा ''बेस्ट इन क्लास यूनिर्सिटी अवार्ड'' से सम्मानित किया गया। संस्थान को व्यावसायिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा प्रबंधन में उच्च मापदंडों की अनुपालना के आधार पर आई.एस.ओ. 45001 : 2018 सर्टीफिकेशन अवार्ड मिला है और इसके साथ ही पर्यावरण प्रबंधन तंत्र के क्षेत्र में उच्च अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के आधार पर ''आई.एस.ओ. 14001 : 2015'' प्रमाण पत्र भी मिला है। यह संस्थान को मिला तीसरा आईएसओ अवार्ड है। संस्थान के पूर्व कुलपति प्रो. रामजी सिंह को राष्ट्रपति ने 'पद्म पुरस्कार से नवाजा है। यह संस्थान के लिए गौरव की बात है। रामजीसिंह सन् 1992 से 1994 तक संस्थान के कुलपति रहे थे। वर्तमान कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ओरियेंटल द्वारा ''विश्वकवि रविन्द्रनाथ टैगोर मैमोरियल अवार्ड'' से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह सम्मान प्राच्य विद्या एवं संस्कृति के शोध, प्रसार, संरक्षण के प्रयासों के लिए प्रदान किया गया। ''फोर्ब्स इंडिया'' द्वारा करवाए गए सर्वेक्षण में संस्थान की कुलाधिपति सावित्री जिन्दल को देश की सबसे अमीर महिलाओं में शुमार हुई हैं। इन सबसे सिद्ध है कि संस्थान अपने अनुशास्ता के पानव निर्देशन एवं कुलपति के कुशल मार्गदर्शन में निरन्तर विकास के नए सोपान रचता जा रहा है।

– डॉ समणी भास्कर प्रज्ञा

जैन विश्वभारती संस्थान को मिला ''बेस्ट इन क्लास यूनिवर्सिटी अवार्ड''

संस्थान को शिक्षा, शोध एवं समाज-सेवा के क्षेत्र में अप्रतिम उपलब्धियों के लिए मुम्बई के ताज होटल में 15 फरवरी, 2020 को आयोजित ''विश्व मानव संसाधन विकास सम्मेलन- 2020'' के अवसर पर वर्ल्ड फेडरेशन आफ एकेडमिक एंड एज्युकेशनल इंस्टीट्यूट एण्ड सीएचआरओ, एशिया द्वारा ''बेस्ट इन क्लास यूनिवर्सिटी अवार्ड'' सम्मान प्रदान किया गया। संस्थान की ओर से यह सम्मान एन.सी. जैन ने ग्रहण किया।

इस सम्मान के लिये जगन्नाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मदन मोहन, राजस्थान पत्रिका के प्रबंध-संपादक गुलाब कोठारी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष निर्मल कोटेचा, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. चंदन चौबे, आईसीपीआर के पूर्व सचिव प्रो. एस. आर. व्यास, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व संकायाध्यक्ष प्रो. राजबीर सिंह यादव, जय तुलसी फाउण्डेशन कोलकाता के अध्यक्ष तुलसी दूगड़ एवं पूर्व अध्यक्ष बनेचंद मालू, लाडनूँ के समाज सेवी जगदीश शर्मा, ओमप्रकाश बागड़ा, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष सुरेश गोयल, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष लूणकरण छाजेड़, जैन विश्व भारती के निवर्तमान मंत्री भागचंद बरड़िया एवं वर्तमान मंत्री गौरव मांडोत, जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष धरमचंद लूंकड़, पंजाब विश्वविद्यालय की प्रो. कंचन जैन, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की पूर्व अध्यक्ष कुमुद कच्छारा, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रो. आशुतोष प्रधान, प्रो. मनोज सक्सेना, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो. बिमलेन्द्र कुमार, केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिहार के प्रो. जुगल किशोर, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के प्रो. के.एन. व्यास, प्रो. एच.एस. राठौड़, प्रो. धरमचंद जैन, पूर्व डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस मनोज भट्ट, पूर्व कुलपति भोपालचंद लोढ़ा, वैज्ञानिक नरेन्द्र भण्डारी, शांतिनिकेतन विश्वविद्यालय के प्रो. जगतराम भट्टाचार्य, वित्त समिति सदस्य प्रमोद बैद, राजस्थान सरकार के संयुक्त परिवहन आयुक्त डा. नानूराम चोयल आदि ने कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ को इस सम्मान के लिये अपनी बधाइयां प्रेषित की हैं

कुलपति प्रो. दूगड़ को ''विश्व कवि रविन्द्रनाथ टैगोर मैमोरियल अवार्ड'' मिला

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ को इंडियन इंस्टीट्यूट आफ ओरियेंटल की ओर से 7 फरवरी को पश्चिम बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनखड़ ने ''विश्व कवि रविन्द्रनाथ टैगोर मैमोरियल अवार्ड'' से सम्मानित किया। उन्हें यह सम्मान उनकी उत्कृष्ट विद्वता एवं प्राच्य विद्याओं के क्षेत्र में अध्ययन, शोध एवं विकास को संरक्षण, भारतीय संस्कृति के प्रसार एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुति के प्रयासों के लिये प्रदान किया गया है। कोलकाता के रविन्द्र भवन में आयोजित तीन दिवसीय 43वें वार्षिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में इस अवार्ड के रूप में उन्हें सम्मान-स्वरूप प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किये गये। यह सम्मान प्रो. दूगड़ की ओर से जैन विश्वभारती संस्थान की सहायक प्रोफेसर डॉ. प्रेमलता चौरडिया ने प्राप्त किया।

यह पूरे धर्मसंघ का सम्मान

प्रो. दूगड़ को यह सम्मान दिये जाने पर अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष सुरेश गोयल ने कहा कि यह पूरे धर्मसंघ का सम्मान हुआ है। हमें इस बात पर गौरव है कि हमारे समाज में ऐसे विद्वान सज्जन पुरूष हैं। सभा के पूर्व अध्यक्ष हंसराज बेताला, चैनरूप चिंडालिया, पूर्व महामंत्री विनोद बैद, जैन विश्व भारती के मंत्री गौरव जैन, कोषाध्यक्ष प्रमोद बैद, पूर्व अध्यक्ष डॉ. धर्मचंद लूंकड़, रमेश बोहरा, हीरालाल मालू, पूर्व मुख्य न्यासी भागचंद बरडिया, राजस्थान पत्रिका समूह के प्रधान सम्पादक डॉ. गुलाब कोठारी, जय तुलसी फाउंडेशन के अध्यक्ष तुलसी दूगड़, पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्र दूगड़, कनकमल दूगड़, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के पूर्व अध्यक्ष पन्नालाल टांटिया, जगन्नाथ विश्वविद्यालय जयपुर के कुलपति प्रो. मदन मोहन, जैविभा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. बी.सी. लोढा, प्रो. महावीरराज गेलड़ा, नागपुर विश्वविद्यालय के प्रो. भागचंद जैन, हरियाणा के डॉ. संजीव, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रो. आर. के. यादव, राजवीर सिंह यादव, पंजाब विश्वविद्यालय के एम.एल. शर्मा, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो. विमलेन्दु कुमार, शांति निकेतन विश्वविद्यालय के प्रो. जगतराम भट्टाचार्य, जोधपुर विश्वविद्यालय के प्रो. धर्मचंद जैन, शिवनारायण जोशी, संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रो. सुदीप जैन, मुजफ्फरपुर के प्रो. जय कुमार जैन, राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रो. के.एन. व्यास, विद्या जैन, जयपुर के प्रो. अशोक बापना, सुखाडिया विश्वविद्यालय के प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्रो. एसआर व्यास, प्रो. जिनेन्द्र जैन, जम्मू विश्वविद्यालय के प्रो. अनुराग गंगल, भारत सरकार के पूर्व वित्त सलाहकार एमके सिंघी, प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. नरेन्द्र भंडारी, पूर्व पुलिस महानिदेशक डॉ. मनोज भट्ट, परिवहन आयुक्त डॉ. नानूराम चोयल, बीकानेर के दंत चिकित्सक डॉ. राजकुमार पुरोहित, हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. कमलेश कस्वां, वरिष्ठ शल्य चिकित्सक डॉ. वी.एस. घोड़ावत, यूरोलोजिस्ट डॉ. शिवम् प्रियदर्शी, ओमप्रकाश बागड़ा, कमल खटेड़, राजेश खटेड़, ललित वर्मा, रमेश सिंह राठौड़, राजेन्द्र खटेड़, जगदीश प्रसाद पारीक आदि ने उन्हें बधाइयां प्रदान की हैं।

जैविभा विश्वविद्यालय की कुलाधिपति के देश की सबसे अमीर महिलाओं के शुमार होने पर हर्ष

फोर्ब्स इंडिया द्वारा करवाये गये सर्वेक्षण में जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) की कुलाधिपति सावित्री जिन्दल भारत की सबसे अमीर महिलाओं में शुमार हुई है। व्यावसायिक क्षेत्र में कामयाबी हासिल करने वाली देश की प्रमुख महिला सावित्री जिंदल ''जिंदल ग्रुप'' की कंपनियों की मालकिन हैं। जिंदल ग्रुप स्टील, पॉवर, सीमेंट और इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में काम कर रहा है। वे दिवंगत उद्यमी ओम प्रकाश जिंदल की पत्नी है, जिनका देहांत 2005 में हेलिकॉप्टर दुर्घटना में हो गया था। जाने-माने उद्योगपति सज्जन और नवीन जिंदल सावित्री जिन्दल के बेटे हैं। 70 साल की सावित्री जिंदल ने राजनीति में भी हाथ आजमाया और वे हरियाणा सरकार में विधायक और मंत्री रह चुकी हैं। फोर्ब्स ने दुनियाभर के 1,810 अरबपतियों की जो लिस्ट जारी की, उसमें पांच भारतीय अरबपति महिलाएं भी शामिल हैं। इस सूची में सावित्री जिंदल का नाम सबसे ऊपर है। सावित्री जिंदल 6.6 बिलियन डॉलर की संपत्ति की मालकिन हैं। इनका जन्म 20 मार्च, 1950 को हरियाणा के हिसार में हुआ था। जिंदल ग्रुप की नॉन-एग्जीक्यूटिव चेयरमैन सावित्री जिंदल 2005 में हेलिकॉप्टर दुर्घटना में पति की मौत के बाद से ग्रुप प्रमुख की जिम्मेदारी संभाल रही हैं। उनके पति ओ.पी. जिंदल हिसार से विधायक भी रहे थे। 2005 में उनकी मृत्यु के बाद सावित्री जिंदल ने हिसार की राजनीति में कदम रखा और विधायक बनी। फोर्ब्स की सूची में देश की अमीर महिलाओं के शुमार होने पर यहां जैविभा विश्वविद्यालय में हर्ष जताया गया।

जैविभा विश्वविद्यालय को व्यावसायिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा प्रबन्धन के क्षेत्र में आई.एस.ओ. सर्टीफिकेशन

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) को व्यावसायिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा प्रबन्धन के क्षेत्र में उच्च मानदण्डों की अनुपालना के आधार पर आई.एस.ओ. 45001: 2018 सर्टीफिकेशन अवार्ड प्राप्त हुआ है। यह सर्टीफिकेट संस्थान को आगामी तीन वर्ष की अवधि के लिये प्रदान किया गया है। ज्ञातव्य हो कि इससे पूर्व हाल ही में संस्थान को गुणवत्ता प्रबन्धन के क्षेत्र में उच्च मानदण्डों के आधार पर आई.एस.ओ. 9001: 2015 सर्टीफिकेट अवार्ड भी प्राप्त हुआ था। जैन विश्वभारती संस्थान ने अपनी स्थापना से 30 वर्ष की इस अवधि में गुणवत्ता प्रबन्धन, स्वास्थ्य, सुरक्षा, पर्यावरण आदि सभी क्षेत्रों में विशेष सजगता एवं जागरूकता के साथ-साथ उच्च मानकों को स्थापित किया है। इस आईएसओ सर्टिफिकेशन अवार्ड मिलने के उपलक्ष में देशभर के अनेक प्रसिद्ध विद्वत्जनों, समाजसेवियों, व्यावसायियों एवं गणमान्यजनों ने संस्थान को बधाइयां एवं शुभकामनायें प्रेषित की है, जिनमें राजस्थान पत्रिका के प्रधान सम्पादक गुलाब कोठारी जयपुर, प्रसिद्ध व्यवसायी धर्मचंद लुंकड़, अमरचंद लुंकड़, रमेश बोहरा, पुखराज बडाला, रमेश डागा चैन्नई, अरविंद संचेती अहमदाबाद, गौरव जैन जयपुर, चांदरतन दूगड़, प्रमोद बैद कोलकाता, जयतुलसी फाउण्डेशन के चेयरमैन तुलसी दूगड़ कोलकाता, भारत सरकार के पूर्व वित्त सलाहकार एम.सी. सिंघी, तनसुख बैद सिलीगुड़ी, वंदना बरडिया, संदीप सेठिया कोटा, ए.एस. राठौड़, नरेंद्र रांका अजमेर, सुदीप जैन, श्रीचंद दूगड़ दिल्ली, कुलपति प्रो. आर.एल. गोदारा कोटा, पूर्व-कुलप्रति प्रो. रूपसिंह बराठ जयपुर, प्रो. नरेन्द्र भण्डारी, प्रो. प्रेमसुमन जैन उदयपुर, प्रो. जगतराम भट्टाचार्य कोलकाता, प्रो. एस.एन. जोशी, प्रो. सुधी राजीव, डॉ. आशुतोष प्रधान हिमाचलप्रदेश, डॉ. हर्ष जैन, विपुल शाह, महावीर सेमलानी, एम.सी. सिंघी, डॉ. कमलेश कस्वां, सी.पी. जोशी, घनश्याम कच्छावा आदि प्रबुद्धजन शामिल हैं।

जैविभा विश्वविद्यालय को मिला तीसरा आई.एस.ओ. प्रमाण पत्र

संस्थान को फिर से आई.एस.ओ. का मानक प्रमाण पत्र ''आईएसओ 14001 : 2015'' प्राप्त हुआ है। यह प्रमाण पत्र संस्थान को पर्यावरण प्रबंधन तंत्र के क्षेत्र में प्रदान किया गया है। प्रमाण पत्र में बताया गया है कि जैन विश्वभारती संस्थान कला, विज्ञान, वाणिज्य, शिक्षा, सामाजिक विज्ञान, शांति अध्ययन आदि क्षेत्रों में समाज के लिये विभिन्न स्नातक एवं स्नातकोत्तर शैक्षणिक कार्यक्रम प्रदान करके उत्कृष्टता के उच्चतम अंतरराष्ट्रीय मानकों पर शिक्षा, शिक्षण और अनुसंधान के माध्यम से समाज में योगदान दे रहा है, जिसमें ओरियेंटल अध्ययन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। यहां के सारे कार्यक्रम नियमित एवं दूरस्थ शिक्षण व्यवस्था के माध्यम से संचालित किये जाते हैं। यह इस संस्थान को तीसरा आई.एस.ओ. प्रमाण पत्र मिला है। इससे पूर्व जैविभा विश्वविद्यालय को व्यावसायिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा प्रबंधन के क्षेत्र में उच्च मानदंडों की अनुपालना के आधार पर हाल ही में गत अगस्त माह में आई.एस.ओ. का सर्टिफिकेशन अवार्ड प्राप्त हुआ था। जैन विश्वभारती संस्थान ने अपनी स्थापना के 30 वर्षों में लगातार गुणवता, प्रबंधन, स्वास्थ्य, सुरक्षा, पर्यावरण आदि विभिन्न क्षेत्रों में विशेष सजगता एवं जागरूकता के साथ उच्च मानकों को स्थापित किया है। संस्थान को यह तीसरा आई.एस.ओ. प्रमाण पत्र मिला है, जिस पर यहां समस्त स्टाफ ने हर्ष जताया है।

संस्थान के पूर्व कुलपति डॉ. रामजी सिंह को राष्ट्रपति द्वारा दिया गया ''पद्म पुरस्कार'' सम्मान

संस्थान के पूर्व कुलपति डॉ. रामजी सिंह को समाजसेवा के लिये राष्ट्रपति द्वारा 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर ''पद्मश्री पुरस्कार'' से सम्मानित किये जाने पर यहां हर्ष जताया गया और उनकी स्वस्थतापूर्वक दीर्घायु के लिये कामनायें की गई। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचारों को देश-विदेश में फैलाने वाले सर्वोदय विचारक 94 वर्षीय डॉ. रामजी सिंह वर्ष 1992 से 1994 तक जैन विश्वभारती संस्थान के कुलपति रहे थे। उन्होंने 1993 में शिकागों में आयोजित हुए विश्व धर्म संसद में जैनिज्म पर भारत का प्रतिनिधित्व किया था। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया कि प्रो. रामजी सिंह सादगी की प्रतिमूर्ति हैं। उन्होंने अथक प्रयास करके संपूर्ण भारत में गांधी विचार की पढ़ाई शुरू कराई। वे बिहार के भागलपुर संसदीय क्षेत्र से सांसद रहे हैं। देश के पहले गांधी विचार विभाग की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले और विभाग के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. रामजी सिंह मूल रूप से बिहार के भागलपुर के रहने वाले हैं। उनके प्रयासों से देश के पहले गांधी विचार विभाग का उद्घाटन 02 अक्टूबर, 1980 को भागलपुर विश्वविद्यालय में किया गया था। तब यह देश का इकलौता विभाग था, जहां गांधी विचार की पढ़ाई शुरू हुई थी। इन्होंने इसके लिये अपनी महत्त्वपूर्ण व दुर्लभ कही जाने वाली 5 हजार पुस्तकें दान कर दी थी। आज 25 विश्वविद्यालयों में गांधी विचार विभाग की पढ़ाई हो रही है। पद्मश्री का पुरस्कार के बारे में प्रो. रामजी सिंह का कहना था कि यह पुरस्कार उन्हें नहीं बल्कि समाज के लिए काम करने वाले लोगों को समर्पित है।

अहिंसा प्रशिक्षण में महाप्रज्ञ ने दिया रोजगार प्रशिक्षण को महत्व- कुलपति

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के समापन पर कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान में आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के समापन समारोह पर 19 जून को कांफ्रेंस हॉल में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सोशल डिस्टेंस एवं लॉक डाउन के नियमों का पालन करते हुये आयोजित किये गये इस कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा, आचार्य महाप्रज्ञ ने समाज और राष्ट्र के लिये जो किया, वह अद्वितीय है। उनमें प्राणी मात्र के प्रति करूणा के भाव थे, उनके पास कोई व्यक्ति कष्ट या तंगी की हालत में आ जाता था, तो वे उसके कष्टों के निवारण के लिये पूरा प्रयास करते थे। वे मानवता के लिये तत्पर थे, तो देश के लिये भी उनकी सेवा अतुलनीय थी। उनके अहिंसा प्रशिक्षण एवं अहिंसा समवाय के अन्तर्गत रोजगार के लिये प्रशिक्षण के अवसर प्रदान किये गये और बड़ी संख्या में लोगों ने इसका लाभ उठाया। उनका मानाना था कि जब तक व्यक्ति का पेट नहीं भर जाता, तब तक अहिंसा की स्थापना नहीं हो सकती है। उनका सापेक्ष अर्थशास्त्र भी इसी की पुष्टि करता है। उन्होंने परोक्षानुभूति के बजाये प्रत्यक्षानुभूति पर जोर दिया। उनके प्रेक्षाध्यान के सूत्र आत्म दीपोभव, से व्यक्ति को अपने भीतर की शक्तियों के दर्शन का अवसर मिला और उसका उपयोग करने का अवसर भी मिला। उन्होंने अनेकांत के सिद्धांत को आत्मसात् किया था। अनेकांत के दर्शन उनके जीवन को देखने पर साक्षात मिलते हैं।

प्रधानमंत्री ने भी लिया ऑनलाईन कार्यक्रम में भाग

इस अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में शताब्दी समारोह के समापन के अवसर पर आयोजित ऑनलाईन कार्यक्रम का सीधा प्रसारण भी देखा गया। इस ऑनलाईन कार्यक्रम में आचार्य श्री महाश्रमण के अलावा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत एवं नेपाल के बौद्ध संत आनी चोईंग ड्रोलमा ने महाप्रज्ञ के जीवन, कर्तृत्व और उनके अवदानों पर अपने विचार व्यक्त किये और आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। गायक कलाकार अनूप जलोटा, दलेर मेहंदी, कविता कृष्णमूर्ति व कैलाश खरे ने महाप्रज्ञ को समर्पित अपने गीत-रचनायें प्रस्तुत किये। सभी ने इस आनलाईन कार्यक्रम में दूरस्थ सहभागिता निभाई और सम्भाषण किया।

इस कार्यक्रम में राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द एवं उपराष्ट्रपति एम वैंकेया नायडू के संदेशों का प्रस्तुतिकरण किया गया। कार्यक्रम के पश्चात यहां विश्वविद्यालय के सभी उपस्थित अधिकारियों ने तीन मिनट का मंत्र-जाप भी किया। कार्यक्रम में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, प्रो. अनिल धर, डा. युवराज सिंह खांगारोत, डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डा. योगेश कुमार जैन, डा. बिजेन्द्र प्रधान, डा. भाबाग्रही प्रधान, डा. सत्यनारायण भारद्वाज, प्रगति चौरड़िया, कमल कुमार मोदी, दीपाराम खोजा, जगदीश यायावर, मोहन सियोल, राजेन्द्र बागड़ी आदि उपस्थित रहे।

आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन योग और आगमों का पुनरोत्थान किया था- महाश्रमण

आचार्य महाश्रमण ने किया 'आचार्य महाप्रज्ञ स्मृति ग्रंथ' का विमोचन

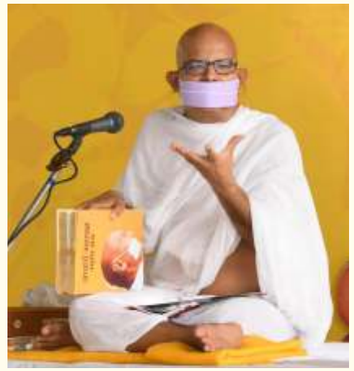

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ द्वारा सम्पादित ग्रंथ ''आचार्य महाश्रमण स्मृति ग्रंथ'' का लोकार्पण गुरूवार को हैदराबाद के आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास-स्थल में आचार्यश्री महाश्रमण ने किया। हैदराबाद के शमसाबाद स्थिति महाश्रमण वाटिका में आयोजित विकास महोत्सव के दौरान इस ग्रंथ-लोकार्पण कार्यक्रम में उन्होंने इसे जैन विश्व भारती एवं विश्वविद्यालय के सहयोग से तैयार विशेष कृति बताया तथा कहा कि इसमें आचार्य महाप्रज्ञ से सम्बंधित लगभग सर्वस्व समाहित है। इसके पढने से पाठक को अच्छा ज्ञान प्राप्त हो सकेगा। यह ग्रंथ प्रेरणादायी सिद्ध होगा। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ महान चिन्तक थे और वे साक्षात विश्वकोश के रूप में थे, जिन्होंने जैन योग, जैन आगमों आदि का पुनरूत्थान किया। आचार्य महाश्रमण ने इस ग्रंथ के लिये मेहनत करने वाले और जुड़ने वाले सभीजनों के लिये मंगलकामनायें की। इस अवसर पर उन्होंने आचार्यश्री तुलसी को याद करते हुये कहा कि आचार्य तुलसी के पट्टोत्सव को आचार्य महाप्रज्ञ ने विकास महोत्सव का नाम दिया था और इसके लिये एक विकास आधार पत्र भी उन्होंने तैयार किया था, जिसमें विधि और विकास दोनों का उल्लेख हैं। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अरविंद संचेती, पूर्व अध्यक्ष डा. धर्मचंद लूंकड़, विश्वविद्यालय प्रबंध समिति के अमरचंद लूंकड़ एवं हैदराबाद चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र चंद भंडारी ने लोकार्पण के लिये इस ग्रंथ को आचार्यश्री महाश्रमण को भेंट किया।

सात भागों में है सम्पूर्ण विवरण समाहित

इस अवसर पर मुनिश्री कीर्तिकुमार ने समारोह में ग्रंथ का परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि ग्रंथ का प्रकाशन जैन विश्व भारती द्वारा किया गया है। आचार्य महाप्रज्ञ के जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर तैयार किये गये इस ग्रंथ के 7 भाग हैं, जिनमें राष्ट्रपति सहित विभिन्न महत्वपूर्ण लोगों के संदेश, महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व, कर्तृत्व, साहित्य और चित्रों सहित विवरण अलग-अलग भागों में आये हैं। इनके अलावा जैविभा विश्वविद्यालय के विभिन्न विद्वानों के आलेख भी अलग-अलग विषयों के और महाप्रज्ञ के प्रकाशित साहित्य का सम्पूर्ण विवरण भी पुस्तक में समाहित किया गया है। उन्होंने बताया कि इस पुस्तक के प्रधान सम्पादक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ रहे और उनके साथ सम्पादक मंडल में नोरतन मल दूगड़, प्रो. नलिन शास्त्री व डा. महेन्द्र जैन भी सम्मिलित रहे। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अरविन्द संचेती ने इस अवसर पर ग्रंथ को तैयार करने एवं प्रकाशन करने तक के कार्य में सहयोग प्रदान करने वाले सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि प्रकाशन का दायित्व जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया पर रहा, जिन्होंने इसके लिये पूरी मेहनत और निर्देशन किया।

ग्रंथ का प्रकाशन जैन विश्व भारती द्वारा किया गया। ग्रंथ के सम्पादन में निर्देशन का कार्य मुनिश्री जयकुमार एवं मुनिश्री कीर्तिकुमार ने किया। इस कार्य में प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रफुल्ल बालोकर आदि का सहयोग भी मिला।

अधिकारों के साथ कर्तव्यों को महत्व देना आवश्यक- प्रो. दूगड़

समारोह पूर्वक मनाया गणतंत्र दिवस

संस्थान में गणतंत्र दिवस के अवसर पर 26 जनवरी को आयोजित समारोह में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने झंडारोहण किया तथा एन.सी.सी. छात्राओं द्वारा प्रस्तुत परेड की सलामी ली। इस अवसर पर उन्होंने शहीदों को याद करते हुये कहा, शहीदों की भावना के अनुसार देश के संविधान को लोकतांत्रिक व लोकहितकारी स्वरूप प्रदान किया गया। उन्होंने संविधान प्रदत्त कर्तव्यों के बारे में जानकारी दी और कहा कि हमें केवल अधिकारों की बात नहीं करनी चाहिये, बल्कि अपने दायित्वों को भी समझाना चाहिये। विश्वविद्यालय के कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. आशुतोष प्रधान, प्रो. अनिल धर आदि ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया। कार्यक्रम में छात्राओं ने भी सम्बोधित किया एवं कवितायें प्रस्तुत की।

फिट इंडिया क्लब की बैठक में विभिन्न कार्यक्रमों पर चर्चा

भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे ''फिट इंडिया'' अभियान के तहत संस्थान में गठित की गई फिट इंडिया क्लब की एक बैठक नोडल अधिकारी डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ की अध्यक्षता में 6 मार्च को आयोजित की गई। बैठक में क्लब के तत्वावधान में गत एक माह की गतिविधियों के बारे में बताया गया तथा वर्तमान में चल रहे व आगे किये जाने वाले कार्यक्रमों के बारे में विचार-विमर्श किया गया। बैठक में जंक फूड की रोकथाम, फिट रहने के लिये क्या किया जाना चाहिये, समाज के हर व्यक्ति को फिट बनाने के लिये उठाये जाने वाले कदमों, खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन और उनमें भाग लेने आदि पर चर्चा की गई। बैठक में डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, डॉ. युवराज सिंह खांगारोत, मोहन सियोल, डॉ. आभासिंह, करण गुर्जर, शेर सिंह, डॉ. विकास शर्मा, अभिषेक शर्मा, प्रगति चौरड़िया, ओमप्रकाश सारण आदि उपस्थित रहे। संचालन खेल प्रशिक्षक अजयपाल सिंह भाटी ने किया।

संतों के आगमन से होती है विवेक की जागृति- मुनिश्री सुमति कुमार

अभिनन्दन वं मंगलभावना समारोह का आयोजन

जैन विश्व भारती स्थित भिक्षु विहार में जैन विश्व भारती एवं जैविभा विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में अभिनन्दन एवं मंगलभावना समारोह का आयोजन 14 फरवरी को किया गया, जिसमें मुनिश्री सुमति कुमार का स्वागत किया गया और मुनिश्री देवेन्द्र कुमार के प्रति मंगलभावनायें व्यक्त की गई। मुनिश्री सुमति कुमार यहां वृद्ध साधु-साध्वी सेवाकेन्द्र व्यवस्थापक के रूप में एक साल के लिये आये हैं तथा मुनिश्री देवेन्द्र कुमार यहां व्यवस्थापक पद से एक साल कार्यरत रह कर सेवानिवृत होकर यहां से प्रस्थान करने जा रहे हैं। कार्यक्रम में मुनिश्री सुमति कुमार ने कहा कि संतों का आना व्यक्ति के भीतर की आंखों को खोल कर उसके विवेक के जागरण का माध्यम बनता है। संतों की संगति के कारण व्यक्ति को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। जो शांत होता है, वही संत होता है। उन्होंने जैन विश्व भारती को पवित्र भूमि बताते हुये कहा कि यह आचार्य तुलसी की महान देन है और यहां शांत व सुरम्य वातावरण मन को प्रसन्नता देता है। मुनिश्री देवेन्द्र कुमार ने बताया कि यहां एक साल वे रहे, उन्हें सहवर्ती संतों, अन्य संतों एवं श्रावक-श्राविकाओं का सहयोग मिला। संतों का आगमन मंगल माना जाता है, तो उनका प्रस्थान भी मंगल ही माना जाता है।

सेवा से होती है ब्रह्म की प्राप्ति

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि केवल सेवा से ब्रह्म की प्राप्ति की बात प्राचीन ग्रंथों और वैदिक साहित्य में मिलती है। मुनिश्री देवेन्द्र कुमार के प्रति मंगलभावना व्यक्त करते हुये उन्होंने कहा कि वे सरल, सहज, निर्लेप व शांत थे और उनमें ऋजुता थी। वे नियमित रूप से यहां आचार्य तुलसी समाधिस्थल जाते और वहां ध्यान-साधना आदि करते थे। उन्होंने मुनिश्री सुमति कुमार को भी धीर, गंभीर व शांत बताते हुये कहा कि उनका यहां पधारना जैन विश्व भारती, जैविभा विश्वविद्यालय और सम्पूर्ण लाडनूं के लिये लाभप्रद रहेगा। कार्यक्रम में मुनिश्री तन्मय कुमार, मुनिश्री देवार्य, आदित्य मुनि, अणुव्रत जीवन विज्ञान अकादमी के असिस्टेंट डायरेक्टर हनुमान मल शर्मा, प्रेक्षा फांउडेशन के चैयरमेन अरविन्द गोठी, राजेन्द्र मोदी इंदौर, दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी आदि ने भी इस अवसर पर स्वागत एवं मंगलभावना व्यक्त की। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के सहमंत्री अशोक चिंडालिया, कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, प्रो. अनिल धर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. युवराज सिंह खंगारोत, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, जगदीश यायावर, प्रगति चौरड़िया, आयुषी शर्मा, पंकज भटनागर, डॉ. जे.पी. सिंह, कमल कुमार मोदी, डॉ. विनोद सियाग, डॉ. सरोज राय, डॉ. सुनिता इंदौरिया, विजय कुमार शर्मा, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. गिरीराज भोजक, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. योगेश जैन, सोमवीर सांगवान, अजयपाल सिंह भाटी आदि उपस्थित थे।

जीवनकाल का महत्वपूर्ण अंग है विद्यार्थी जीवन- आर्यिका विभाश्री

स्थानीय दिगंबर जैन सम्प्रदाय के आचार्य विराग सागर महाराज की शिष्या गणिनी आर्यिका विभाश्री माता ससंघ यहां अपने शीतकालीन प्रवास के दौरान अन्य आर्यिकाओं के साथ यहां जैन विश्वभारती एवं जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) में भ्रमण किया। परिसर भ्रमण के दौरान उन्होंने सबसे पहले पहली पट्टी स्थित वृद्ध साध्वियों के ठिकाने पहुंचकर उनकी कुशल-क्षेम पूछी, तत्पश्चात यहां भिक्षु विहार में मुनिश्री जयकुमार सहित अन्य संतों से मिलकर उनकी सुख-साता पूछी। इसके बाद वे जैन विश्व भारती स्थित गौतम ज्ञानशाला, सचिवालय, विमल विद्या विहार विद्यालय, विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय, कलावीथि (आर्ट गैलरी) एवं जैविभा विश्वविद्यालय के समस्त भवनों और व्यवस्थाओं का अवलोकन किया। जैन विश्वभारती संस्थान के वित्ताधिकारी राकेश कुमार जैन, डा. युवराज सिह खंगारोत, डा. सत्यनारायण भारद्वाज, डा. रविद्र सिंह राठौड़ आदि ने उनका स्वागत किया। विश्वविद्यालय में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने जैन विश्वभारती संस्थान का प्रकाशन आगम-ग्रंथ गणिनी आर्यिका विभाश्री माताजी को भेंट किया। प्रो. त्रिपाठी ने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय का परिचय देते हुए संस्थान द्वारा संचालित नियमित एवं पत्रचार पाठ्यक्रमों की जानकारी दी। विभाश्री माताजी ने विश्वविद्यालय के अन्तर्गत संचालित केंद्रीय पुस्तकालय को देखकर उसकी सराहना की और कहा कि यह पुस्तकालय बहुत दुर्लभ पुस्तकालय है। इस अवसर पर प्रवीण बरड़िया, डॉ. योगेश जैन एवं विजयश्री शर्मा ने जैन विश्वभारती संस्थान एवं मातृसंस्था द्वारा संचालित विविध योजनाओं एवं संस्थाओं का परिचय भी दिया।

शाकाहार से होती है विभिन्न जानवरों की रक्षा- स्वामी महेश्वरानन्द

जैन मुनियों से मिलकर की आध्यात्मिक चर्चा

विश्वभर में योग के प्रति नई जागृति जगाने वाले महामंडलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्द का यहां जैन विश्व भारती में संस्था एवं विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों ने भव्य स्वागत किया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उन्हें शॉल अर्पित किया। राजकुमार चौरड़िया ने उन्हें साहित्य भेंट किया। इस अवसर पर स्वामी महेश्वरानन्द ने कहा कि भारत ऋषि-मुनियों की धरा है, भारतीय महापुरूषों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रहा है। हमारा मिशन यह रहना चाहिये कि पूरी पृथ्वी को भारत के अनुरूप बना दिया जावे। उन्होंने यहां भिक्षु विहार में मुनिश्री देवेन्द्र कुमार व मुनिश्री जयकुमार से भेंट की और उनसे आध्यात्मिक चर्चा भी की। इस दौरान वहां उपस्थित नागरिकों से उन्होंने अहिंसा को हर क्षेत्र में आवश्यक बताते हुये भोजन में सात्विकता बरतने की सलाह दी और कहा कि शाकाहार करने से विभिन्न जानवरों की रक्षा भी होती है। हमारे यहां तो अहिंसा परमोधर्मः का घोष किया जाता है और हमें तो बोलने से भी हिंसा नहीं हो यह ध्यान रखना चाहिये। उन्होंने इस अवसर पर उपस्थित नागरिकों से यौगिक क्रिया एवं मंत्र प्रयोग का अभ्यास भी करवाया। मुनिश्री देवेन्द्र कुमार ने इस अवसर पर कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ ने आचार्य तुलसी के समय से ही अहिंसा, अणुव्रत आदि के संदेश को जन-जन तक पहुंचाया। आचार्य महाश्रमण नैतिकता, सद्भावना आदि तीन सूत्रों पर आधारित अहिंसा यात्रा कर रहे हैं और प्राणी मात्र में मैत्री भावना से विश्व के कल्याण का संदेश दे रहे हैं। मैत्री भाव व गुणीजनों के प्रति प्रमोद भावना से समाज व राष्ट्र का विकास होता है।

जो संत होता है, वह सरल होता है

तपस्वी मुनिश्री जयकुमार ने अपने सम्बोधन में कहा कि संत वही होता है, जिसके भीतर सरलता होती है। व्यक्ति जितना ऊपर उठता है, वह उतना ही विनम्र व सरल बनता है। उन्होंने स्वामी महेश्वरानन्द का सम्मान करते हुये कहा कि संत का अभिनन्दन ज्ञान से और चेतना के सम्प्रेषण से होता है। उसके लिये शब्दों की आवश्यकता नहीं रहती। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने महामंडलेश्वर संत महेश्वरानन्द के बारे में जानकारी दी और उनके विदेशों में स्थित आश्रमों और जाडन स्थित आश्रम के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि उनके आश्रम में साधु-संत भी श्रम आधारित जीवन जीते हैं और अपनी व्यवस्थायें वे स्वयं ही करते हैं। इस अवसर पर जैन विश्व भारती की ओर से डा. विजयश्री शर्मा, तेरापंथी सभा के मंत्री राजेन्द्र खटेड़, तेरापंथ महिला मंडल की पुखराज सेठिया व युवक परिषद के राजकुमार चौरड़िया ने भी स्वामी महेश्वरानन्द का स्वागत करते हुये आध्यात्मिक संतों के इस मिलन व विचार-विमर्श को अद्वितीय बताया। इस अवसर पर भाजपा शहर अध्यक्ष नीतेश माथुर, कैलाश घोड़ेला, सुशील पीपलवा, दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर, डा. सत्यनारायण भारद्वाज, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री, समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान, डा. रविन्द्र सिंह राठौड़, डा. सुनिता इंदौरिया, प्रगति चौरड़िया, डा. पुष्पा मिश्रा, डा. जेपी सिंह, डा. गिरीराज भोजक, विनोद कस्वां, डा. भाबाग्रही प्रधान आदि उपस्थित थे।

राष्ट्रीय स्तरीय ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में 274 ने भाग लिया

संस्थान में ऑनलाइन राष्ट्रीय स्तरीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन 19 सितम्बर को किया गया। यह प्रतियोगिता राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में स्नात्तक एवं स्नात्तकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों के लिए आयोजित की गयी। प्रतियोगिता में देश के विभिन्न प्रांतों से 274 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इनमें से 189 विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता में 60 प्रतिशत से अधिक स्कोर प्राप्त किये। विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक प्रभारी डॉ. अमिता जैन ने बताया कि कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में आयोजित इस प्रतियोगिता में भाग लेकर विद्यार्थियों ने अपने ज्ञान का सदुपयोग किया। प्रतियोगिता में 60 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले सभी प्रतिभागियों को ई-सर्टिफिकेट प्रदान किये गये।

प्राचीन ज्ञान व अर्वाचीन विज्ञान के सेतु थे महाप्रज्ञ- प्रो. दूगड़

आचार्य महाप्रज्ञ समाधिस्थल पर गोष्ठी व ध्यान

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत संस्थान के समस्त शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक कार्मिकों ने कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के नेतृत्व एवं निर्देशन में सरदार शहर स्थित आचार्य महाप्रज्ञ के समाधस्थिल ''शांतिपीठ'' में 1 जनवरी को एक गोष्ठी का आयोजन करके विचारों का सम्प्रेषण किया एवं उनकी समाधि पर दर्शन व ध्यान के द्वारा शांति की प्रार्थना की। समाधिस्थल पर ध्यान व दर्शनों के दौरान कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने नववर्ष की सबको बधाई देते हुये कहा कि इस अध्यात्म शांति पीठ के दर्शन नये साल में सबके लिये प्रेरणादायी सिद्ध हों। उन्होंने ज्ञान की महता बताई और कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ बिना किसी भेदभाव के आत्मिक ज्ञान का सम्प्रेषण करते थे और समदृष्टि पूर्वक ज्ञान ग्रहण करते थे। वे भारत के प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के सेतु थे।

आज भी प्रेरित करता है महाप्रज्ञ का साहित्य

यहां आयोजित गोष्ठी में अध्यक्षता करते हुये दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने महाप्रज्ञ के जन्म शताब्दी वर्ष के

अवसर पर विश्वविद्यालय के तत्वावधान में किये जाने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी और बताया कि वे ऐसे मनीषी थे, जिनकी रचनाओं एवं प्रवचनों में विश्व के लगभग सभी विषयों पर सार्थक विवेचन मिलता है। उनके लिखे शब्द आज भी लोगों को प्रेरित करते हैं। इस अवसर पर सोमवीर सांगवान, डा. पुष्पा मिश्रा, प्रगति चौरड़िया, पंकज भटनागर व डा. वीरेन्द्र भाटी मंगल ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में प्रेरणादायक गीत व भजनों की प्रस्तुतियां भी दी गई।

राजस्थान के गांव-ढाणी तक युवाओं को किया जायेगा अहिंसा व योग में प्रशिक्षित

नेहरू युवा केन्द्र व जैविभा विश्वविद्यालय में हुई वार्ता

अब समूचे राज्य में प्रत्येक गांव-ढाणी तक अहिंसा व योग का प्रशिक्षण युवाओं को प्रदान किया जायेगा। इस सम्बंध में संस्थान एवं नेहरू युवा केन्द्र संयुक्त रूप से एक योजना तैयार कर रहे हैं। नेहरू युवा केंद्र संगठन राजस्थान के राज्य निदेशक भुवनेश जैन ने यहां जैन विश्व भारती संस्थान में सामाजिक कार्यो के प्रसार के सम्बंध में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ से की गई मुलाकात के बाद यह तय किया गया। इस अवसर पर आयोजित बैठक में नेहरू युवा केन्द्र के राज्य निदेशक को विश्वविद्यालय में संचालित सामाजिक उत्थान के कार्यों जैसे अहिंसा प्रशिक्षण व योग प्रशिक्षण तथा समाज कार्य आदि कार्यों के प्रसार के सम्बंध में चर्चा की गई।

नेहरू युवा केंद्र के राज्य निदेशक ने कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण आज के युवाओं के संपूर्ण विकास के लिए आवश्यक है और विश्वविद्यालय के पास उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से तथा नेहरू युवा केंद्र के सहयोग से इस प्रकार के कार्यों को दायरा बढ़ाया जा सकता है और इन्हें राजस्थान के प्रत्येक गांव-ढाणी तक पहुंचाया जा सकता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने राज्य निदेशक के प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए जल्द ही इसके लिये ड्राफ्ट तैयार कर नेहरू युवा केंद्र को भेजने का आश्वासन दिया। ड्राफ्ट में आवश्यक सुधार के बाद इसकी कार्यप्रणाली तैयार करके नेहरू युवा केन्द्र द्वारा जल्द ही इस मसौदे को अंजाम दिया जाएगा और प्रत्येक जिले से युवक-युवतियों को प्रशिक्षित किया जाएगा, जिससे वह प्रत्येक पंचायत व ग्रामीण स्तर तक सभी युवाओं को इस प्रकार के सामाजिक कार्यों से जोड़ सके।

इस बैठक में नेहरू युवा केंद्र संगठन के राजस्थान राज्य निदेशक डॉ. भुवनेश जैन एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बच्छराज दूगड़ के अलावा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल धर, योग व जीवन विज्ञान विभाग के ड०. प्रद्युम्न सिंह शेखावत तथा नेहरू युवा केन्द्र के लाडनूं ब्लॉक के राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक हरेंद्र झुरिया उपस्थित थे। इस दौरान जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय में योग प्रशिक्षण ले रहे स्पेन निवासी एड्रियान ने राज्य निदेशक से मुलाकात की और उनका आभार प्रकट किया।

राष्ट्रीय बालिका दिवस पर हुई प्रतियोगिताएं

जैविभा में राष्ट्रीय बालिका दिवस पर छात्राओं में सृजनात्मकता के विकास के लिये 24 जनवरी को पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता हुई। पंच महाव्रत पर आधारित इस पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता में 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर चांदनी सैनी रही। द्वितीय महिमा प्रजापत और तृतीय स्थान पर मोनालिका रही। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. विष्णु कुमार व प्रगति चौरड़िया शामिल थे।

आयोजना, समयबद्धता और व्यवस्था से संभव होते हैं श्रेष्ठ प्रशासनिक कार्य

दो दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान में दो दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन 21 व 22 जुलाई को कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ की प्रेरणा से किया गया। कार्यक्रम में मुख्य विशेषज्ञ भगत फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय हरियाणा के विनोद कुमार कक्कड़ ने कहा कि हमेशा सुनियोजित, समय-प्रतिबद्ध तथा व्यवस्थित ढंग से प्रशासनिक कार्य किये जाने चाहिए। हमें अपनी योजना कम से कम 10 या 15 वर्ष की बनानी चाहिए। जो संस्थान अपनी योजना अगले वर्ष तक की ही बनाते हैं वे इस प्रकार की आपात स्थिति में आगे गति नहीं कर सकते हैं। प्रत्येक विभाग से अपनी योजना ली जानी चाहिए और उस विभाग के अनुसार बजट और गतिविधि निर्धारित करनी चाहिए। उन्होंने कार्यक्रम में अनेक प्रशासनिक और प्रबंधन संबंधी आयामों से अवगत कराया। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष एवं कार्यक्रम के संयोजक प्रो. बीएल जैन ने कहा कि ऑनलाइन शैक्षणिक कार्यक्रम तो इस समय बहुत सारे हो रहे हैं, लेकिन विश्वविद्यालय के गैर शैक्षणिक सदस्यों के लिए कोई कार्यक्रम नहीं हुए थे, इसी उद्देश्य से संस्थान द्वारा गैर शैक्षणिक सदस्यों का कौशल विकास किस प्रकार से किया जाए, इसके लिए यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है। उन्होंने प्रारम्भ में कार्यक्रम का परिचय और उसके उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

निर्बल को सबल व समानता का अवसर देने के लिये है आरक्षण की नीति

कार्यक्रम के द्वितीय दिवस विशेषज्ञ के रूप में राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय किशनगढ़, अजमेर के कुलसचिव डॉ. हरिसिंह परिहार ने आरक्षण नीति के विषय में विस्तार से जानकारी देते हुये निर्बल को सबल बनाने, समानता के अवसर प्रदान करने, उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रवेश की नीतियां, सरकारी नौकरियों में नियुक्तियां, दिव्यांग जनों के लिये भारत सरकार द्वारा सरकारी नौकरियों में की गई आरक्षण नीति तथा रोस्टर तथा रजिस्टर के मेंटेन करना आदि के प्रावधान के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आर्टिकल 341, 342, 342।, 16, 335 आदि के अंतर्गत जो प्रावधान दिए गए हैं, उनका हमें पालन करना चाहिए। कार्यक्रम में डॉ. जुगल किशोर दाधीच, डॉ. अनीता जैन, डा. बाबूलाल मीणा, डॉ. प्रभाकर गोस्वामी, डॉ. नवनीत शर्मा, डॉ. गायत्री मीणा, डॉ. विनोद कुमार, डॉ सुशील कुमार, राजेंद्र सिंह, डॉ. सुमन चौधरी, डॉ. हेमलता शर्मा, मनोज कुमार इंदौरिया, डॉ. रेखा वर्मा, डॉ. गीता चौधरी, डॉ. जगदीश कड़वासरा, डॉ. सावित्री माथुर, पंकज भटनागर, कुलसचिव रमेश कुमार मेहता आदि विविध शिक्षाविद्, विद्वान और प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे। प्रारम्भ में कार्यक्रम का परिचय तथा विशेषज्ञों का स्वागत और अंत में धन्यवाद संयोजक प्रो. बीएल जैन ने किया। संचालन तथा तकनीकी कार्यक्रम मोहन सियोल के द्वारा किया गया।

पूर्ण मनोयोग से कार्य करने पर खुलता है सफलता का मार्ग- प्रो. दूगड़

प्रो. ए.पी. त्रिपाठी का सेवानिवृति समारोह आयोजित

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है, सफलता के लिये कभी आधे-अधूरेपन से कार्य नहीं करना चाहिये, बल्कि पूर्ण मनोयोग से कार्य करने पर ही सफलता का मार्ग खुलता है। सफलता के लिये गुरूमंत्र है कि एक ही दिशा में पुरूषार्थ किया जावे। उन्होंने यहां महाप्रज्ञ सभागार में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी के सेवानिवृति पर आयोजित समारोह में बोलते हुये कहा कि प्रो. त्रिपाठी अपने कार्य को सदैव इसी तरह से सम्पन्न करते रहे हैं। उनका लक्ष्य के प्रति समर्पण के कारण ही वे एक अच्छे अध्यापक ही नहीं बल्कि श्रेष्ठ प्रशासक के रूप में भी अपने आपको ढाल पाये। वे दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक के साथ आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के सफल प्राचार्य रहे और परीक्षा विभाग के प्रभारी रह कर भी कार्य के प्रति अपने समर्पण को प्रदर्शित किया। इस अवसर पर उन्हें विश्वविद्यालय की ओर से शॉल व स्मृति चिह्न प्रदान किया गया तथा स्टाफ की ओर से भी उपहार प्रदान किया गया। प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने अपने सम्बोधन में अपने समस्त विभागों के कार्मिकों को याद किया तथा कुलपति, कुलसचिव, विताधिकारी आदि सहित विश्वविद्यालय के अन्य विभागों द्वारा मिलने वाले सहयोग के लिये उन्हें याद करते हुये उनके एक-एक कर्मचारी को स्मरण करते हुये सबके प्रति आभार ज्ञापित किया।

इस अवसर पर प्राकृत व संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवाड़ी, समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान, योग एवं जीवन विभाग विभाग के डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, अहिंसा व शांति विभाग के डा. रविन्द्र सिंह राठौड़, परीक्षा विभाग के डा. युवराज सिंह खांगारोत, विताधिकारी राकेश कुमार जैन, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय से डा. प्रगति भटनागर व कमल मोदी, प्राकृत विद्वान राकेश मणि त्रिपाठी, केन्द्रीय ग्रंथागार से महिमा जैन आदि ने अपनी भावनायें व्यक्त की और प्रो. त्रिपाठी की विशेषताओं व कार्यों के बारे में बताया। कार्यक्रम में जयंती त्रिपाठी का भी शॉल ओढा कर सम्मान किया गया। अंत में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने आभार ज्ञापित किया और प्रो. त्रिपाठी के सेवाकाल को बेहतरीन बताया। इससे पूर्व प्रो. त्रिपाठी का आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, परीक्षा विभाग आदि अनेक विभागों में भी सम्मान किया गया।

जैन विश्व भारती के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का अभिनन्दन

मरूस्थल के ग्राम्य अंचल में शिक्षा का व्यापक प्रसार करने में विश्वविद्यालय अग्रणी- प्रो. दूगड़

संस्थान के आचार्य महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में एक समारोह का आयोजन करके जैन विश्व भारती के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का अभिनन्दन किया गया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो बच्छराज दूगड ने कहा कि संस्थान की प्रगति में हमेशा मातृ संस्था का योगदान रहा है, जिसके कारण शिक्षा जगत में संस्थान ने महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की है। उन्होंने जैविभा विश्वविद्यालय के अन्तर्गत मेडिकल कॉलेज आफ योग एंड नेचुरोपैथी के कार्य के बारे में जानकारी दी और संस्थान की प्रगति के बारे में भी बताया तथा कहा कि मरूस्थल के ग्रामीण अंचल में इस विश्वविद्यालय ने शिक्षा का व्यापक प्रसार किया है। इस विश्वविद्यालय का विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ एमओयू होना, विदेशी विद्यार्थियों का यहां अध्ययन के लिये आना, सबसे समृद्ध केन्द्रीय पुस्तकालय होना और विशाल हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह होना विश्वविद्यालय की अपने आप में प्रमुख विशेषतायें हैं। उन्होंने नव-निर्वाचित अध्यक्ष के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में जैन विश्व भारती और अधिक गतिशील होगी। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि संस्थान के अनुशास्ता के आगमन से पूर्व जैन विश्व भारती में विशिष्ट कार्य संपादित होंगे। समारोह में जैन विश्व भारती के नवनिर्वाचित अध्यक्ष मनोज लूणियां ने कहा कि यह विश्वविद्यालय शिक्षा एवं समाज को समर्पित विशिष्ट संस्थान है। संस्थान के माध्यम से नये सोपान छुए जा रहे है, यह सबके लिए प्रसन्नता की बात है। उन्होंने संस्थान की गतिविधियों की प्रंशसा की। इससे पूर्व शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो बीएल जैन, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत आदि ने अपने विचार रखे। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में जैन विश्वभारती के ट्रस्टी जोधराज बैद, अध्यक्ष मनोज लूणिया व सहमंत्री जीवणमल मालू का संस्थान की ओर से कुलपति प्रो बच्छराज दूगड़, डॉ. बिजेन्द्र प्रधान, कुलसचिव रमेशचन्द्र मेहता ने प्रतीक चिन्ह प्रदान करके सम्मान किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. युवराज सिंह खंगारोत व आभार ज्ञापन कुलसचिव रमेशचन्द्र मेहता ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष में सम्बोधि व्याख्यानमाला

बिहार के केन्द्रीय विश्वविद्यालय में अहिंसा पर व्याख्यान

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत जैविभा संस्थान एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में आयोजित सम्बोधि व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 13 जनवरी को महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी बिहार के गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के अन्तर्गत अतिथि व्याख्यान के रूप में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में जैविभा विश्वविद्यालय के प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने सम्बोधि के विशेष प्रसंग में वैश्विक परिदृश्य में अहिंसा की प्रासंगिकता विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने व्याख्यान में वर्तमान की विश्वव्यापी हिंसक स्थितियों का उल्लेख करते हुये कहा कि विश्व में विभिन्न प्रकार की प्रकट व प्रच्छन्न हिंसाओं के दौर में उबरने के मार्ग के रूप में अहिंसा महत्वपूर्ण है। अहिंसा को अपनाये बिना इनसे मुक्ति पाना संभव नहीं है। उन्होंने सम्बोधि, गीता और गांधी के अहिंसात्मक विचारों का तुलनात्मक बोध विकसित करते हुये बताया कि तीनों द्वारा मानवता के समक्ष अहिंसा का मार्ग रखा गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के सह आचार्य डॉ. असलम खान ने की। इस अवसर पर समाज विज्ञान संकाय के सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, डॉ. सरिता तिवारी, डॉ. विजय शर्मा, डॉ. सुजीत चौधरी, डॉ. कैलाश प्रधान, डॉ. नरेन्द्र आर्य, डॉ. अम्बिकेश कुमार त्रिपाठी, डॉ. अभय विक्रम सिंह, डॉ. नरेन्द्र सिंह, डॉ. अनुपम वर्मा एंव विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन समन्वयक डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने किया।

विश्वविद्यालय परिसर में मचाई होली गीतों की धूम

संस्थान में होली के अवसर पर 7 मार्च को भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें समस्त कार्मिकों एवं प्रशासनिक व शैक्षणिक अधिकारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने सबको होली पर्व की बधाई व शुभकामनायें देते हुये कहा, हमेशा शालीनता व पवित्रता के साथ होली खेला जाना चाहिये। मौसम में परिवर्तन के साथ होली का त्यौंहार हमें रोगों और कीटाणुओं से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है। होली के अवसर पर हम मन के गुब्बार निकाल कर मस्ती लेते हैं, लेकिन सबमें सदैव मर्यादा कायम रहनी चाहिये। अनुशासन के साथ प्रेम का पर्व है, जिसमें परस्पर स्नेह के भाव उमड़ते हैं। कार्यक्रम में सबने चंग बजाते हुये होली एवं देशभक्ति के गीत गाये और खूब नृत्य करके मस्ती ली। इस अवसर पर परस्पर गुलाल लगाकर एक दूसरे के बीच का भेदभाव मिटाया और परस्पर बधाइयां दी। कार्यक्रम के अंत में अल्पाहार का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, प्रो. बीएल जैन, जीवनमल मालू, कनक दूगड़, प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डा. अमिता जैन, डा. बिजेन्द्र प्रधान, डा. गिरीराज भोजक, डा. युवराज सिंह खांगारोत, डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डा. रविन्द्र सिंह राठौड़, मोहन सियोल, डा. पुष्पा मिश्रा, डा. प्रगति भटनागर, डा. सुनिता इंदौरिया, डा. विनोद सियाग, डा. विकास शर्मा, डा. बलबीर सिंह चारण, डा. अशोक भास्कर, सोमवीर सांगवान, प्रगति चौरडिया, महिमा जैन, विजय कुमार शर्मा, दीपाराम खोजा, पंकज भटनागर, अभिषेक चारण, रमेश दान चारण, दीपक माथुर, जगदीश यायावर, अजयपाल सिंह भाटी, डा. वीरेन्द्र भाटी आदि उपस्थित थे।

परस्पर मैत्री व सौहार्द्र भाव रखने से खुलता है विकास मार्ग- प्रो. दूगड़

मैत्री दिवस मनाया

संस्थान में संवत्सरी पर्व पर 24 अगस्त को मैत्री दिवस पर आयोजित समारोह की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि परस्पर मैत्री भाव बनाये रखने और एक दूसरे की आलोचना नहीं करने से विकास के मार्ग खुल जाते हैं। उन्होंने कहा कि विकास के लिये आवश्यक है कि सतत् जागरूकता रखी जावे कि हम अपना और अपने संस्थान का विकास करेंगे। स्वयं का विकास करने पर संस्थान का विकास अपने आप होगा। प्रो. दूगड़ ने एक साल की गतिविधियों आदि से किसी को दुःख पहुचां हो तो उसके लिये सभी से क्षमा मांगते हुये कहा कि जैन धर्म का खम्मत-खामणा शब्द महत्वपूर्ण है, जिसमें क्षमा मांगने और क्षमा करने दोनों के भाव समाहित है।

विश्व के समस्त प्राणियों के प्रति मैत्री भाव

दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इस अवसर पर कहा कि पर्युषण पर्वराज कहा जाता है, क्योंकि इसमें आत्मशुद्धि संभव होती है। पर्युषण पर्व के अंतिम दिन मैत्री दिवस या क्षमा दिवस मनाया जाता है। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने क्षमावाणी दिवस को अंदर के प्रदूषण को बाहर निकालने का पर्व बताया। विताधिकारी राकेश जैन ने क्षमा याचना को आत्मा की शुद्धता का मार्ग बताया। अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवाड़ी, समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, परीक्षा विभाग के डा. युवराज सिंह खंगारोत, अहिंसा एवं शांति विभाग के डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ आदि ने भी इस अवसर पर अपनी साल भर की भूलों के लिये क्षमायाचना की। अंत में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने तहेदिल से क्षमा याचना करते हुये आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर डा. गिरीराज भोजक, डा. अमिता जैन, डा. आभासिंह, डा. विनोद कस्वां, मोहन सियोल, दीपाराम खोजा, विजयकुमार शर्मा, जगदीश यायावर, दीपक माथुर आदि शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक स्टाफ सभी उपस्थित रहे।

संस्थान के कार्मिकों ने कोरोना संकट में 1.15 लाख की सहायता दी

कोविड-19 व लोकडाउन से निपटने के लिए संस्थान ने की विशेष व्यवस्था

संस्थान के कार्मिकों की तरफ से 2 अप्रेल को प्रधानमंत्री राहत कोष में अपना-अपना एक दिन का वेतन प्रदान किया गयां कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया कि राष्ट्रीय आपदा के समय समस्त नागरिकों के लिये सहयोग का दायित्व बनता है और इसके लिये संस्थान के समस्त कार्मिक सदैव तैयार हैं। देश पर छाये कोरोना (कोविड-19) वायरस के संकट और लॉकडाउन को ध्यान में रखते हुए संस्थान के सभी सदस्यों ने अपने एक दिन का वेतन प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष के लिये प्रदान किया। इस एकत्र की गई राशि 1 लाख 15 हजार 140 रुपये का चैक प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष में जमा करवाया गया। कोरोना काल में संस्थान के शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक कर्मचारियों को सवेतनिक अवकाश दिया गया। सभी कार्मिकों को 'आर्सेनिक एल्बम' होमियोपैथक दवा पिलाई गई, ताकि प्रतिरोधक क्षमता बनी रहे। संस्थान को सेनिटाईज रखने की विशेष व्यवस्था की गई।

काउंटर कोविड-19 सेल का गठन

संस्थान द्वारा कोरोना महामारी एवं लॉकडाउन के दौरान उत्पन्न हो रही विभिन्न मानसिक समस्याओं के निदान के लिए विद्यार्थियों, शिक्षकों व शिक्षणेतर कर्मचारियों को परामर्श प्रदान करने के लिये विश्वविद्यालय में एक काउंटर कोविड-19 सेल का गठन किया गया। यह एक छः सदस्यीय समन्वयन एवं परामर्शदात्री समिति का गठन किया गया।

विद्यार्थियों के लिये घर बैठे परीक्षा देने की सुविधा

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार एवं व्यापक छात्र-हितों को ध्यान में रखते हुये विश्वव्यापी कोरोना महामारी और देश भर में लॉकडाउन के कारण विद्यार्थियों के लिये विभिन्न ऑनलाईन एप्प के माध्यम से उन्हें घर बैठे पढाई करवाई गई। संस्थान के सभी कार्मिकों की प्रतिदिन नियमित स्वास्थ्य जांच एवं पूर्ण सेनिटाईज करने की समस्त व्यवस्थायें की गई। विश्वविद्यालय द्वारा छात्रहितों में आवश्यक प्रशासनिक कार्यों को करते समय कार्मिकों में सामाजिक दूरी, सेनेटाइजेशन, मास्क, थर्मल-स्केनिंग, आरोग्य-सेतु एप एवं अन्य आवश्यक सुरक्षा मार्गदर्शकों की भी परिपालना सुनिश्चित की गई है। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया कि विद्यार्थियों की परीक्षाओं के लिए तत्संबंधी गठित समिति की बैठक की गई। समिति के सदस्यों ने जानकारी दी कि परीक्षाओं के आयोजन में विद्यार्थियों के हितों को व्यापक रूप से ध्यान में रखा गया है तथा इस बात की अनुशंसा भी की गई है कि विद्यार्थी घर बैठे आवश्यक परीक्षाएं दे सकें।

सभी शिक्षकों को आईसीटी का उपयोग करने की सलाह

संस्थान में ऑनलाईन पाठ्यक्रमों से अध्यापन

संस्थान में लम्बे लॉकडाउन को ध्यान में रखते हुये एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशानुसार ऑनलाईन अध्ययन की व्यवस्था शुरू की गई। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया कि इस ऑनलाईन पढाई में विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग, समाज कार्य विभाग एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में विभिन्न मोबाईल-एप्प के माध्यम से ऑनलाईन क्लासेज प्रारम्भ की गई, जिनके माध्यम से विद्यार्थी घर बैठे अपना अध्ययन कर सके। कुलपति प्रो. दूगड़ ने बताया कि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों को निर्देशित किया गया कि वे बिना रूकावट के शिक्षण-प्रशिक्षण कार्य आईसीटी के उपयोग से घर से ही प्रभावी रूप से संचालित करें। यूजीसी द्वारा उपलब्ध करवाये गये एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा विकसित किये गये डिजीटल लिंक का भरपूर उपयोग करके अपनी शैक्षणिक क्षमताओं का विकास करें।

कौशल विकास कार्यक्रम

व्यक्ति को अतिरिक्त कुशलता प्रदान करते हैं अल्पकालिक कोर्स-मेहता

कौशल विकास के तहत टैली व इंग्लिश स्पोकन के अल्पकालीन व्यावसायिक कोर्स करवाए

संस्थान द्वारा कौशल विकास के अन्तर्गत अल्पकालीन व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में कम्प्यूटर पर टैली ऑन एकाउंटिंग के कोर्स एवं इंग्लिश स्पोकन कोर्स का शुभारम्भ 27 जनवरी को किया गया। पाठ्यक्रमों के शुभारम्भ पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवाड़ी ने कम्प्यूटर युग में अंग्रेजी की आवश्यकता बताते हुए भूमंडलीकरण के समय में अंग्रेजी का बोलना और प्रभावी वार्तालाप जरूरी बताया। साथ ही बहीखातों को कम्प्यूटर पर रखने और ओनलाईन हिसाब-किताब रखने के लिये टैली सीखने की जरूरत बताई। शैक्षणिक अधिकारी विजय कुमार शर्मा ने बताया कि यह विश्वविद्यालय कैरियर निर्माण की दिशा में बहुत कार्य कर रहा है। कौशल विकास कार्यक्रम भी उसी दिशा में कदम है। उन्होंने टैली व अंग्रेजी स्पोकन कोर्स के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर प्रो. रेखा तिवाड़ी व विजयकुमार शर्मा के अलावा अभिषेक शर्मा, रणजीत मंडल आदि उपस्थित थे।

सभी प्रशिक्षणार्थियों को दिये प्रमाण-पत्र

संस्थान में कौशल विकास कार्यक्रम के तहत चलाये जा रहे अल्पकालीन कोर्सेज में कम्प्यूटर एकाउंटिंग टैली एवं इंग्लिश स्पोकन पाठ्यक्रमों के समापन पर 27 फरवरी को सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्रों का वितरण किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने बताया कि विभिन्न व्यावसायिक शिक्षा के रूप में अल्प समय के कोर्स संचालित करके व्यक्ति को अतिरिक्त कुशलता दिलाने का प्रयास संस्थान द्वारा सफलता के साथ किया जा रहा है। आधुनिक युग में अंग्रेजी भाषा ने अपना वर्चस्व कायम कर रखा है, इसलिये इंग्लिश का बोलना और समझाना आवश्यक बन चुका है। इसी प्रकार खाता-वही का स्थान कम्प्यूटर ने ले लिया है। टैली सीखने के बाद व्यक्ति एकाउटिंग में पारंगत हो जाता है। विताधिकारी आरके जैन ने कहा कि टैली और इंग्लिश स्पोकन आज के समय में मल्टीनेशनल कम्पनियों में और अन्य सभी जगह कॅरियर के लिये आवश्यक हो चुका है। अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवाड़ी ने भी अंग्रेजी की व्यापकता और महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में सोमवीर सांगवान, अभिषेक शर्मा एवं प्रशिक्षणार्थियों ने भी विचार रखे व अनुभव प्रस्तुत किये। अंत में संस्थान के शैक्षणिक अधिकारी विजय कुमार शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुये विश्वविद्यालय द्वारा संचालित अल्पकालिक पाठ्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर मनीष कुमार सैनी, दुर्गाराम खीचड़, विनोदकुमार पारीक, सुनीता कोटेचा, विष्णु ठठेरा, ललित वर्मा, ममता पारीक, कुसुम प्रजापत, साक्षी चौहान आदि उपस्थित थे।

कोरल ड्रा व फोटोशोप के निःशुल्क अल्कालिक पाठ्यक्रम आयोजित

संस्थान में काम करने वाले कर्मचारियों के लिये भी कौशल विकास आवश्यक कर दिया जाने से इच्छुक कार्मिकों के लिये 11 फरवरी से 10 दिवसीय निःशुल्क कोर्स का प्रारम्भ किया गया, जिसमें फोटोशॉप एवं कोरल-ड्रा सॉफ्टवेयर की कार्यप्रणाली व्यावहारिक तौर पर सिखाई गई। इस अल्पकालिक पाठ्यक्रम में संस्थान के गैर शैक्षणिक कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में रूचि दर्शाई। कोर्स के शुभारम्भ के अवसर पर संस्थान के शैक्षणिक अधिकारी विजय कुमार शर्मा ने कहा कि संस्थान टैली एकाउंटिंग सिस्टम, इंग्लिश स्पोकन कोर्स आदि विभिन्न अल्पकालीन पाठ्यक्रमों के माध्यम से कौशल विकास का कार्य सफलता पूर्वक कर रहा है। संस्थान के कार्मिकों के लिये कोरल ड्रा एवं फोटोशोप निश्चित रूप से उपयोगी सिद्ध होंगे। शरद जैन सुधांशु ने कहा कि सीखा हुआ हुनर जीवन में सदैव काम आता है।

शोधार्थी राखी प्रजापत की दो पुस्तकों का विमोचन

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग की शोधार्थी राखी प्रजापत की दो पुस्तकों 'समकालीन मुद्दे एवं मानवाधिकार' तथा 'ह्यूमन राइट्स : इश्यूज, चैलेंजेज एंड प्रजेंट स्टेटस' का विमोचन 9 अक्टूबर को कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने किया। लेखिका राखी प्रजापत अहिंसा एवं शांति विभाग में रिसर्च स्कॉलर है। उसने अपने शोध अध्ययन के तहत इन पुस्तकों की रचना की है। कुलपति प्रो. दूगड़ ने इस अवसर पर शुभकामनायें देते हुये कहा कि राखी प्रजापत द्वारा सम्पादित पुस्तकों में मानवाधिकारों का विशिष्ट विश्लेषण है। इससे पूर्व सहायक आचार्य डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने पुस्तकों की विषय-वस्तु के बारे में संक्षिप्त में बताया और राखी के बारे में जानकारी प्रदान की।

सोच का परिणाम हमारे स्वास्थ्य पर होता है- प्रो. सिंघल

मानसिक स्वास्थ्य और कोविड-19 महामारी पर वेबिनार का आयोजन

संस्थान एवं श्रीअग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, केशव विद्यापीठ, जामडोली के संयुक्त तत्वाधान में ''मानसिक स्वास्थ्य और कोविड-19 महामारी'' विषय पर 29 मई को एक दिवसीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार की अध्यक्षता राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. जे.पी. सिंघल ने की। जैन विश्वभारती संस्थान कुलपति प्रो. बी.आर. दुग्गड तथा केशव विद्यापीठ समिति के अध्यक्ष की प्रेरणा से संयुक्त रूप से आयोजित इस वेबिनार में प्रो. सिंघल ने वेबिनार के विषय को समसामयिक व औचित्य पूर्ण बताते हुए अपने वक्तव्य में कहा- हम जैसे सोचते हैं तथा विचार करते है, वैसा ही यवहार करने लगते है। हम नकारात्मक सोचेंगे तो नकारात्मक व्यवहार होगा। कोविड-19 महामारी का प्रभाव सामाजिक, शैक्षिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक सभी पक्षों पर पड़ा है। हमें समग्र रूप में आकलन करना चाहिए कि इस बीमारी से संक्रमितों की संख्या के साथ स्वास्थ्य प्राप्त करने वालों, शेष रिपोर्ट की संख्या, मृत्युग्रस्त लोगों का आयु वर्ग और उनकी पूर्व बीमारी आदि सभी पक्षों का आकलन करना चाहिये। मानसिक स्वास्थ्य पर शारीरिक स्वास्थ्य का प्रभाव पड़ता है और मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव शारीरिक स्वास्थ्य पर होता है। उन्होंने बताया कि शुद्ध अन्तःकरण, नवीन कार्य, सृजनात्मकता, आध्यात्मिक क्रियाएं, योग, प्राणायाम, संस्कृति के अनुकूल कार्य, प्रकृति का संरक्षण, प्रकृति का सम्मान, घर के कार्य आदि क्रियाएँ करने से स्वस्थ व प्रसन्न रह सकते हैं।

योग व आयुर्वेद से कोरोना से मुक्ति संभव

कार्यक्रम के प्रमुख वक्ता भारतीय वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. पाण्डेय ने कोरोना के आकार, संरचना, क्रियाएँ तथा प्रभाव के विषय में अवगत कराते हुए कहा कि बिना मेडीसीन लिये भी कोरोना संक्रमित लोग ठीक हो रहे है, क्योंकि वे भारतीय आयुर्वेद के काढा, तुलसी, मुलैठी, हल्दी आदि का सेवन करके अपने इम्यूनिटी पावर को बढ़ा रहे है तथा आत्मबल, अभय, चिंतारहित होकर आइसोलेशन में रह रहे हैं, जिससे शीघ्र स्वस्थ हो रहे हैं। उन्होंने भारतीय योग, विभिन्न मुद्राओं तथा प्राकृतिक जड़ी-बूटियों का महत्त्व बताते हुए उनकी उपयोगिता को सिद्ध किया और कहा कि अपनी भारतीय पद्धति की प्रत्येक परम्परा, रिवाज व मान्यता वैज्ञानिकता लिये हुए हैं, हमें उनका पालन करना चाहिए। जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के पूर्व डीन व विभागाध्यक्ष प्रो. ए. के. मलिक ने कहा कि व्यवहार पक्ष ठीक रखें, सकारात्मकता बढ़ाये, अनर्गल विचार कम से कम मन में लावें, स्वाध्याय करें, भयमुक्त रहें, सहजता का जीवन जियें, आत्मनिर्भर बने-परनिर्भर नहीं, बच्चों तथा माता-पिता से मधुर व्यवहार करें, अच्छे कार्य करें, विचारों में सकारात्मकता रखें इनसे हम मानसिक संतुलन रख सकते हैं।

बुरी लत छोड़ें और रसोईघर से बढायें इम्युनिटी

राजस्थान विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय की निर्वमान डीन व विभागाध्यक्ष प्रो. रीटा अरोड़ा ने कहा कि भारतीय रसोई हमारी सबसे बड़ी लैब है, उसे समुचित ढ़ंग से उपयोग करना चाहिए। समाज में प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। वनस्थली विद्यापीठ के विभागाध्यक्ष एवं निवर्तमान डीन प्रो. मधु माथुर ने कहा कि बुरी लत जैसे-बीडी, सिगरेट, मद्यपान, गुटखा का सेवन करना, अधिक समय टी.वी. देखना, दिनभर मोबाईल में व्यस्त रहना, नकारात्मक बातें करना, दूसरे के अवगुण देखकर आलोचना करना आदि से छुटकारा पाने से स्वस्थ जीवन जिया जा सकता है। अनिद्रा, चिन्ता, तनाव आदि रोग इस लॉकडाउन में बढ़े है, जिसका कारण नौकरी चले जाने का भय, परीक्षा नहीं होने का भय, प्लेसमेंट नहीं होना आदि है। हमें घर पर रहकर अपने हुनर को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए जिससे हम आत्मनिर्भर बन सकें। प्रारम्भ में वेबिनार के समन्वयक एवं जैन विश्वभारती संस्थान के शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कार्यक्रम का परिचय व उद्देश्य प्रस्तुत करते हुये बताया कि इस वेबिनार से मानसिक स्वास्थ्य के नवाचार से सुपरिचित करवाने की दिशा में मानसिक स्वास्थ्य की विविध युक्तियों से ओतप्रोत कराने, मानसिक संतुलन, मानसिक शक्ति और मानसिक ऊर्जा का संवर्धन करने, लॉकडाउन की परिस्थिति व कोराना महामारी से सकारात्मकता से सामना करना आदि रहा। ऑनलाईन वेबिनार कार्यक्रम में 746 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में वेबिनार समन्वयक प्रो. रीटा शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में केशव विद्यापीठ समिति के सचिव ओ.पी. गुप्ता, संयुक्त सचिव अमरनाथ चंगोत्रा, महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष डॉ. रामकरण शर्मा, मंत्री सूर्यनारायण सैनी आदि उपस्थित रहे।

संस्थान ने शुरू की ''ऑनलाईन लर्निंग एप'' की निःशुल्क सुविधा

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं एवं प्रवेश-परीक्षाओं की तैयारियां कर सकेंगे विद्यार्थी

संस्थान द्वारा राज्य भर के अपने विद्यार्थियों के लिये विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं एवं प्रवेश-परीक्षाओं की तैयारियों के लिये युनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के सहयोग से एक ''ऑनलाईन लर्निंग एप'' की सुविधा उपलब्ध करवाए जाने की व्यवस्था की गई है।

इस ऑनलाईन सॉफ्टवेयर के माध्यम से बैंक, एसएससी, एलआईसी, रेलवे इत्यादि विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं एवं विभिन्न प्रवेश-परीक्षाओं यथा नीट, आईआईटी, जी, एनटीएसई, सीए, सीएस फाउंडेशन, बीबीए एंट्रेंस, सीएमएटी-एमएटी आदि की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिये निःशुल्क ऑनलाईन सहायक अध्ययन सामग्री वीडियो लेक्चर, पाठ्य-पुस्तकें (सामान्य ज्ञान, समसामयिकी, व्याकरण आदि) तथा पत्र-पत्रिकाएं, नोट्स आदि की सुविधा उपलब्ध करवाए जाने की व्यवस्था की गई है। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया कि यह सम्पूर्ण पाठ्य-सामग्री हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध है। पंजीकृत विद्यार्थी को इस एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर पर उपलब्ध विभिन्न ई-बुक्स पूर्णतः 'निःशुल्क डाउनलोड' करने की सुविधा भी प्रदान की गई है। उन्होंने बताया कि इस एप के माध्यम से विद्यार्थी समय-समय पर अपनी तैयारियों का जायजा लेने हेतु एवं प्रतियोगी परीक्षाओं का वास्तविक अनुभव करने हेतु संबंधित परीक्षाओं के 'मॉक टेस्ट' भी दे सकेंगे, जिससे विद्यार्थियों को स्वयं की तैयारियों का जायजा लेने एवं मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त हो सकेगा।

प्रो. दूगड़ ने बताया कि यह एप डेक्सटॉप एवं मोबाईल दोनों के लिए विकसित की गई है। विद्यार्थी इस एप में उपलब्ध सभी सुविधाओं का निःशुल्क लाभ प्राप्त कर सकेंगे। कुलपति प्रो. दूगड़ ने इस एप के एंड्रोयड फोन एवं डेस्कटोप कम्प्यूटर पर डाउनलोड करने के लिये लिंक जारी किये।

गांधी आज होते तो ऑनलाईन में सबसे ज्यादा व्यस्त होते- कुलपति प्रो. शर्मा

महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी आयोजित

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) तथा महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी बिहार के गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के संयुक्त तत्वाधान में ''कोविड-19 युग में गांधी मार्ग की प्रासंगिकता'' विषय पर राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं शुभारंभ कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने किया। उन्होंने कहा कि गांधी भारत की सांस्कृतिक परम्परा के आधुनिक भारत के सबसे सशक्त संवाहकों में से एक है। उन्होंने कहा कि यदि गांधीजी आज होते तो वे ऑनलाइन में सबसे अधिक व्यस्त होते। गांधीजी भारत के मूल्यों के साथ विश्व के मूल्यों को सम्मिलित करने के बात करते हैं। राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी के मुख्य वक्ता हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रो. कुलदीप चंद्र अग्निहोत्री ने कहा कि गांधी ने कहा था कि भारत के अंदर ही इतनी क्षमता हो, जो अपने संकटों का निदान करें।

डिजिटलीकरण तो गांधी का विचार था

कार्यक्रम में जेएनयू नई दिल्ली के सेंटर फॉर साउथ एशियन स्टडीज के पूर्व अध्यक्ष प्रो. संजय भारद्वाज ने कहा कि गांधी ने विविधता को पहचान दी। उन्होंने विकेंद्रीकरण का सिद्धांत दिया। उन्होंने कहा कि गांधी ने समान काम के लिए समान वेतन की वकालत की थी और सर्वोदय की बात कही थी। गांधी ने सामाजिक न्याय को शांति के साथ जोड़ा। उन्होंने गांधीजी के तीन विचार- अंतर्राष्ट्रीयकरण, संघटन एवं मूल्यों का संस्थागतकरण की बात कही, जिसके द्वारा कोविड-19 की संकट की स्थिति से बाहर आ सकते हैं। उन्होंने कहा कि जो डिजिटलीकरण की बात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कर रहे हैं, वह गांधी जी का ही विचार था। गांधीजी कनेक्टिविटी एवं एक्सेसिबिलिटी के विश्वासी थे।

संपूर्ण व्यवस्था का विकेंद्रीकरण आवश्यक

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता भारत सरकार की महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ समिति के सदस्य एडीएन वाजपेयी ने कहा कि हम गांधी मार्ग पर चलकर विश्व का कल्याण कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि गांधीजी के अध्ययन करने के लिए गांधीवादी पद्धति होनी चाहिए, जो हमारी मीमांसा की पद्धति है। स्वदेशी एवं विदेशी दोनों मुद्दों में गांधी प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि अहिंसा एवं शांति की बात वर्तमान में प्रासंगिक हो गई, जो हमें दूर-दूर तक गांधी जी को छोड़कर दिखाई नहीं देती। हम शांतिपूर्ण ढंग से संवाद कर विश्व को शांत कर सकते हैं। कार्यक्रम के अंत में सह-संयोजक डॉ. असलम खान ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन संयोजक डॉ. जुगल दाधीच ने किया तथा अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत डॉ. सुनील महावर एवं परिचय संयोजक प्रो. अनिल धर ने किया। कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा एवं कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़, संरक्षक प्रो. राजीव कुमार, प्रो. समणी सत्यप्रज्ञा, प्रो. सुनील महावर एवं संयोजक प्रो. अनिल धर व डॉ. जुगल दाधीच, सह-संयोजक डॉ. असलम खान, डॉ. आर एस राठौड़ उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम के आयोजन समिति डॉ. समणी रोहिणी प्रज्ञा, डॉ. अंबिकेश कुमार त्रिपाठी एवं अभय विक्रम सिंह तथा विश्वविद्यालय के अन्य गणमान्य आचार्य एवं शोध छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

रेकी और चक्र पद्धति के ध्यान से संभव है समस्याओं का समाधान- डा. प्रज्ञा

विद्यार्थियों से विचार-विमर्श कर बताये विभिन्न नुस्खे

संस्थान के अंतर्गत विचार-विमर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सकारात्मक सोच, शरीर व मन की ऊर्जाओं, जापानी चिकित्सा पद्धति रेकी की विशेषताओं आदि पर विवेचन किया गया एवं उनका महत्व बताया गया। विशेषज्ञ डॉ. प्रज्ञा श्रीवास्तव ने रेकी और उसके लाभ के विषय में जानकारी प्रश्नोत्तरी के माध्यम से दी। छात्राओं, शिक्षाविद और विभिन्न प्रतिभागियों ने प्रश्नोत्तरी के माध्यम से अपनी विभिन्न प्रकार की समस्याओं के विषय में विचार विमर्श किया और उसके बाद उन समस्याओं का समाधान बताया। कार्यक्रम में डा. श्रीवास्तव ने बताया कि रेकी जीवन ऊर्जा, प्राण ऊर्जा एवं अंदर की शक्ति को जागृत करती है तथा चित्त व मन को नियंत्रण में करती है। उन्होंने शरीरस्थ चक्रों एवं उनके प्रभाव के बारे में बताते हुये कहा कि रेकी में विविध चक्र सहस्रार- बैंगनी, आज्ञाचक्र- गहरा नीला, विशुद्ध चक्र- नीला, अनाहत चक्र- हरा, मणिपुर चक्र- पीला, स्वधिष्ठान चक्र- केसरी, मूलाधार चक्र- लाल व्यक्ति में व्याकुलता, चिंता, अवसाद तथा तनाव आदि को दूर करने का प्रयास करते हैं। व्यक्ति के भावनात्मक विकास को सुदृढ़ बनाने के लिये प्राणायाम, योग तथा स्वास्थ्य कार्यक्रम भी किए जाने चाहिए। उन्होंने बताया कि रेकी व्यक्ति में एक सकारात्मक ऊर्जा पैदा करती है। सकारात्मक चिन्तन, सकारात्मक सोच तथा सकारात्मक विचार से हम अपने आपको ऊर्जावान बना सकते हैं, क्योंकि विभिन्न प्रकार के तनाव नकारात्मक क्रियाकलापों व विचारों के माध्यम से आते हैं।

चक्रों के ध्यान से बताये समस्याओं के समाधान

डा. प्रज्ञा श्रीवास्तव ने विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान विभिन्न चक्रों के ध्यान द्वारा किया जाना बताया। कार्यक्रम में अधिकांश विद्यार्थियों ने पूछा कि जैसे मेरे को घबराहट क्यों हो जाती है, हमारा कॉन्फिडेंस लेवल कम क्यों हो जाता है, हमें छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा क्यों आता है, हम अपने आप कैसे मानसिक संतुलन बनाए रखें, हम अपने ऊर्जा शक्ति को कैसे बढा सकते हैं। उन्होंने सभी प्रश्न का उत्तर विविध चक्रों के ध्यान के माध्यम बताया। कार्यक्रम संयोजक प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि कॉविड-19 वैश्विक महामारी के बाद आज अधिकतर विद्यार्थियों में चिंता, तनाव तथा अवसाद आदि आने लगा है। हमें उनसे संवाद, बातचीत, विचार-विमर्श आदि करना चाहिये। तनाव, अवसाद तथा चिंता आदि खून को जहर बना देते हैं। कार्यक्रम का परिचय, विशेषज्ञ परिचय तथा आभार ज्ञापन प्रो. बीएल जैन ने तथा कार्यक्रम का मंच संचालन मोहन सियोल ने किया।

पारदर्शी अधिकारी पर नहीं लग सकता है भ्रष्टाचार का आरोप

सतर्कता जागरूकता सप्ताह में दिया प्रामाणिकता पर जोर

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की प्रेरणा से 'सतर्क भारत-समृद्ध भारत' थीम के अन्तर्गत सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सतर्कता जरूरी है। इसके लिये समाज में जागरूकता लाने के लिये व्यक्ति को पहले स्वयं को सतर्क बनाना चाहिये। उन्होंने कहा कि सतर्कता जागरूकता की शपथ ग्रहण के साथ संकल्प व आत्मचिंतन होना चाहिये, ताकि उसे जीवन में उतारा जा सके। उन्होंने रिश्वत को लेने व देने दोनों का बहिष्कार करने और जीवन को शुद्ध बनाने का आह्वान किया तथा कहा कि पारदर्शी अधिकारी पर कभी भ्रष्टाचार का आरोप नहीं लग सकता है। इससे पूर्व समस्त कार्मिकों को सतर्कता जागरूकता की सामूहिक रूप से शपथग्रहण करवाई गई।

शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि जागरूकता के अभाव में शोषण होता है। व्यक्ति जिस भी क्षेत्र में काम करे, उस क्षेत्र के बारे में हर प्रकार की जानकारी व जागरूकता के साथ उसका अपडेट रहना आवश्यक है। काम के प्रति प्रामाणिक बनना जरूरी है। प्रामाणिकता से काम करने पर ही समृद्ध भारत बन सकता है। कार्यक्रम के संयोजक डा. बिजेन्द्र प्रधान ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह के कार्यक्रमों की जानकारी दी।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह में द्वितीय दिवस पर राष्ट्रीय वेबिनार के मुख्य अतिथि रायसिंहनगर गंगानगर के डिप्टी एसपी तातराम ने अपने व्याख्यान में पुलिस प्रशासन के अंतर्गत व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर किया जाने के उपायों तथा अन्य विभागों के साथ पुलिस महकमे से समन्वय स्थापना की जाने के सम्बंध में चर्चा की। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा, भारत सतर्क रहेगा, तो निश्चित ही समृद्ध बनेगा और सशक्त भी होगा। अंत में डॉ. भाबाग्राही प्रधान ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सहायक आचार्य डॉ. विकास शर्मा ने किया।

निबंध लेखन, नारा लेखन व पोस्टर प्रतियोगिताएं आयोजित

सतर्कता जागरूकता सप्ताह में तृतीय दिवस पर 'भारत में सतर्कता के संदर्भ में भ्रष्टाचार विरोधी रणनीति' विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 'सतर्क भारत-समृद्ध भारत' विषय पर नारा लेखन प्रतियोगिता का भी ऑनलाईन आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों, कार्मिकों एवं उनके परिवार जनों ने हिस्सा लिया। 'सतर्क भारत-समृद्ध भारत' विषय पर पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का ऑनलाईन आयोजन भी किया गया।

इन सभी ऑनलाइन प्रतियोगिताओं के परिणामों की घोषणा करते हुए सांस्कृतिक समन्वयक डा. अमिता जैन ने बताया कि निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर बी.एस.सी.-बी.एड पंचम सेमेस्टर की छात्रा भगौती मंडा रही। द्वितीय स्थान पर बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर की सरिता एवं तृतीय स्थान पर बी.एड. तृतीय सेमेस्टर जसोदा सिद्ध रही। स्लोगन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर बी.ए.-बी.एड. तृतीय सेमेस्टर की छात्रा रेखा गुर्जर, द्वितीय स्थान पर एम.एड. तृतीय सेमेस्टर की सरिता परमार एवं तृतीय स्थान पर बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर की पूजा चारण रही। पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर बी.एस.सी.-बी.एड. तृतीय सेमेस्टर की छात्रा स्मृति कुमारी, द्वितीय स्थान पर बी. एस.सी.-बी.एड.तृतीय सेमेस्टर की ही आयशा खान एवं तृतीय स्थान पर पूजा कंवर रही। प्रतियोगिताओं में कुल 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया था। निर्णायक की भूमिका डॉ. ममता सोनी, अभिषेक चारण एवं श्वेता खटेड़ ने निभाई।

साधन और साध्य दोनों की शुद्धता से मिटेगा भ्रष्टाचार

'भ्रष्टाचार मुक्तभारत' पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत अंतिम दिन ''भ्रष्टाचार मुक्त भारत'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि गोवा के भूतपूर्व डीजीपी अमोघ कंठ, डॉ. भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. वीपी सिंह थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता दूरस्थ शिक्षा विभाग जैन विश्वभारती संस्थान के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने की। प्रो. वी.पी. सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि भ्रष्टाचार रूपी दीमक का सफाया करने के लिए हमारे साधन और साध्य दोनों ही पवित्र होने चाहिए। उन्होंने दर्शन के माध्यम से भ्रष्टाचार दूर करने के लिए विभिन्न समाधान बताए। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि आचार्य तुलसी द्वारा प्रणीत अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से सही मायने में मानव, मानव बन सकता है। मनुष्य में प्रामाणिकता का गुण होना चाहिए। कार्यक्रम में अमोघ कंठ ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम के प्रारंभ में समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष ने अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। अंत में डॉ. भाबाग्रही प्रधान ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. बिजेंद्र प्रधान तथा सह संयोजक डा. भाबाग्राही प्रधान थे। संचालन समाज कार्य विभाग के सहायक आचार्य डॉ. विकास शर्मा ने किया।

प्रतिभाओं को निखारने का मौका हाथ से नहीं जाने देना चाहिये- कुलपति

चार दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन

संस्थान में आयोजित चार दिवसीय (20-23 जनवरी) सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के समापन सत्र में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा, शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक गतिविधियां मिलकर ही विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करने में सक्षम होती हैं। प्रतिभाओं को निखारने का मौका हाथ से नहीं जाने देना चाहिये और इन्हें राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भी प्रदर्शन का अवसर दिया जाना चाहिये। स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का विकास विद्यार्थियों में होना आवश्यक है। कार्यक्रम में स्नेहा पारीक, महिमा प्रजापत तथा प्रतिष्ठा एवं समूह ने मनमोहक नृत्यों की प्रस्तुति दी। सांस्कृतिक समिति की सचिव डा. अमिता जैन ने चार दिनों में सम्पन्न की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं की घोषणा करते हुए बताया कि रंगोली प्रतियोगिता में भावना चौधरी समूह प्रथम रहा। ममता भाटी समूह द्वितीय और मनीषा टाक समूह तृतीय स्थान पर रहा। एकल नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्नेहा पारीक, द्वितीय महिमा प्रजापत व तृतीय आकांक्षा डूकिया रही। सामुहिक लोकनृत्य में प्रथम स्थान पर सपना एवं समूह, द्वितीय महिमा प्रजापत एवं समूह तथा तृतीय स्थान पर पूजा पंवार एवं समूह और वृंदा एवं समूह रहे। एकल लोकगायन प्रतियोगिता में अर्चना शर्मा प्रथम, हिमांशी द्वितीय और मुमुक्षु संजना एवं मनीषा गोदारा तृतीय रही। मेहंदी प्रतियोगिता में कविता हुड्डा प्रथम, तरन्नुम बानो द्वितीय और रचना सोनी, अनिशा बानो, मनीषा टाक व खुशबू बानो तृतीय स्थान पर रहीं। सामुहिक भजन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रूबिना बानो एवं समूह, द्वितीय प्रतिष्ठा कोठारी एवं समूह तथा तृतीय स्थान पर दुर्गा एवं समूह रहे। स्टाफ कार्मिकों की एकल गायन प्रतियोगिता में प्रथम डा. सत्यनारायण भारद्वाज, द्वितीय डा. गिरधारीलाल शर्मा एवं तृतीय स्थान पर डा. गिरीराज भोजक रहे। कार्यक्रम का संचालन मानषी व योगिता ने किया।

रंगोली व एकल नृत्य प्रतियोगिताओं में लिया बढ-चढ कर हिस्सा

संस्थान के महाश्रमण ऑडिटोरियम में चार दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा की अध्यक्षता में किया गया। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन भी कार्यक्रम के मंचासीन अतिथि रहे। सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के प्रथम दिवस रंगोली प्रतियोगिता के लिये छात्राओं के 39 समूह ने परिसर में विभिन्न आकर्षक रंग उकेरते हुये मनभावन रंगोलियां सजाई। रंगोलियों में विजेताओं के चयन के लिये डा. सुनिता इंदौरिया व डा. ममता सोनी ने निर्णायक की भूमिका निभाई। एकल लोकनृत्य प्रतियोगिता में 52 प्रतिभागियों ने राजस्थानी लोकगीतों पर एक से बढ कर ऐ लोक नृत्यों की प्रस्तुतियां दी। इनके निर्णायकों के रूप में डा. तृप्ति त्रिपाठी और अंजलि माथुर उपस्थित रही। प्रारम्भ में सांस्कृतिक समिति की सचिव डा. अमिता जैन ने प्रतियोगिता के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला और अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डा. विनोद कस्वा ने किया।

राजस्थानी संस्कृति का रंग बिखेरा

छात्राओं ने एकल गायन एवं सामुहिक लोकनृत्य प्रतियोगिता में राजस्थानी संस्कृति से ओतप्रोत विभिन्न आकर्षक नृत्यों की प्रस्तुतियां देकर दर्शकों का मन मोहा। सामुहिक लोकनृत्य में कुल 21 समूहों ने भाग लिया, जिनमें आरती तिवारी एवं समूह, आमना एवं समूह, निकिता शर्मा एवं समूह, कुसुम नाई एवं समूह, विनोद बिजारणियां एवं समूह, प्रीति फूलफगर समूह, रूबिना समूह, साक्षी गुर्जर समूह, गुनगुन समूह, पूजा समूह, महिमा प्रजापत समूह, आंकाक्षा समूह, मोनिका समूह, पिंकी राठौड़ समूह, राधिका समूह, सोनिया समूह, ममता पंवार समूह, पूजा शर्मा समूह, सपना समूह, पूजा पंवर एवं समूह तथा वृंदा समूह ने लोकगीतों पर आधारित नृत्यों की प्रस्तुतियां देकर खूब तालियां बटोरी। इस प्रतियोगिता के निर्णायकों में डा. मधु जैन, डा. तृप्ति त्रिपाड़ी व गीता पूनिया थी। एकल गायन प्रतियोगिता में 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया, इनमें मुमुक्षु प्रेक्षा, नीतु जोशी, दुर्गा कुमारी, भावना भाटी, मुमुक्षु मीनल, मुमुक्षु सजना, मनीषा मेहरा, मुमुक्षु अंकिता, स्नेहा पारीक, हिमांशी, कुसुम नाई, अर्चना शर्मा, मुमुक्षु रोशनी, सोनम कंवर, सिमरन, आयशा सिंह, सविता कंवर, हिमांशी, ललिता काला व रीतिका ने गायन प्रस्तुत किये। इस प्रतियोगिता में निर्णायकों में डा. पुष्पा मिश्रा, डा. गिरधारीलाल शर्मा व डा. गिरीराज भोजक शामिल थे।

सांस्कृतिक प्रतियोगिता के तहत विश्वविद्यालय के स्टाफ के लिये भी गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें 13 जनों ने हिस्सा लिया, जिनमें अभिषेक चारण, प्रगति चौरड़िया, डा. गिरधारी लाल, डा. सत्यनारायण भारद्वाज, डा. गिरीराज भोजक, पंकज भटनागर, डा. पुष्पा मिश्रा, डा. सरोज राय, डा. रणजीत मंडल, विजय कुमार शर्मा, श्वेता खटेड़ आदि शामिल थे। निर्णायकों के तौर पर प्रो. अनिल धर व प्रो. बीएल जैन थे। कार्यक्रम के अंत में डा. विनोद सियाग ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन डा. अमिता जैन ने किया।

शिक्षा में नेतृत्वशीलता के गुणों का विकास होना आवश्यक- डा. प्रमोद कुमार

''राष्ट्रीय शिक्षा नीति'' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी आयोजित

संस्थान में ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा का श्रेष्ठ दस्तावेज'' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी का आयोजन 4 सितम्बर को किया गया। संगोष्ठी में प्रारम्भ में केन्द्रीय विश्वविद्यालय हरियाणा के डा. प्रमोद कुमार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति की परिचयात्मक पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार शैक्षिक गुणवता, अध्यापन सम्बंधी शिक्षा से जुड़े संस्थानों की गुणवता को बढाने, शैक्षिक संस्थानों की स्वायत्तता, समय-समय पर नियत पदोन्नति की नीति तैयार करने, शोध की गुणात्मकता को बढाने, नवाचारों को बढावा देने, आधारभूत स्रोतों का परस्पर साझीकरण, सर्वशिक्षा अभियान के तहत शिक्षा की सार्वभौमिकता को बढाने, पूर्व अध्यापकों एवं सामाजिक कार्यकताओं को शिक्षा से जोड़ने, नेतृत्वशीलता के गुणों का विकास करने आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। चौधरी रणवीरसिंह विश्वविद्यालय जींद के प्रो. संदीप बेरवाल ने व्यावसायिक शिक्षा को बढावा देने पर अपने विचारों को केन्द्रित करते हुये रोजगार परक शिक्षा के लिये विविध कौशलों का प्रशिक्षण दिया जाने, विषय चयन के लिये लचीलापन प्रयोग में लाने, लेखन- वाचन व पठन की क्षमताओं का विकास करने, शिक्षा के क्षेत्र में डिजीटल संसाधनों के प्रयोग को बढावा देने एवं उनका प्रशिक्षण दिया जाने, मूल्य शिक्षा को बढावा देते हुये शोध व नावाचारों को प्रोत्साहित करने पर बल दिया।

शिक्षक के बूते ही संभव है नई शिक्षा नीति की सफलता

दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया और उन्होंने कहा कि समाज में शिक्षक के बलबूते पर ही चिकित्सक, अभियंता एवं शिक्षक आदि को तैयार किया जाना संभव है। प्रारम्भ में कार्यक्रम के संयोजक प्रो. बीएल जैन ने कार्यक्रम का उद्देश्य, विषय का परिचय एवं अतिथियों के बारे में बताया। अंत में समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने आभार ज्ञापित किया। ई-संगोष्ठी में तकनीकी संचालन का कार्य मोहन सियोल ने किया।

शैक्षिक पाठ्यक्रमों में शोध एवं कौशल विशेषज्ञता को बढावा जरूरी

राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी में द्वितीय दिवस पर एकेडमिक अफेयर्स पी.टी. लक्ष्मीचंद स्टेट युनिवर्सिटी ऑफ पेर्फोमिंग एंड विसुअल आर्ट्स रोहतक के डीन प्रो. आर.एस. यादव ने अपने सम्बोधन में भारतीय उच्च शिक्षा की चुनौतियों एवं उनके समाधान पर प्रकाश डाला। उन्होंने उच्च शिक्षा में बहुअनुशासनात्मक विश्वविद्यालय, पाठ्यचर्या में लोचशीलता, उच्च शिक्षा संस्थानों की स्वायत्तता आदि विषयों पर समालोचनात्मक चिंतन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया। प्रो. यादव ने आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग की उच्च शिक्षा तक पहुंच के तरीकों तथा केन्द्र व राज्यों की सरकारों के बीच समन्वय की आवश्यकता के बारे में बताते हुये विदेशी विश्वविद्यालयों के आगमन पर भी चिंता व्यक्त की।

केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के प्रो. आशुतोष प्रधान ने सामाजिक समावेशन पर विचार व्यक्त करते हुये शिक्षा के माध्यम से समाज के समस्त वर्गों का समुचित विकास समानरूप से होना और शिक्षा की पहुंच दिव्यांगों, गरीबों तथा महिलाओं तक होनी जरूरी बताई। नेशनल विश्वद्यालय जयपुर की स्कूल शिक्षा की रिसर्च एडवाईजर प्रो. रीटा अरोड़ा ने उच्च शिक्षा के माध्यम से वैश्विकता और सांस्कृतिकता के समन्वय को अत्यन्त चुनौतीपूर्ण बताया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में संयोजक व शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। अंत में डा. भाबाग्रही प्रधान ने आभार जताया।

निबंध में अतुल, पोस्टर में चेष्टा व स्लोगन प्रतियोगिता में चेतना प्रथम रही

ऑनलाईन राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिताओं में देश के 118 प्रतिभागी रहे

संस्थान में 2 अक्टूबर को ऑनलाइन आयोजित की गई राष्ट्रीय स्तरीय निबंध, स्लोगन और पोस्टर-पेंटिंग प्रतियोगिता के परिणाम की घोषणा करते हुये प्रतियोगिता की आयोजक सांस्कृतिक प्रभारी डॉ. अमिता जैन ने बताया कि ''कौशल विकास में महात्मा गांधी की भूमिका'' विषय पर आयोजित की गई निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति आंध्रप्रदेश के अतुल राय रहे। द्वितीय स्थान पर जैन विश्वभारती संस्थान की बीएड छात्रा दीपिका रही एवं तृतीय स्थान पर एचआर गजवानी कॉलेज ऑफ एजुकेशन गांधीधाम गुजरात की राबरी जस्सुबेन बंकाबाई ने प्राप्त किया। पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता का विषय ''महात्मा गांधी की जीवनी से सम्बंधित'' था, जिसमें प्रथम स्थान पर जैन विश्वभारती संस्थान की बीएससी-बीएड की छात्रा चेष्टा व्यास रही। द्वितीय स्थान पर दो प्रतिभागी रहे, जिनमें जैन विश्वभारती संस्थान की एमएड छात्रा पूजा व्यास, बीएड छात्रा सीता स्वामी रही तथा तृतीय स्थान पर दो प्रतिभागी एसएस जैन सुबोध कॉलेज जयपुर की शिवानी जैन एवं जैन विश्वभारती संस्थान की बीएससी छात्रा भावना चौधरी रही।

''महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर आधारित'' स्लोगन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर जैन विश्वभारती संस्थान की बीएससी-बीएड छात्रा चेतना मीना, द्वितीय स्थान पर जैन विश्वभारती संस्थान की तृतीय स्थान पर दो प्रतिभागी तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद उत्तर प्रदेश की अदिला आसिफ एवं जैन विश्वभारती संस्थान की मनीषा टाक ने प्राप्त किये। डॉ. अमिता जैन ने बताया कि महात्मा गांधी की 150 वीं जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों के लिए आयोजित इन प्रतियोगिताओं में देश के विभिन्न राज्यों से 118 प्रतिभागी विद्यार्थियों ने भाग लिया। निबंध प्रतियोगिता में 41, पोस्टरपेंटिंग प्रतियोगिता में 40 एवं स्लोगन प्रतियोगिता में 38 प्रतिभागियों ने भाग लेकर अपनी अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता में एसएस जैन सुबोध कॉलेज जयपुर की सहायक आचार्य डॉ लेखा जैन, निबंध प्रतियोगिता में केशव विद्यापीठ जामडोली (सीटीई) जयपुर के श्री अग्रसेन शिक्षा महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. रीटा शर्मा, एवं स्लोगन प्रतियोगिता में श्री सबल महिला टी.टी.कॉलेज बोरुन्दा जोधपुर की प्राचार्य डॉ. संतोष शर्मा ने निर्णायक की भूमिका निभाई।

प्राकृत वांगमय स्वास्थ्य सूत्रों की निधि- प्रो. शास्त्री

एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा 20 नवम्बर को आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार में अध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने अपने विचार व्यक्त करते हुए प्राकृत वांग्मय को स्वास्थ्य सम्बन्धी सूत्रों की निधि बताया। उन्होंने कहा कि आगम साहित्य में अनेक स्थानों पर स्वास्थ्य विषयक चर्चा आई है। आगमों में स्वास्थ्य के दो भेद बताये गये हैं। आंतरिक स्वास्थ्य तथा बाह्य स्वास्थ्य। आंतरिक स्वास्थ्य को ठीक करने के लिए तप, संयम, साधना और आहार शुद्धि की अपेक्षा है, तो बाह्य स्वास्थ्य को ठीक करने के लिए औषधि की अपेक्षा रहती है। उन्होंने इस संदर्भ में भगवान महावीर को एक वैद्य के रूप में भी प्रतिपादित किया।

आहार की अशुद्धि से व्याधि

''प्राकृत साहित्य में स्वास्थ्य विषयक सूत्र'' नामक इस संगोष्ठी के मुख्यवक्ता प्रो. धर्मचन्द जैन ने आहार शुद्धि पर जोर देते हुए कहा कि सभी व्याधियों का मूल हमारे आहार की अशुद्धि है। यदि हम संयमित आहार करें तो अनेक व्याधियों से बच सकते हैं। संगोष्ठी के विशिष्ट वक्ता प्रो. श्रीयांश कुमार सिंघई ने आगमों के अनेक उद्धरणों से स्वास्थ्य के महत्त्व को प्रतिपादित किया। प्रारंभ में विषय प्रवर्तन करते हुए प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा ने जैन आगमों में निहित स्वास्थ्य विषयक सूत्रों को व्याख्यायित किया और उनकी वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता सिद्ध की। डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने संगोष्ठी के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कोरोना महामारी के दौर में इस संगोष्ठी को प्रासंगिक बताया। संगोष्ठी में प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन, प्रो. सुषमा सिंघवी तथा प्रो. अनेकांत कुमार जैन ने भी अपने विचार रखे। संगोष्ठी का शुभारंभ डॉ. अरिहंत जैन के मंगलाचरण से हुआ तथा संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न क्षेत्रों से करीब 45 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

ग्रंथ समीक्षा संगोष्ठी

आचार्य महाप्रज्ञ कृत 'जैन दर्शन: मनन और मीमांसा'' पुस्तक की समीक्षा

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर संस्थान संचालित ग्रंथ समीक्षा संगोष्ठी कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राकृत एवं संस्कृत विभाग में आचार्य महाप्रज्ञ कृत पुस्तक ''जैन दर्शनः मनन और मीमांसा'' की समीक्षा प्रस्तुत की गई। पुस्तक समीक्षा में सहायक आचार्या डॉ. समणी भास्कर प्रज्ञा ने बताया कि महाप्रज्ञ ने परम्परा और कालचक्र, तत्व मीमांसा, आचार मीमांसा, ज्ञान मीमांसा और प्रमाण मीमांसा इन 5 खंडों में जैन दर्शन के गूढ रहस्यों को आसान व सरल भाषा में नवीन तथ्यों के साथ प्रस्तुत करते हुये जैन दर्शन की बौद्ध व वेदांत दर्शनों के साथ तुलना प्रस्तुत की और भारतीय दर्शन का सटीक व तटस्थता पूर्वक निरूपण किया है। पुस्तक की विषयवस्तु, उसकी पृष्ठभूमि और रहस्यों के बारे में बताते हुये डॉ. भास्कर प्रज्ञा ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ की साहित्यिक मेधा उच्च कोटि की थी। उनकी लेखनी और मेधाशक्ति की विशेषता ही रही कि उन्होंने इस गूढ विषय वाली पुस्तक को आबाल-वृद्ध सामान्यजन से लेकर विद्वानों तक प्रत्येक श्रेणी के व्यक्ति के लिये पठनीय एवं हृदंगम करने वाली पुस्तक का स्वरूप दिया है। इस ग्रंथ समीक्षा संगोष्ठी की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने की। संगोष्ठी में डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा, डॉ. समणी सम्यक्त्व प्रज्ञा, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, डॉ. सुनीता इंदौरिया, डॉ. मीनाक्षी मारू एवं समस्त शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

फिर शुरू हो संस्कृत के स्वाध्याय की प्रवृत्ति

प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा 6 अगस्त को ऑनलाईन संस्कृत दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्यवक्ता जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. धर्मचन्द जैन ने संस्कृत के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए वर्तमान संदर्भ में उसकी प्रांसगिकता पर बल दिया। उन्होंने संस्कृत भाषा को वैज्ञानिक भाषा बताया। प्रो. दामोदर शास्त्री ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में बताया कि आज संस्कृत के स्वाध्याय की प्रवृत्ति समाप्त हो गई है। यदि हमें संस्कृत को बचाना है तो स्वाध्याय को महत्व देना होगा। अन्त में डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया।

दस दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के द्वारा दस दिवसीय कार्यशाला का आयोजन (16-25 दिसम्बर 2020) किया गया। इस दस दिवसीय कार्यशाला के प्रमुख प्रशिक्षक प्रो. दामोदर शास्त्री ने विभाग के संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों को संस्कृत व्याकरण का प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्होंने संस्कृत भाषा को लिखने एवं बोलने में होने वाली त्रुटियों पर प्रकाश डालते हुए उन्हें ठीक करने पर बल दिया, साथ ही स्वाध्याय के प्रति रूचि जागृत करने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान प्रतिदिन 1 घंटे की विशेष कक्षाओं का आयोजन किया गया।

'हिन्दी दिवस समारोह' का आयोजन

प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस समारोह का ऑनलाईन आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने की तथा मुख्यवक्ता आचार्य कालु कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी थे। कार्यक्रम में उक्त वक्ताओं द्वारा हिन्दी के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया। कार्यक्रम का संयोजन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया।

Grand Release of Jain Monograph Series by Anushastā Ācāryashree Mahāshraman

In the holy presence of Anushastā Ācāryashree Mahāshraman, the monograph series of Bhagwan Mahavir International Research Center (BMIRC, Jain Vishva Bharti, Ladnun) was unveiled by Pujya Gurudev at Mahashramana Vatika, Shamshabad (Telangana) on 8th November 2020.

HH Acharya Shri Mahashramanji; the eleventh Acahrya, the supreme head of Jain Shvetambar Terapanth sect and the Anushasta of the Jain Vishva Bharati Institute (Deemed-to-be University), Ladnun congratulated the Vice-Chancellor of the University, Pro. B.R. Dugar for bringing out a monographic series on a wide variety of contemporary philosophical issues under the sphere of the Jainological studies. He expressed his satisfaction to see the monographic studies concerned with questions that cannot be addressed from the standpoint of a single discipline. He blessed the Vice-Chancellor Prof B.R. Dugar with the belief that monographs covering various dimensions of Jainism would be respected by the academia as an outstanding work, a monument of erudition and philosophical appreciation all over the globe.

The program to release the monographs was inaugurated by the divine sound of Mahamantra Namokar. The Honorable Vice-Chancellor of Jain Vishva Bharati Institute, Prof. B.R. Dugar presented the monograph series to Acharya Gurudev and Sadhvi Pramukha Kanakpragyaji.

Prof. B.R. Dugar, stated the purpose and the utility of the monograph series for understanding Jain philosophy which is indeed true philosophy. Further he said that "keeping in mind the fact that, people of any field can take advantage of this by understanding it in simple language, BMIRC took the initiative to write a monograph on each Jain concept, so that every person can become familiar with the scientism of Jainism".

Sadhvi Pramukha Kanakpragya Ji said 'The source of understanding Jainism is our Shvetambara and Digambara Prakrit Agamas (Canonical Literature in Prakrit Language), which are filled with immense knowledge. Through these monographs, a common person will also be able to understand its essence in simple language and at the same time will be attracted to read the canonical literature in depth and be inspired.

On this momentous occasion, the President of Chaturmas Arrangement Committee Shri Mahendra Bhandari, Board member of the JVBI, T. Amarchand ji Lunkad Shri Santosh ji Katrela ,Shri Dharmchand Ji Lunkar, Shri Kevalchand ji Mandot, B. Ramesh ji Bohra, , and other distinguished guests were present, and everyone appreciated and admired the effort.

This monograph series, based on the diverse theories and themes of Jain Philosophy which have been prepared with the great efforts of Prof. Samani Riju Prajna Ji (Director of BMIRC) and with the cooperation of renowned scholars of the country.

The list of monographs is as under:

Series No.	Name of the Monograph	Author
1.	Introduction to Jainism	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha
2.	Jainism : A Living Realism	Prof. S. R. Vyas
3.	Jain Doctrine of Reality	Prof. Samani Riju Prajna and Dr. Samani Shreyas Prajna
4.	Jain Doctrine of Knowledge	Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha
5.	Jain Doctrine of Karma	Prof. Samani Riju Prajna and Sarika Surana
6.	Jain Doctrine of Anekanta	Dr. Samani Shashi Prajna
7.	Jain Doctrine of Naya	Prof. Anekant Kumar Jain
8.	Jain Doctrine of Nine Tattvas	Dr. Pradyuman Singh Shah
9.	Jain Doctrine of Six Essentials	Dr. Arihant Kumar Jain
10.	Jain Doctrine of Aparigraha	Dr. Sushma Singhvi and Dr. Rudi Jansma
11.	Jain Doctrine of Nyaya	Prof. Samani Riju Prajna Dr. Samani Shreyas Prajna
12.	Jain Doctrine of Dreams	Dr. Sadhiv Rajul Prabha
13.	Jain Doctrine of Aayushya	Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha
14.	Introduction to Preksha Meditation	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha

प्रेक्षाध्यान केवल शारीरिक व्याधियां ठीक करने का माध्यम नहीं बल्कि आत्मदर्शन का माध्यम- डॉ. मल्लीप्रज्ञा

जैन योग में आचार्य महाप्रज्ञ का योगदान विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

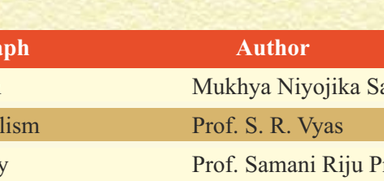

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर संस्थान के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के तत्वावधान में एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। ''जैन योग में आचार्य महाप्रज्ञ का योगदान'' विषय पर आयोजित इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता समणी नियोजिका डॉ. समणी मल्लीप्रज्ञा ने कहा, यह तुलसी-महाप्रज्ञ युग है, जिसमें मानव-निर्माण का बीड़ा उठाया गया है। ऋषभ से लेकर महावीर तक और महावीर से लेकर तुलसी-महाप्रज्ञ तक जैन योग द्वारा चेतना के ऊर्ध्वारोहण का कार्य किया गया है। प्रेक्षाध्यान बीपी, डायबीटीज आदि शारीरिक व्याधियों को ठीक करने का माध्यम ही नहीं है, बल्कि यह आत्मदर्शन का माध्यम है। यह चेतना की धारा को वीतरागता तक ले जाता है। उन्होंने बताया कि प्रेक्षाध्यान शुद्ध अध्यात्म का विज्ञान है। प्रेक्षाध्यान आत्मा का स्वास्थ्य सुधारता है। कार्यशाला में प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित किया जाकर जिज्ञासाओं के समाधान भी समणी डॉ. मल्लीप्रज्ञा द्वारा किया गया।

महावीर से महाप्रज्ञ तक जैन योग का सफर

कार्यशाला की अध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने इस अवसर पर कहा, महाप्रज्ञ ने 20वीं शताब्दी में प्रेक्षाध्यान दिया, लेकिन इससे पूर्व जैन योग की स्थिति पर विचार किया जाने पर ज्ञात होता है कि भगवान महावीर की साधना कायोत्सर्ग, भावना, विपश्यना और विचय- इन चार में विभक्त थी। इसे महाप्रज्ञ ने अपनी पुस्तक 'महावीर की साधना का रहस्य' में विस्तार से समझाया है। महावीर के बाद के समय में ध्यान की परम्परा लुप्त हो गई थी। आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान प्रदान करके जैन योग को नई दिशा प्रदान की। प्रो. ऋजुप्रज्ञा ने आत्मा के आठ प्रकार बताते हुये कहा कि जो शुद्ध आत्मा होती है, वही योग-आत्मा, कषाय-आत्मा, वीर्य-आत्मा, उपयोग-आत्मा, ज्ञान-दर्शन-आत्मा, क्रोध-आत्मा आदि रूप धारण करती है। कार्यशाला के मुख्य अतिथि राजेन्द्र मोदी इंदौर ने आचार्य महाप्रज्ञ को महायोगी बताया तथा उनकी सिद्धि के अनेक अनुभव साझा किये। विशिष्ट अतिथि पारस दूगड़ मुम्बई ने जीवन की जटिल समस्याओं से छुटकारा पाने का साधन प्रेक्षाध्यान को बताया तथा कहा कि इसमें जीवन को परिवर्तित करने की क्षमता है। प्रेक्षाध्यान से शारीरिक, मानसिक व भावात्मक परिवर्तन लाये जा सकते हैं। मिश्रीमल जैन ने बताया कि उसकी अस्थमा की बीमारी प्रेक्षाध्यान से ठीक हो गई। वह पिछले 40 सालों से प्रेक्षाध्यान का अभ्यास कर रहा है। इसमें जीवन में बदलाव लाने की शक्ति है। अंत में डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. योगेश कुमार जैन ने किया।

ग्राम व सामुदायिक विकास एवं शिक्षकों की भूमिका पर पांच दिवसीय कार्यशाला

शिक्षा को फिर से समाजोन्मुखी बनाने की आवश्यकता है– प्रो. नरेश

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वावधान में पांच दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम (12-16 मार्च) का शुभारम्भ 12 मार्च को यहां सेमिनार हाल में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में किया गया। 'रूरल इमर्सन एंड कम्युनिटी एंगेजमेंट्स' विषय पर आधारित इस फेकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन महात्मा गांधी नेशनल कौंसिल आफ रूरल एजुकेशन एवं भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के संयुक्त सहयोग से किया गया। कार्यशाला के शुभारम्भ सत्र में मुख्य अतिथि वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा के पूर्व कुलपति प्रो. नरेश दाधीच ने कहा, भारत में ग्रामीण क्षेत्र में समुदाय का महत्व अधिक है। जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा आदि के आधार पर बने समुदायों तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने और उन्हें विकास से सीधा जोड़े जाने के लिये यह कार्यशाला उपयोगी बन पायेगी। उन्होंने कहा कि जब तक योजनाओं की क्रियान्विति में आर्थिक पूंजी के साथ सामाजिक पूंजी नहीं जुड़ती, योजनायें सफल नहीं हो पाती है। सामाजिक सहयोग से ही आर्थिक नीतियां सफल हो सकती है। हमारी शिक्षा पद्धति हमें हमारे समुदायों से अलग करती है, लेकिन अब वापस शिक्षा को समुदायोन्मुखी बनाना होगा।

उच्च शिक्षा की बाढ, पर गुणवता घटी

अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा, भारत दुनिया में उच्च शिक्षा की दृष्टि से द्वितीय स्थान रखता है, यहां पिछले दो दशकों से उच्च शिक्षा बाढ की तरह से बढी है, लेकिन इससे शिक्षकों की गुणवता में कमी भी आई है। आज अध्यापन, शोध एवं शिक्षण में नवाचार बहुत बढे हैं, जिनकी पूर्ण जानकारी होनी आवश्यक है। फेकल्टी को समाज में व्याप्त स्किल को देखने-पहचानने और उसे विकसित करने के साथ समुदाय को उसे सिखाने की जिम्मेदारी भी है। गुजरात विद्यापीठ के गांधी अध्ययन केन्द्र की प्रो. पुष्पा मोटियानी ने कहा कि महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक ग्राम स्वराज्य में गांवों के विकास पर जोर दिया था। गांवों को स्वावलम्बी बनाने की आवश्यकता है। वहां आरोग्य, शिक्षण एवं जीवनोपयोगी वस्तुओं में आत्मनिर्भरता दी जानी आवश्यक है।

ग्राम विकास के लिये महिला चेतना जरूरी

कोटा खुला विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. नरेश दाधीच ने कहा कि ग्रामीण विकास में महिलाओं की भागीदारी होने से ही सफलता मिल सकती है और उसके लिये उनका शिक्षित होना आवश्यक है। गांवों में स्वास्थ्य, शिक्षा व महिला चेतना की जागृति आवश्यक है। महात्मा गांधी नेशनल कौंसिल आफ रूरल डेवलेपमेंट हैदराबाद के डॉ. शत्रुघ्न भारद्वाज ने प्रारम्भ में कार्यशाला का परिचय प्रस्तुत किया और बताया कि महात्मा गांधी का सपना था कि गांव स्वालम्बी हों। आज गांवों से शहरों की ओर पलायन हो रहा है, इसलिये गांवों के समुचित विकास पर ध्यान देना आवश्यक है।

अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर ने स्वागत वक्तव्य और विषय प्रवर्तन किया। कार्यक्रम समणी प्रणव प्रज्ञा के संगल संगान से प्रारम्भ किया गया। अंत में डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. वंदना कुंडलिया ने किया।

एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

एकाग्रता, सकारात्मक सोच व संकल्पशक्ति के विकास के लिये अहिंसा प्रशिक्षण सहायक

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वावधान में यहां एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 15 फरवरी को किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर ने अध्यक्षता करते हुये कहा कि शांति की संस्कृति व मानवाधिकारों की रक्षा की दिशा में अहिंसा प्रशिक्षण महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हम अपनी छोटी-छोटी आदतों को बदल कर सकारात्मक सोच के माध्यम से अपने व्यवहार को एवं समूचे जीवन को परिवर्तित कर सकने में समर्थ हो पाते हैं। प्रशिक्षण का अपने-आप में बहुत महत्व होता है। सह आचार्य समणी रोहिणी प्रज्ञा ने कहा कि अपने भाव, विचार और संकल्प को मजबूती दिये जाने से व्यक्ति बदल सकता है, इसमें अहिंसा प्रशिक्षण से बहुत सहायता प्राप्त होती है। शिविर में प्रो. समणी सत्यप्रज्ञा ने सम्भागियों को अहिंसा प्रशिक्षण के व्यावहारिक प्रयोगों का अभ्यास करवाया। उन्होंने मन की शांति, एकाग्रता व मानसिक संतुलन में सहायक अनुलोम-विलोम प्राणायाम तथा ध्यान के प्रयोग करवाये तथा कहा कि महाप्राण ध्वनि और अनुलोम-विलोम के प्रयोग द्वारा संकल्पशक्ति का विकास होगा और सकारात्मक सोच विकसित होगी। प्रो. समणी सत्यप्रज्ञा ने गुस्सा नहीं करने, स्मरणशक्ति के विकास और शांति प्राप्ति के लिये मस्तिष्क की शक्ति बढाने के प्रयोग करवाये और उनका महत्व बताया। उन्होंने बताया कि इनसे एकाग्रता के साथ मन को मजबूती मिलती है। शिविर में यहां के दयानन्द सरस्वती सी. सै. स्कूल के विद्यार्थियों ने भाग लेकर प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में अहिंसा एवं शांति विभाग के शोधार्थियों व विद्यार्थियों कमल किशोर, उषा, हरफूल, हीरालाल, रजनी, राजकुमारी, रेणु, सोनिया आदि का सहयोग रहा। कार्यक्रम के अंत में सहायक आचार्य डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विकास शर्मा ने किया।

अहिंसा प्रशिक्षण के प्रयोग पर ऑनलाईन क्लास आयोजित

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के छात्र-छात्राओं को ऑनलाइन अध्ययन करवाया गया। इस ऑनलाईन क्लास के द्वारा स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को संघर्ष निवारण की पारम्परिक तकनीकी, जिसमें वार्ता, समझौता, संधि के अलावा समकालीन संघर्ष निवारण विषय पर विविध चर्चा की गई और आसान सूत्रों के माध्यम से उन्हें समझाया गया। अतिथि व्याख्याता महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी बिहार के डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने इसमें बताया कि इसके साथ ही विद्यार्थियों को दो राष्ट्रों के मध्य जब असहमति हो जाती है, तो किस तरह तीसरे राष्ट्र की चयन प्रक्रिया की जाती है, उस तकनीक के उदाहरण भी दिये गये तथा उनके बीच शांति स्थापना के लिए जॉन गोर्टून के पीस बिल्डिंग, पीस मेकिंग एवं पीस कीपिंग सिद्धांतों का भी वर्णन किया गया।

साधना से बदला जा सकता है कर्मजनित समस्याओं व घटनाओं को– समणी रोहिणी प्रज्ञा

आचार्य महाप्रज्ञ कृत 'कर्मवाद' ग्रंथ की समीक्षा

आचार्य महाप्रज्ञ के जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर संस्थान में संचालित ग्रंथ समीक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत 24 फरवरी को अहिंसा एवं शांति विभाग में समणी रोहिणी प्रज्ञा ने आचार्य महाप्रज्ञ कृत ''कर्मवाद'' ग्रंथ पर समीक्षा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि जीवन की समस्त घटनायें कर्मजनित नहीं होती है और कर्म-सिद्धांत से होने वाले और कर्म की भूमिका से रहित घटनाओं-समस्याओं के फर्क को समझने से ही अध्यात्म को सही स्वरूप में समझा जा सकता है। उन्होंने कहा कि कर्मवाद अध्यात्म का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, लेकिन इस सम्बंध में सही समझ के बजाये भ्रांतियां अधिक पनपी हैं। इस कारण कर्मवाद का महान सिद्धांत उपयोगी होने के बजाये समस्या के रूप में भी उभर कर सामने आया है। जैन दर्शन में कर्मवाद के संदर्भ में एक अवधारण रही है कि प्रत्येक घटना के पीछे कर्म की ही भूमिका होती है। इस कारण गरीबी, बेरोजगारी और अन्य शारीरिक, मानसिक बीमारियों आदि को पनपने का मौका मिलता रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ की एक महत्वपूर्ण कृति है 'कर्मवाद', जिसमें उनका मंतव्य रहा कि जीवन के कुछ प्रसंगों का कर्म से सिद्धांत से कुछ लेना देना नहीं है। संवदन की भूमिका पर ही कर्म का सही अंकन होता है। कर्म बहुत कुछ है, लेकिन सबकुछ नहीं है। चेतना का साम्राज्य अधिक शक्तिशाली है, इसलिये पुरूषार्थ, जो चेतना से निकलने वाला तत्व है, उससे संक्रमण एवं परिवर्तन घटित हो सकता है। ध्यान, प्रतिक्रमण एवं प्रायश्चित जैसी अमूल्य साधना पद्धतियों से परिवर्तित घटित किये जा सकते हैं। यदि हम कर्म से होने वाली घटनाओं तथा ऐसी घटनाओं, जिनमें कर्म की कोई भूमिका नहीं होती, उनके भेद को स्पष्ट समझ लेंगे, तो वास्तव में अध्यात्म को सही रूप में समझ सकेंगे एवं समस्याओं का सही समाधान भी कर पायेंगे। अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर ने आभार ज्ञापित किया और कहा कि अध्यात्म के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत को आचार्य महाप्रज्ञ ने हल किया और एक सतार्किक विवरण देकर लोगों में व्याप्त भ्रांतियों का समाधान किया है। ग्रंथ समीक्षा कार्यक्रम का संयोजन डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने किया। इस अवसर पर रेणु गुर्जर, पिंकी, पूजा महिया, कल्पना सिधु, हंसराज कंवर, प्रतिभा कंवर, राजकुमारी आदि विद्यार्थियों ने भी अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त किया।

''कोविड 19 की परिस्थिति में महिलाओं की भूमिका'' पर एक दिवसीय वेबिनार आयोजित

परिवार की आर्थिक मजबूती और कठिन परिस्थिति में धैर्य प्रदान करती है महिलायें- सुमन शर्मा

समाज कार्य विभाग के तत्वावधान में 13 जुलाई को ''कोविड 19 की परिस्थिति में महिलाओं की भूमिका'' विषय पर एक दिवसीय ऑनलाइन वेबीनार का आयोजन कुलपति प्रो. बीआर दूगड़ की प्रेरणा से किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान महिला आयोग की पूर्व अध्यक्षा सुमन शर्मा में अपने वक्तव्य में कहा कि महिला बहु-आयामी कार्य कर रही हैं। वे समाज को तथा परिवार को अवसाद से बचा रही है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता के रूप में विशिष्ट भूमिका निभा रही है। वे इस कठिन परिस्थिति में भी धैर्य प्रदान करने के कार्य को बखूबी निभा रही है। आर्थिक रूप से परिवार को मजबूत बनाने का दायित्व भी महिलायें ही पूरा कर रही हैं। आज कोविड-19 महामारी के दौर में भी महिलाओं की भूमिका विशिष्ट तथा सराहनीय है। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में स्योजिराव

विश्वविद्यालय के प्रो. एम.एन. परमार ने सहयोग, सहकार्यता एवं प्रतिबद्धता के माध्यम से महिलाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि महिलाओं की निःस्वार्थ सेवा एवं निर्णय क्षमता के सभी आभारी हैं। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. प्रभावती चौधरी ने कहा कि महिलाओं का समाज में स्वतंत्र अस्तित्व है, फिर भी वे सबका सहयोग लेकर ही सामाजिक एकता का परिचय देती है। कार्यक्रम के प्रारम्भ में विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने विषय का प्रवर्तन किया एवं अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। अंत में डॉ. पुष्पा मिश्रा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विकास शर्मा ने किया। तकनीकी सहयोग मोहन सियोल का रहा।

महिला सुरक्षा व अधिकारों पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

घरेलू हिंसा से निपटने के लिये सबके सहयोग की आवश्यकता- प्रो. मल्होत्रा

संस्थान के समाज कार्य विभाग के तत्वावधान में कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ के निर्देशानुसार ''महिला सुरक्षा एवं अधिकार कोविड-19 की परिस्थिति में'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन 1 जुलाई को किया गया। पंजाब विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की प्रो. मंजू मल्होत्रा ने वेबिनार में कहा कि घरेलू हिंसा से बचाव, महिला सुरक्षा और महिला सम्मान ऐसे विषय हैं, जिन पर अभी बहुत काम किया जाने की आवश्यकता है, जो सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। कोविड-19 समस्या के दौर में इस क्षेत्र में कार्यरत सामाजिक संगठनों को आगे आकर महिलाओं की मनोदशा का विश्लेषण करना चाहिये तथा उनका सकारात्मक मार्गदर्शन भी करना चाहिये। वनस्थली विद्यापीठ विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग एवं महिला अध्ययन केन्द्र की समन्वयक प्रो. मंजू सिंह ने कहा कि महिलाओं में स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं का निवारण करने और उनकी सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है। नेशनल ओपन विश्वविद्यालय जयपुर के समाज कार्य विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. बीना द्विवेदी ने कहा, कोविड-19 महामारी के दौरान पलायन करके आने वाली मजदूर वर्ग की महिलाओं की समस्याओं के समाधान के मार्ग सुझाये जाने चाहिये। उन्होंने वेबिनार के सहभागियों के सवालों के जवाब भी दिये। प्रारम्भ में समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने विषयवस्तु पर प्रकाश डाला। अंत में डॉ. विकास शर्मा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डा. पुष्पा मिश्रा ने किया।

दुजार में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के समाज कार्य विभाग ने लाडनूं ब्लॉक के दुजार गांव में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 24 जनवरी को किया, जिसमें संस्थान के समाज कार्य विभाग, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय, शिक्षा विभाग एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दुजार के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों और ग्रामवासियों ने भाग लिया। कुल लगभग 400 सहभागी थे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ग्राम के उपसरपंच भंवर सिंह राठौड़, विशेष अतिथि स्कूल के प्रधानाचार्य जयप्रकाश एवं मुख्य वक्ता प्रो. बी. एल. जैन, विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग एवं डॉ बिजेन्द्र प्रधान, विभागाध्यक्ष समाज कार्य जैन विश्वभारती संस्थान थे। कार्यक्रम के दौरान भाषण, प्रतियोगिता, रैली आदि का आयोजन किया, जिसमें सभी ने सक्रिय रूप से भाग लिया। संस्थान के डॉ. पुष्पा मिश्रा, डॉ. भाबाग्राही प्रधान, डॉ. प्रगति भटनागर आदि उपस्थित थे।

वरिष्ठ नागरिकों को करें मनोवैज्ञानिक सहयोग - प्रो. रिचा

संस्थान के समाज कार्य विभाग के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की प्रेरणा से आयोजित कार्यक्रम में दिल्ली विश्वविद्यालय के अम्बेडकर कॉलेज की सह आचार्य प्रो. रीचा चौधरी ने कहा कि वर्तमान कोविड-19 के संकट के समय में वरिष्ठ नागरिकों के प्रति हमारी जिम्मेदारी अधिक बढ गई है। विशेष रूप से जो एकल व्यक्ति हैं, उनके प्रति अधिक ध्यान दिये जाने की जरूरत है, उन्हें सेवा की अधिक आवश्यकता है। वरिष्ठ नागरिकों के लिये अपनी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढाने के उपाय ऐसे समय में करने की जरूरत है। यह भी आवश्यक है कि वरिष्ठ नागरिकों के लिये हम मनोवैज्ञानिक सहयोग करें। हमें उनके अनुभवों का सम्मान करना चाहिये। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रो. आरके यादव ने कहा कि हमारे पारम्परिक मूल्यों में वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान की बात कही गई है। उन्होंने वरिष्ठ नागरिकों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य दोनों पर ध्यान देने की जरूरत बताई और वैश्विक एवं स्थानीय मूल्यों के बारे में बताते हुये कहा कि वैश्विक स्तर पर सोच कर स्थानीय स्तर पर कार्य करना चाहिये। कार्यक्रम के प्रारम्भ में समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बिजेन्द प्रधान ने अतिथियों का स्वागत एवं विषय प्रवर्तन किया। अंत में डा. विकास शर्मा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डा. पुष्पा मिश्रा ने किया। कार्यक्रम में तकनीकी सहयोग मोहन सियोल ने किया।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया

संस्थान के समाज कार्य विभाग अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 8 मार्च को लाडनूं ब्लॉक के जोरावरपुरा गांव में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि कनक श्याम विद्या मन्दिर स्कूल जोरावरपुरा की प्रधानाचार्य ऋतु स्वामी थी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के अलावा संस्थान के डॉ. बिजेन्द्र प्रधान, विभागाध्यक्ष समाज कार्य विभाग, डॉ पुष्पा मिश्रा, डॉ विकास शर्मा, गांव के गणमान्य व्यक्ति एवं समाज कार्य विभाग और स्कूल के विद्यार्थियों ने अपने विचार रखते हुए महिला सशक्तिकरण, महिलाओं की स्थिति, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के महत्व आदि के बारे में बताया। सभी सहभागियों ने इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम में कुल लगभग 45 सहभागी उपस्थित थे।

अन्तर्राष्ट्रीय एच आई वी व एड्स दिवस पर कार्यक्रम

संस्थान के समाज कार्य विभाग के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय एचआईवी व एड्स दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन 01 दिसम्बर को किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डॉ. बिजेन्द्र प्रधान ने कहा कि एड्स से भयभीत होने के स्थान पर उसके फैलने के कारणों को जानकर उनका मुकाबला करना चाहिये। अगर हमें इस बारे में भलीभांति पता रहे कि एचआईवी-एड्स किन कारणों से प्रसार पाता है, तो हम उन सबसे अपना बचाव कर सकते हैं। डॉ. प्रधान ने एड्स के फैलने के समस्त कारणों के बारे में विस्तार से बताया और सावधानी बरतने की आवश्यकता बताई। डॉ. पुष्पा मिश्रा ने कहा समाज कार्य विभाग के विद्यार्थियों से विभिन्न सामाजिक संस्थाओं, संगठनों, समुदाय आदि से अपने फील्ड वर्क के दौरान जुड़ कर जागरूकता के कार्यों को गति दे सकते हैं। इसके लिये संगोष्ठी, सेमिनार, कार्यशाला, प्रतियोगिताओं आदि अनेक कार्यक्रमों को आयोजित किया जा सकता है। कार्यक्रम में संकाय सदस्यों के अलावा विद्यार्थी, शोध छात्र, अभिभावक आदि सम्मिलित रहे।

छात्राओं ने किया हरिद्वार व देहरादून का शैक्षिक भ्रमण

संस्थान के समाज कार्य विभाग के एम.एस.डब्ल्यू द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों का अध्ययन भ्रमण कार्यक्रम 04-10 जनवरी तक हरिद्वार एवं देहरादून में आयोजित किया। इस भ्रमण कार्यक्रम में कुल 17 विद्यार्थियों एवं 2 अध्यापकों ने भाग लिया। अध्ययन भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने 4 उद्योग एवं 6 स्वयंसेवी संस्थाएं और 2 संस्थानों का गहन अध्ययन कर उनकी जानकारी हासिल की।

पल्स पोलियो में निभाई छात्रों ने सहभागिता

संस्थान के समाज कार्य विभाग एवं ब्लॉक स्तरीय राजकीय अस्पताल लाडनूं के तत्वावधान में पल्स पोलियो कार्यक्रम का आयोजन 18-21 जनवरी तक किया। इसके तहत अस्पताल के डॉक्टरों एवं कर्मचारियों के टीम ने संस्थान के विद्यार्थियों को 18 जनवरी को पल्स पोलियो संबंधी प्रशिक्षण प्रदान किया एवं प्रशिक्षित विद्यार्थियों के लिए बूथ सुनिश्चित किये, जहां विद्यार्थियों ने 19-21 जनवरी तक बच्चों को पल्स पोलियों की खुराक पिलाई गइ।

आत्मनिर्देशन एवं भावों की अभिव्यक्ति मातृभाषा

संस्थान के शिक्षा विभाग में 20 फरवरी को अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि मातृभाषा हमारी सभी भाषाओं की जननी है। मातृभाषा के माध्यम से ही हम अपने हृदय के उद्‌गार प्रकट कर पाते हैं। मातृभाषा के ज्ञान के बिना हमारा सर्वतोन्मुखी विकास असम्भव है। डॉ. अमिता जैन ने बताया कि मातृभाषा हमारे उद्वेगों, मनोभावों एवं विचारों की अभिव्यंजना है, जिसके माध्यम से हम सरलता एवं स्पष्टता से अपनी बात रख सकते हैं। छात्राध्यापिका मनीषा पंवार ने कहा कि आज मातृभाषा की अपेक्षा हम और मातृभाषा की ओर जा रहे हैं, जिससे मातृभाषा गौण प्रतीत हो रही है हमें अपनी मातृभाषा के प्रति सजग रहना है। रेखा शेखावत ने मातृभाषा के उद्‌देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मातृभाषा हमारी संस्कृति की द्योतक है, यह हमारी संस्कृति को अक्षुण्ण रखती हैं। सरिता ने मातृभाषा पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि मातृभाषा विश्व में भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता और बहुभाषिता को बढ़ावा देती है। कार्यक्रम में विभाग के सभी सदस्य उपस्थित रहे।

जीवन की अन्तः शुद्धि से शांति सम्भव

विश्व शांति दिवस मनाया

शिक्षा विभाग में अन्तर्राष्ट्रीय शांति दिवस कार्यक्रम का आयोजन 21 सितम्बर को किया गया, जिसमें विश्व भर में शांति कायम करने की प्राथमिक आवश्यकता पर विचार किया गया। कार्यक्रम में संयोजक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि राजनैतिक मतभेद की विचारधारा, आर्थिक विषमता, संकीर्ण धार्मिकता, उपभोगवादी संस्कृति, मूल्यों की गिरावट आदि से विश्व में अशांति फैली है। क्रोध, लोभ, मोह, माया, वैमनस्य, ईर्ष्या, परिग्रह ने आंतरिक अशांति को बढाया है। भौतिकता की दौड़ ने अशांति को बढाया है। आज व्यापार, कृषि, उद्योग, शिक्षा आदि क्षेत्रों में विकास हुआ है, लेकिन अशांति बढी है। जीवन में अन्तःशुद्धि, मन की निर्मलता, चरित्र की पवित्रता, नैतिकता शुद्धता से शांति और विकास समुचित ढंग से सम्भव है। बी.एड. छात्रा मनीषा पंवार, रेखा शेखावत, माया सैनी, सरिता बी.एस.सी-बी.एड. एवं बी.ए-बी.एड की छात्राओं अम्बिका, ममता भाटी, ललिता, नीरज आदि ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुये कहा कि नियम तथा अनुशासन का पालन, सामंजस्य, सहयोग, समन्वय, वाणी संयम, अहिंसा, सत्य, ईमानदारी आदि के माध्यम से वैश्विक शांति को बढाया जा सकता हैं।

संविधान महिलाओं के सशक्तिकरण के अधिकार प्रदत्त करता है- प्रो. जैन

संस्थान के शिक्षा विभाग में ''महिला सशक्तिकरण में संविधान की अहम भूमिका'' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने अपने सम्बोधन में बताया कि हमारे संविधान में लैंगिक भेदभाव को समाप्त करते हुये नारी जागरण एवं सशक्तिकरण के प्रयास को प्रारम्भ किया गया। संविधान द्वारा एक तरफ महिला व पुरूष को एक समान अधिकार प्राप्त हुये, वहीं दूसरी तरफ महिलाओं को कुछ विशेषाधिकार भी प्रदान किये गये। उन्होंने संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 15(3), 16, 21, 39(क), 51(अ), 32 व 226, 42, 44, 325 आदि का हवाला देते हुये उनमें महिलाओं के वर्णित अधिकारों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि महिलाओं को संविधान में कानूनी रूप से समानता और संरक्षण, महिलाओं व बच्चों के लिये विशेष कानून बनाने की शक्ति, राज्य, धर्म, वंश, लिंग आदि का भेदभाव किसी भी स्तर पर नहीं किये जाने एवं समानता बरते जाने के अधिकार आदि महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करते हैं। इस कार्यक्रम में बीएड, बीए-बीएड, बीएससी-बीएड की 160 छात्राओं ने भाग लिया।

सद्‌गुणों का विकास करता है दीपावली का पर्व

संस्थान के शिक्षा विभाग में राष्ट्रीय शिक्षा दिवस एवं दीपावली पर्व के उपलक्ष में एक ऑनलाईन कार्यक्रम का आयोजन 11 नवम्बर को किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने दीपावली पर्व को व्यक्ति में सद्‌गुणों का विकास करने वाला बताया तथा कहा कि इस पर्व पर सभी में आपसी मेल-मिलाप से प्रेम, नम्रता, विनम्रता, मान, सम्मान, आदर, सत्कार, अभिवादन आदि के भाव प्रकट होते हैं। भारतीय संस्कृति में इन पर्वों के कारण ही विश्व में हमारी पहचान अलग रूप में है। कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों में से अंबिका शर्मा एवं रेखा शेखावत ने भाषण के माध्यम से, हर्षिता स्वामी ने गाने के माध्यम से, ऋतु स्वामी ने कविता के माध्यम से, रेखा परमार, सीमा देवड़ा, सरिता शर्मा और मेराज ने नृत्य के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्त किया। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. सरोज राय, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारी लाल, डॉ. ममता सोनी, प्रमोद ओला, ललित कुमार एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया।

संकाय संवर्धन कार्यक्रम

पर्यावरण संरक्षण शिक्षा के हर स्तर पर अनिवार्य हो- डा. आभा

संस्थान के शिक्षा विभाग में संकाय संवर्धन कार्यक्रम के अन्तर्गत 'सतत विकास एवं शिक्षा' विषय पर डा. आभा सिंह द्वारा पत्र-वाचन किया गया। अपने पत्र वाचन में डा. आभा सिंह ने मनुष्य द्वारा अपने विकास की कीमत प्रकृति को नष्ट कर के चुकाए जाने पर प्रकाश डाला और बताया कि मनुष्य अपनी अप्राकृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये प्रकृति का अनावश्यक दोहन करता है और प्राकृतिक ससाधनों को समाप्त करने एवं उन्हें विकृत बनाने का भी प्रयास करता है, उन सबका दुष्परिणाम आने वाली पीढ़ियों को भुगतना पड़ेगा। इसी कारण यह जरूरी है कि समय रहते हम संभलें और शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य रूप से जोड़ कर आने वाली पीढियों को सतर्क करें और पर्यावरण की रक्षा के लिये तैयार करें। पत्र वाचन के विषय पर संकाय सदस्यों द्वारा विस्तार से चर्चा की गई। अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

छात्राध्यापिकाओं का प्रसार कार्यक्रम

संस्थान के शिक्षा विभाग द्वारा 13 फरवरी को बी.एड. छात्राध्यापिकाओं ने विमल विद्या विहार में जाकर प्रसार कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसके अंतर्गत छात्राध्यापिकाएं बच्चों के साथ घुली-मिली और अनेक गतिविधियां बच्चों के साथ की। छात्राध्यापिकों ने बच्चों को अभिप्रेरित किया। बच्चों ने नृत्य, कविता आदि के माध्यम से अपनी-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। डॉ. अमिता जैन एवं डॉ. आभा सिंह के निर्देशन में यह कार्यक्रम किया गया।

गणाधिपति तुलसी के 24वें महाप्रयाण दिवस पर ऑनलाइन संवाद कार्यक्रम

अणुव्रत अनुशास्ता गणाधिपति आचार्य तुलसी के 24वें महाप्रयाण दिवस पर संस्थान में 'आचार्यश्री तुलसी का समाज को अवदान' विषय पर 9 जून को ऑनलाईन संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बच्छाराज दूगड़ की प्रेरणा से आयोजित इस कार्यक्रम में देश भर के प्रखर वक्ता, विद्वान एवं शिक्षाविदों ने भाग लिया। कार्यक्रम में बुलंदशहर के श्यामलाल स्नातकोतर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अशोक कुमार शर्मा ने कहा कि आचार्य तुलसी ज्ञान, भाव एवं क्रिया तीनों को एक रेखा में प्रस्तुत करने वाले युगपुरूष थे। वे जीवन में उमंग, उत्साह एवं प्राण फूंकने वाले महापुरूष थे। वे सिद्धपुरूष थे, जिन्होंने अंतश्चेतना को विकसित किया। उनके जीवन के हर क्षेत्र शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि में किये गये विशिष्ट, अनूठे व अतुलनीय योगदान को हमेशा याद रखा जायेगा। ऐश्वर्य कॉलेज जोधपुर के एकेडमिक डीन प्रो. ए.के. मलिक ने कहा कि आचार्य तुलसी मूल्यों, जीवन की कला और युक्ति को सिखाने वाले प्रणेता थे। वे चरित्र निर्माण, नैतिकता, कर्तव्य पालन, अनुशासन व मानवता के पुरोधा थे। वे मानवता के मसीहा थे, जिनसे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद व पं. नेहरू जैसे राजनेता परामर्श लेते थे और देश की व्यवस्थाओं पर चिंतन प्राप्त करते थे। आचार्य तुलसी को किसी जाति, पंथ, धर्म, समप्रदाय से सम्बद्ध नहीं किया जा सकता है। उनके पदचिह्नों का अनुसरण सबको करना चाहिये।

श्रेष्ठ मानव निर्माण का सूत्रपात है अणुव्रत आंदोलन

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने अपने वक्तव्य में कहा कि नैतिक व राष्ट्रीय चरित्र निर्माण के लिये स्वतंत्रता के पश्चात अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया गया। इसमें आचार्य तुलसी ने समग्र गुणों वाला, श्रेष्ठ मानव बनाने के लिये पाथेय प्रदान किया। अणुव्रत में जीवनोपयोगी 11 सूत्रीय संहिता है। गुरूदेव तुलसी एक श्रेष्ठ कवि, गीतकार, लेखक व साहित्य-सृजक थे। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. बीएल जैन ने प्रारम्भ में अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया और संवाद कार्यक्रम और विषय-वस्तु के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि आचार्य तुलसी ने श्रम एव निष्ठा की प्रतिष्ठा की थी। उसे संस्कृति के प्राण के रूप में प्रतिष्ठित किया था। उन्होंने अणुव्रतों को मानवीय प्रामाणिकता के रूप में बताया था। कार्यक्रम में प्रसिद्ध शिक्षाविद प्रो. एमएल शर्मा चंडीगढ, प्रो. रमाकांत यादव आदि ने भी विचार व्यक्त किये। संचालन मोहन सियोल ने किया।

योग, प्राणायाम, सामाजिक सहभागिता से मिटाया जा सकता है मानसिक अवसाद- प्रो. जैन

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस मनाया

संस्थान के शिक्षा विभाग में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस का ऑनलाइन आयोजन 10 अक्टूबर को किया गया, जिसमें विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि आज वैश्विक महामारी कोरोना के कारण मानसिक रोगियों की संख्या दुगुनी हो गई है। मानसिक रोगी निरंतर बढ़ते जा रहे हैं, इसलिये इस दिवस पर आम नागरिकों को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति सावचेत किया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए हमें खुशी प्रदान करने वाली क्रियाओं के साथ गतिविधि करनी चाहिए- प्रतिदिन योग, प्राणायाम, आसन, ध्यान आदि यौगिक क्रियाओं को करना, नियमित दिनचर्या रखना, रचनात्मक कार्य करना, विषादी व्यवहार को नजरअंदाज करना, सामाजिक कौशल का विकास, सामाजिक सहभागिता निभाना, सामाजिक प्रभावशीलता का संवर्धन करना, दुःख-भरी प्रतिक्रियाओं को कम याद करना, महापुरुषों के प्रवचन एवं उनके वीडियो सुनना, सकारात्मक अभिवृत्ति रखना, अपने चिंतन को अभिलेखित करना, निंदा-आलोचना आदि कम से कम करना आदि उपायों को जीवन में अपनाना चाहिए।

कार्यक्रम में छात्रा दिव्या पारीक ने कोराना के कारण दोस्तों से नहीं मिलने देना, घर वालों द्वारा दिनभर डांटना-फटकारना, गुस्सा करना, दिनभर घर में रहना, काम में रुचि का कम होना आदि कारणों को मानसिक अस्वस्थता का कारण बताया। रितु स्वामी ने बताया कि हम शारीरिक बीमारी से ज्यादा मानसिक रूप से अस्वस्थ होते जा रहे हैं तथा हम छोटी-छोटी बातों पर ही तनाव में आ रहे हैं। अंबिका शर्मा ने कहा कि हमें मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए सदैव प्रसन्न चित्त, मुस्कुराते हुए एवं आनंद में जीवन व्यतीत करना चाहिए।

गूगल फॉर्म के माध्यम से शिक्षा के विविध पहलु बताये

आईसीटी प्रशिक्षण के लिये सात दिवसीय कार्यशाला

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 23 सितम्बर को सात दिवसीय आईसीटी प्रशिक्षण कार्यशाला का शुभारम्भ किया गया। कार्यशाला के प्रथम दिवस दीपक माथुर ने गूगल फॉर्म का प्रशिक्षण प्रदान करते हुए बताया कि कोविड-19 वैश्विक महामारी के समय विद्यार्थियों की परीक्षा कराने, उपस्थिति लेने, आंतरिक तथा बाह्य मूल्यांकन करने, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता कराने आदि में गूगल फार्म काफी उपयोगी रहा हैं। उसकी वर्तमान में भी आवश्यकता बनी हुई है। माथुर ने सभी संभागियों को गूगल फॉर्म की प्रक्रिया से रूबरू करवाया और प्रशिक्षण में गूगल फॉर्म पर नया फॉर्म क्रियेट करने, नये प्रश्न क्रियेट करने, आवश्यक सावधानियां रखी जाने आदि के बारे में बताया।

कार्यशाला में शिक्षकों को गूगल फार्म में काम करने की तकनीक और विधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। विषय विशेषज्ञ माथुर ने इस सम्बंध में गूगल फॉर्म के अंतर्गत प्रश्नोत्तरी तैयार करने, उसकी जांच करने, मूल्यांकन करने आदि के सभी पहलुओं के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने प्रश्नोत्तरी तैयार करने के लिये सैटिंग, जर्नल, प्रजेंटेशन तथा क्विज बारे में जानकारी प्रदान की। साथ ही प्रश्नोतरी होने के बाद उत्तर तथा अंकों को सेट किया जाने है, छात्रों के प्रत्युत्तर को एक्सल में ले जाकर उस प्रश्नोतरी से परिणाम तैयार किया जाने आदि का प्रशिक्षण विभाग के सभी संकाय सदस्यों को दिया।

सात दिवसीय आईसीटी कार्यशाला में दूर बैठी हुई छात्राओं की शैक्षिक गतिविधियों का सुचारू रूप से संचालन करने के लिये टेक्नोलोजी के इस्तेमाल के बारे में विशेषज्ञ माथुर ने सभी संभागियों को समझाया। साथ ही उन्होंने प्रश्नोतरी प्रतियोगिता व सामान्य ज्ञान के माध्यम से छात्राओं के अध्ययन का साप्ताहिक, मासिक व अर्द्धवार्षिक मूल्यांकन करने के बारे में जानकारी भी दी। छात्राओं से उनकी शैक्षिक गतिविधियों से सम्बंधित सूचनाओं के आधार पर उनकी विभिन रिपोर्ट्स के प्रवेश, परीक्षा व सम्बंधित विषय-अध्यापक के लिए उपयोगी बनने के तरीकों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। ऑनलाइन क्लासों में छात्राओं से उनकी उपस्थिति को गूगल फॉर्म के माध्यम से प्रत्येक दिन लेना व उसकी मासिक रिपोर्ट तैयार करने की भी जानकारी दी। अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने आभार ज्ञापित किया।

राष्ट्रीय स्तर के विद्वानों ने कहा, रेतीले गर्म क्षेत्रों में रहने वालों का इम्युनिटी पावर बहुत अधिक

कोविड-19 के दौरान तनाव-प्रबंधन पर राष्ट्रीय ई-सिम्पोजियम का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्वावधान में ''कोविड-19 के दौरान तनाव-प्रबंधन'' विषय पर 23 मई को एक दिवसीय ई-राष्ट्रीय सिम्पोजियम का आयोजन ऑनलाईन किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की प्रेरणा से आयोजित इस सिम्पोजियम में बुलंदशहर के शिकारपुर स्थित श्यामलाल पीजी कॉलेज के प्राचार्य प्रो. अशोक शर्मा एवं आगरा के एमबीएस कॉलेज के शिक्षा संकाय के प्रो. विनोद कुमार शर्मा मुख्य वक्ता रहे। प्रो. अशोक शर्मा ने अपने वक्तव्य में बताया कि कोविड-19 से आधे लोग तो बिना बीमारी, बिना क्वारंटाईन और बिना आइसोलेशन के ही तनावग्रस्त हो रहे हैं। वे टीवी, मोबाईल या रेडियो पर कोरोना संक्रमितों की संख्या देखते रहते हैं, लेकिन वे यह नहीं देखते-विचारते कि कितने लोग स्वस्थ्य होकर डिस्चार्ज भी हो रहे हैं। यह निराशावादी सोच मन में भय पैदा करती है और तनाव बढा रही हैं। इस देश के लोगों में इम्युनिटी पावर बहुत अधिक है, क्योंकि यहां के लोग मेहनती, पसीने में रहने वाले, गर्म पानी पीने वाले, रेतीले मैदान व मिट्टी में रहने वाले हैं। उन्होंने बताया कि हम बच्चों की किलकारी, चिड़ियों को दाना, पशुओं को चारा और गरीबों को भोजन बांटेंगे तो हमें तनाव नहीं हो सकता है। बनावटी हंसी के स्थान पर वास्तविक हंसी के वातावरण में जीने से तनाव कभी भी हमारे समीप नहीं आ सकता है। अनर्गल सोच, विचार व चिंता में रहने के कारण तनाव हावी हो जाता है और हम बेवजह ही परेशान, चिंताग्रस्त व तनावग्रस्त हो जाते हैं। अपनी नियमित दिनचर्या सही रखें, योग, प्राणायाम, ध्यान व आसनों के साथ-साथ पुस्तकों का स्वाध्याय करें। इससे तनाव व चिंता स्वतः ही खत्म हो जायेंगे।

स्वाध्याय व आत्मसंयम से तनावमुक्ति संभव

प्रो. विनोद कुमार शर्मा ने कहा कि कोरोना का रोना रोने से ही हम तनावग्रस्त हो रहे हैं। समय का सदुपयोग, स्वाध्याय, आत्मनियंत्रण, आत्म-साक्षात्कार से तनाव को दूर किया जा सकता है। छिद्रान्वेषण, नकारात्मक सोच, निष्क्रियता और निष्प्रयोजन वाले व्यक्ति में तनाव अधिक रहता है। विकृत विचारों से बचना होगा, तभी स्वस्थ और खुशहाल रह सकते हैं। प्रारम्भ में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने अतिथियों का स्वागत किया और बताया कि वैश्विक महामारी कोविड-19 महामारी के आगमन के बाद से ही दुःख, हानि, अशुभ, प्रतिकूल सोच तथा बुरे विचारों के अधिक प्रवाह से व्यक्ति में तनाव होना स्वाभाविक है। तनाव के कारण व्यक्ति का जीवन दुर्भर हो जाता है, जबकि जीवन में सुख-दुःख, लाभ-हानि, अच्छा-बुरा आदि चलता ही रहता है। हमें कोविड-19 की संकट की अवस्था को साहस, सहनशीलता, धैर्य, आत्मविश्वास के साथ योद्धा बन कर संघर्ष करना चाहिये, यही विजय का मंत्र है। इससे पूर्व डॉ. अमिता जैन ने कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि कोविड-19 की प्रतिकूल परिस्थितियों में तनाव पर विजय पाने के लिये विविध युक्तियों से अवगत करवाना और जीवन शैली को संयमित करके तनावमुक्त जीवन जीने के उपायों पर विचार करना ही कार्यक्रम का मुख्य ध्येय है। कार्यक्रम का संचालन मोहन सियोल ने किया।

इंटरनेट से डाउनलोड करने में कॉपीराइट कानूनों का पालन जरूरी- डॉ. सोनी

पांच दिवसीय ऑनलाईन एफडीपी कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञों के वक्तव्य प्रस्तुत

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत चल रहे ऑनलाईन पांच दिवसीय एफडीपी कार्यक्रम में श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय जामड़ोली के आईटी प्रभारी डॉ. उमेश सोनी ने कॉपीराइट कानूनों का पालन करना आवश्यक बताते हुये कहा कि हम इंटरनेट से विषय सामग्री, चित्र, वीडियो आदि डाउनलोड कर रहे हैं और उसका उपयोग अपने अध्ययन में करते हैं, लेकिन साथ ही यह जानकारी भी होनी आवश्यक है कि उक्त सामग्री कॉपीराइट के अधीन आती है या नहीं। उन्होंने कॉपीराइट सामग्री की पहचान और उसके उपयोग के लिये अनुमति प्राप्त करने के तरीके आदि के बारे में बताया तथा इस सम्बंध में जागरूक रहने की आवश्यकता बताई। उन्होंने यूट्यूब पर अपनी विषय सामग्री का प्रसारण कब और कहां करने की जानकारी भी दी। उन्होंने कॉपीराइट के सूक्ष्म प्रतीकों को ऑनलाईन प्रदर्शित किया और कॉपीराइट के विभिन्न नियमों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

शिक्षण में गूगल क्लासरूम की उपयोगिता

जैविभा विश्वविद्यालय के आईटी विशेषज्ञ मोहन सियोल ने गूगल क्लासरूम के अनुप्रयोग के बारे में बताया और ऑनलाईन क्लासरूम को प्रेक्टिकल रूप से प्रस्तुत किया। उन्होंने गूगल क्लासरूम एप को डाउनलोड करने से लेकर क्लासरूम बनाने, सेक्शन बनाने, उसमें असाइनमेंट देने, प्रश्न देने व उन सभी की जांच करने आदि के बारे में विस्तार से सरल भाषा में समझाया और गूगल क्लासरूम में विद्यार्थियों को विषय सामग्री शेयर करने, स्टडी मैटेरियल निर्मित करने, गूगल क्लासरूम में विषय सामग्री संरक्षित करने एवं उसमें सुधार व परिवर्तन करने आदि का विवरण प्रस्तुत किया। सियोल ने गूगल क्लासरूम में शिक्षण व शिक्षणेत्तर क्रियायें, पाठ्यसहगामी क्रियायें आदि में अनुप्रयोग करने की विधियां बताई तथा गूगल ड्राइव में फाईलें, नोट्स, असाइनमेंट संरक्षण आदि की जानकारी भी दी। साथ ही शॉर्ट यूआरएल, गूगल फॉर्म के क्विज, प्रश्नपत्र, मूल्यांकन आदि के बारे में भी बताया। उन्होंने आपदाओं, विपति के समय और महामारी के दौरान ऑनलाईन कक्षाओं को उपयोगी और सार्थक बताया। कार्यक्रम के संयोजक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने वक्ताओं का परिचय प्रस्तुत किया और पांच दिवसीय एफडीपी कार्यक्रम के विभिन्न विषयों और उपयोगिता के बारे में बताया। उन्होंने अंत में आभार ज्ञापित किया।

प्रसार भाषणमाला में पाठ योजना में सुधार के सुझाव

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 13 फरवरी को संचालित प्रसार भाषणमाला में प्रो. शिरीष वालिया ने अपना भाषण प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में प्रो. वालिया ने कहा कि पाठ योजना तैयार करने से पहले अपने विषय के अध्यापक से राय लें। इसमें कथन छोटा होना चाहिये तथा सार प्रश्न ही पूछे जाने चाहिये। विषय के आधार पर ही शिक्षक सहायक सामग्री का प्रयोग करें तथा शिक्षण बिन्दुओं के आधार पर करवाया जावे। शिक्षण सहायक सामग्री कक्षा स्तर के अनुरूप हों और वह ठीक प्रकार से दिखाई दे। बीएड के वार्षिक पाठ योजना तथा प्रशिक्षण काल में श्यामपट्ट कार्य महत्वपूर्ण है। शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग उचित समय पर करना ही प्रभावशाली है। पाठ योजना डायरी साफ व स्वच्छता से तैयार की जानी चाहिये। प्रो. शिरीष वालिया ने रोचक उदाहरणों के माध्यम से जीवन के व्यावहारिक पक्षों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। शिक्षा विभाग के समस्त संकाय सदस्य उपस्थित थे। अंत में डॉ. मनीष भटनागर ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सरोज राय ने किया।

ऑनलाईन क्लासेज में श्रेष्ठ प्रस्तुतिकरण के लिये सावधानियां जरूरी- शालिनी

पांच दिवसीय ऑनलाईन एफडीपी कार्यक्रम

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत चल रहे ऑनलाईन पांच दिवसीय एफडीपी कार्यक्रम में सुबोध पब्लिक स्कूल की आईटी विशेषज्ञ शालिनी जैन ने कहा कि ऑन लाईन क्लास में गुणवता, जागरूकता, सुरक्षा आदि का विशेष ध्यान रखना आवश्यक होता है। ऑनालाईन क्लासेज के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव पड़ते हैं। अनुशासन, निगरानी, प्रश्नोतर वीडियो, चित्र आदि से ऑनलाईन क्लास संचालित की जाती है, तो वह विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। इनमें सुरक्षा की दृष्टि से सावधानियों की जरूरत है, जिनमें क्लास लेने से पूर्व विद्यार्थी अपना आईकार्ड डाले, क्लास में पांच मिनट पूर्व प्रवेश दिया जावे और लेट आने पर प्रवेश नही दिया जावे, शेयर स्क्रीन का कार्य होस्ट करे, पार्टीसिपेंट विद्यार्थियों का स्क्रीन-शॉट लें, चैट का उपयोग क्लास के समय में केवल शिक्षक व विद्यार्थी ही करें, ऑनलाईन क्लास में शिक्षक व विद्यार्थी दोंनों ही वीडियो ऑन रखें, शिक्षक वीडियो ऑन करे फेस टू फेस क्लास की भांति हाव-भाव से पढायें तथा प्रत्येक क्लास से पूर्व योग या अन्य गतिविधि दो मिनट की अवश्य करवायें, ताकि छात्र का रूझान क्लास में बढ सके। शिक्षक तैयारी, तथ्य, व्यावहारिक व गुणवतापूर्ण तरीके से शिक्षण कार्य करवायें, ताकि क्लास के समय विद्यार्थी अपना मोबाईल चालू करके खाने-पीने, नहाने-धोने या इधर-उधर घूमने में समय व्यतीत नहीं करें। उन्होंने इस वेबिनार में फिल्मोरा सॉफ्टवेयर द्वारा गुणवतापूर्ण वीडियो बनाना, वीडियो का शीर्षक या टाईटल बनाना, वीडियो के रंगों का संयोजन, वीडियो में विषय सामग्री व चित्रों का प्रदर्शन व प्रस्तुतिकरण आदि की प्रभावी जानकारी रोचक ढंग से प्रदान की तथा श्रेष्ठ वीडियो निर्माण, ऑनलाईन क्लास, विविध मोबाईल एप्स आदि की जानकारी सचित्र रूप से ऑनलाईन प्रस्तुत की। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने प्रारम्भ में विषय प्रस्तोता का परिचय करवाया और अंत में आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मोहन सियोल व पंकज भटनागर ने किया।

मानवाधिकार दिवस मनाया

संस्थान के शिक्षा विभाग में 10 दिसम्बर को मानवाधिकार दिवस पर विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि 10 दिसंबर 1948 को मानव अधिकार की सार्वभौमिक घोषणा की गई थी। भारत की संस्कृति तो सदैव मानव अधिकारों के पक्ष में रही है। यहां सर्वे भवंतु सुखिनः और जियो और जीने दो आदि इसके उदाहरण है। हमारे देश में अधिकारों की अपेक्षा कर्तव्य पर महत्व दिया है। यदि कर्तव्य को निष्ठा, ईमानदारी, निःस्वार्थ भावना से करते हैं, तो दूसरों के अधिकार सुरक्षित हो जाते हैं। मानव अधिकार में मानव को स्वतंत्रता, समानता, शोषण, शिक्षा, धार्मिकता आदि के अधिकार दिए गए, उन्हें संरक्षण प्रदान करना है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. मनीष भटनागर ने कहा कि मानव अधिकार मानव जीवनयापन के लिए आवश्यक हैं। बी.एड. छात्रा खुशबू दर्जी ने कहा कि मानव अधिकार मानव को पीड़ित होने से बचाने के अधिकार हैं, इन्हें हमें निस्वार्थ भाव से पालन करना और अपने कर्तव्य का निर्वहन करना चाहिए। कार्यक्रम के अंत में डॉ. मनीष भटनागर ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक प्रेक्षाध्यानः लेश्याध्यान की समीक्षा

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत संचालित विविध गतिविधियों में पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम में 31 जनवरी को संस्थान के शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने आचार्य महाप्रज्ञ कृत पुस्तक ''प्रेक्षा ध्यान : लेश्याध्यान'' की समीक्षा प्रस्तुत करते हुये कहा कि महाप्रज्ञ इस पुस्तक में कहते हैं कि व्यक्ति में अच्छी व बुरी प्रवृतियों का कारण उसकी लेश्यायें होती हैं। लेश्या के चेतना स्तर पर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का रूपांतरण कर सकता है। मनुष्य में वृतियों, भाव या आदतों को उत्पन्न करने वाला सशक्त तंत्र लेश्यातंत्र है। इनमें रंगों के व्यक्तित्व पर प्रभाव को चित्रित किया गया है और बताया गया है कि रंगों का साम्राज्य अखंड है और इनका प्रभाव हमारे कर्म-शरीर पर भी पड़ता है। महाप्रज्ञ ने वर्णित किया है कि बुरी आदतों को उत्पन्न करने वाली तीन लेश्यायें होती हैं- कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या। इन तीन लेश्याओं से क्रूरता, हत्या, कपट, असत्य, प्रवंचन, धोखाधड़ी, विषय-लोलुपता, प्रमाद, आलस्य आदि बुराइयां पैदा होती हैं। इन लेश्याओं के संवादी स्थान अधिवृक्क ग्रंथियां और जनन ग्रंथियां होती हैं। ये अप्रशस्त लेश्यायें हैं। प्रशस्त लेश्यायें भी तीन हैं। इनमें तेजो लेश्या का वर्ण लाल, पद्म लेश्या का वर्ण पीला और शुक्ल लेश्या का वर्ण सफेद होता है। ये तीनों अच्छी आदतें उत्पन्न करती हैं। जब इन लेश्याओं के स्पंदन जागते हैं, तब व्यक्ति के भाव निर्मल हो जाते हैं और अभय, मैत्री, शांति, क्षमा आदि पवित्र भावों का निर्माण होता है। लेश्याओं के कारण जब व्यक्ति की अच्छी प्रवृति होती है तो अच्छा चिंतन, अच्छा भाव और अच्छा कार्य होता है, जबकि बुरी प्रवृति के समय व्यक्ति बुरा चिंतन, बुरा भाव और बुरा कार्य करने लगता है। प्रो. जैन ने बताया कि इस पुस्तक में महाप्रज्ञ ने पांच अध्यायों में अपनी बात को प्रकट किया है, जिनमें प्रथम अध्याय में लेश्या ध्यान-आध्यात्मिक आधार, द्वितीय अध्याय में लेश्या विज्ञान- वैज्ञानिक आधार, तृतीय में लेश्या ध्यान- ध्यान क्यों, चतुर्थ अध्याय में लेश्या ध्यान विधि तथा पंचम अध्याय में लेश्या ध्यान निष्पति का वर्णन किया गया है।

'जैन विद्या और विज्ञान पुस्तक पर समीक्षा

संस्थान शिक्षा विभाग में समीक्षा कार्यक्रम में 29 फरवरी को आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य से सम्बद्ध पुस्तक ''जैन विद्या और विज्ञान'' की समीक्षा भौतिक विज्ञान की सहायक आचार्या राजश्री शर्मा ने प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि प्रसिद्ध लेखक डा. महावीर राम गेलड़ा की इस कृति में जैन दर्शन का चिन्तन अध्यात्म या धर्म तत्वों तक ही सीमित नही रखा गया है, बल्कि आधुनिक विज्ञान के विषयों- भौतिकी, जैविकी, परमाणु विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, स्वास्थ्य विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के साथ प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में लेखक ने जैन विद्या और विज्ञान पर तीन भागों में चर्चा की है, जिनमें प्रकृति का दर्शन, विज्ञान का दर्शन और विज्ञान का समाज शास्त्र शामिल हैं। जैन दर्शन का भारहीनता का सिद्धांत आइंस्टीन के गुरूत्वाकर्षण सिद्धांत के समतुल्य है, लेकिन उसे पर्याप्त प्रचार नहीं मिल पाया। इसी प्रकार प्रकृति के गतिशीलता के सिद्धांत के अनुसार जैन आगम साहित्य में गति सम्बंधी अनेक प्रकरण अंकित हैं और आचार्य महाप्रज्ञ ने भी इसका रोचक विवरण प्रस्तुत किया था। पुस्तक में दिये गये वर्णन में ब्लेक होल, परमाणु की गति, आकाश के तीन आयाम, घनत्व, गुरूत्वाकर्षण, बिग-बैग, ताप, विज्ञान जगत में ईथर तत्व की अमान्यता, जैन गणित, गणित के दस प्रकार आदि विषयों पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया गया है। समीक्षा के अंत में डा. गिरधारीलाल शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर डा. मनीष भटनागर, डा. आभा सिंह, डा. गिरीराज भोजक, रवि प्रकाश, स्वाति खटेड़ आदि उपस्थित रहे।

सत्य की खोज पुस्तक पर समीक्षा

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर यहां संस्थान में उनकी पुस्तक सत्य की खोज अनेकांत में की समीक्षा डा. आभासिंह द्वारा प्रस्तुत की गई। डा. सिंह ने अपनी समीक्षा में बताया कि सत्य की खोज जीवन के अस्तित्व के रहस्यों की खोज है। आचार्य महाप्रज्ञ ने इसमें कहा है कि मानव चेतना के विकास की अनेक पीढियां इसे तय करने में लगी रहती है। जागरण की लम्बी श्रृंखला मनुष्य के भीतर प्रतीक्षारत रहती है, इसके बाद ही सत्य की उपलब्धि संभव हो पाती है; तब ही अस्तित्व की पहचान व जगत के रहस्यों का प्रकटन संभव होता है। डा. सिंह ने बताया कि यह पुस्तक 13 अध्यायों में विभक्त है, जिनमें भगवान महावीर के जीवन और सिद्धांत से लेकर व्यक्ति और समाज, कर्म से आजीविका, मनुष्य की स्वतंत्रता का मूल्य आदि विषयों को अध्यात्मवाद के साथ-साथ अर्थशास्त्र और राजनीति के परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट किया है। डा. सिंह ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ आध्यात्मिक व्यक्तित्व थे, लेकिन अपनी इस कृति में उन्होंने अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण को मुखरित किया है। उनकी अर्थशास्त्र व राजनीति शास्त्र पर भी गहरी पकड़ रही है। उन्होंने कर्मवाद, आत्मा, परमात्मा, प्रत्ययवाद और वस्तुवाद, परिणामी, नित्य तत्ववाद जैसे विषयों को भारतीय दर्शनों के साथ जैन दर्शन की तुलनात्मक व्याख्या के रूप में स्पष्ट किया है। इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें अनेकांतवाद के वैशिष्ट्य को रोचकता से प्रस्तुत किया गया है।

ऑनलाईन पढ़ाई से छात्राध्यापिकायें प्रसन्न व उत्साहित

खुद तैयार कर रही हैं विभिन्न वीडियो व प्रजेंटेशन

शिक्षा विभाग में ऑनलाईन पढाई के अन्तर्गत एम.एड., बीएससी-बीएड, बीए-बीएड की ऑनलाईन क्लासें विविध ऑनलाईन एप्प पर करवाई जा रही है। विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने बताया कि जूम, फेसबुक लाईव, व्हाट्सअप आदि एप्प पर विद्यार्थियों से शिक्षकगण सीधा सम्पर्क करके निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार व्याख्यानों का लाईव प्रसारण करते हैं। उन्होंने बताया कि कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशों से शुरू की गई ऑनलाईन पढाई से समस्त छात्राध्यापिकायें प्रसन्न हैं एवं उत्साहित हैं और वे रूचिपूर्वक अपनी ऑनलाईन कक्षाओं को ज्वाइन कर रही हैं। कुलपति हमेशा नवाचार का प्रयोग शिक्षण कार्य में करवाने के लिये प्रेरित करते रहते हैं। प्रो. जैन के अनुसार ऑनलाईन कक्षाओं के साथ ही छात्राओं ने स्वयं ही एनसीएफ 2005, पाठ्य निर्माण के सिद्धांत, ज्ञान के स्रोत आदि पर वीडियो तैयार किये हैं और ऑनलाईन कक्षाओं के दौरान अपना प्रजेंटेशन भी ऑनलाईन दे रही हैं। इनके अलावा बीएससी-बीएड एवं बीए-बीएड की तृतीय वर्ष की छात्राओं एकता जोशी, सरिता चौधरी, पूर्णिमा चौधरी, अमृता शेखावत, अंजलि शर्मा आदि ने कोविड-19 के सम्बंध में विविध संदेश भी तैयार किये हैं, जिन्हें जन-जन तक पहुंचाया जा रहा है। एकता जोशी ने पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांत विषय पर अपना असाईनमेंट तैयार किया है। उन्होंने बताया कि यूजीसी के निर्देशों के अनुसार ऑनलाईन स्रोतों का उपयोग शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों ही कर रहे हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ कृत 'जो सहता है वहीं रहता है' पुस्तक की समीक्षा

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर संस्थान के शिक्षा विभाग में 17 फरवरी को आयोजित ग्रंथ समीक्षा संगोष्ठी में स्वाति शर्मा ने आचार्य महाप्रज्ञ की कृति ''जो सहता है, वही रहता है'' की समीक्षा प्रस्तुत की। स्वाति ने बताया कि महाप्रज्ञ ने अपनी इस पुस्तक में बताया है कि व्यक्ति हमेशा समूह में निवास करता है और समूह में उसे अनेक व्यक्तियों के बीच रहना पड़ता है, उनके साथ जीना पड़ता है। ऐसे में उसे सबको सहन करने की आवश्यकता रहती है। चाहे प्राकृतिक वातावरण हो या सामाजिक माहौल, परिवार की मर्यादायें हों अथवा शासन के बंधन, व्यक्ति को सबको सहन करने की आदत का विकास करना होता है। तूफान के समय छोटे-छोटे पौधे झुक जाते हैं, तो वे अपना बचाव कर लेते हैं, लेकिन जो पेड़ खड़े होकर तने रहते हैं, उन्हें उखड़ना पड़ता है। वर्तमान में पारिवारिक इकाइयां छोटी होती जा रही है, संयुक्त परिवारों से एकल परिवार बन रहे हैं, यह सब सहनशीलता के अभाव का परिणाम है। सहनशीलता का गुण व्यक्ति को मजबूत बनाता है, लेकिन आज का युवा उसे कायरता मान लेता है। जबकि कायरता और सहनशीलता बिलकुल विपरीत होते हैं। अगर कोई अपने आपको कहीं पर स्थापित करना चाहता है, तो उसमें सहनशक्ति का होना बहत जरूरी है और सहन तो वहीं कर सकता है जो अपने आप में शक्तिशाली होता है। स्वाति ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ ने बहुत ही रोचक भाषा में सटीक उदाहरणों का प्रयोग करते हुये 'जो सहता है, वहीं रहता है' पुस्तक की रचना की है। उन्होंने जीवन में परिवर्तन, समता की दृष्टि, व्यक्तित्व के विविध रूप, अपना आलंबन स्वयं बनें, प्रकृति एवं विकृति, दिशा और दशा, सापेक्ष सत्य, बुद्धि और अभय, न डरें और न डरायें आदि बिन्दुओं में अपने कृत्य को तथात्मक ढंग से वर्णित किया है, जिसमें वैचारिक आश्चर्य है, धरातल की सच्चाई है और समुचित मार्गदर्शन व्याप्त है। इससे यह पुस्तक दिशा दिखाने वाली श्रेष्ठ कृति है। कार्यक्रम में डॉ. अमिता जैन ने अंत में आभार ज्ञापित किया।

मित्रता का पर्व है होली

संस्थान के शिक्षा विभाग में होली महोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि चार पर्व हमारे सबसे अधिक खुशी प्रदान करने के है - दीपावली, होली, रक्षाबंधन और तीज। इनमें होली भाईचारा, प्रेम, सौहार्द बढ़ाने का पर्व है। होली पर सामूहिक चंग गीत, भजन आदि गाते है। यह ऐसा पर्व है जो मन में जितने भी विकार है, उन्हें जला दिया जाता है। आज थोड़ा भी लोगों में यदि स्नेह, प्रेम है तो भारत के पर्वों के कारण है। हम भौतिकता व वैज्ञानिकता में इतने डूब गये कि अपने आपको विस्मृत कर दिया। इन पर्वों के आने पर अनेक तनाव, संघर्ष, द्वन्द खत्म हो जाते हैं। शत्रुओं को भी मित्र बना देता है यह पर्व। छात्रा रेखा शेखावत एवं साक्षी गुर्जर ने कहा कि चंग, मृदंग, ढपली आदि वाद्य यंत्रों को साथ हम इस पर्व को मनाते हैं। यह पर्व के आने पर हमें बेहद खुशी होती है। रंगों के साथ यह पर्व हमें प्रेम, सहयोग, सहनशीलता, परस्परता आदि का भाव भी बढ़ाता है। कार्यक्रम के समस्त संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

अनुंसधान को पुस्तकालय की शोभा के बजाय जनोपयोगी बनाया जावे

शोध की विधियों पर दो दिवसीय ऑनलाईन राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की प्रेरणा से आयोजित दो दिवसीय ऑनलाईन राष्ट्रीय कार्यशाला (21-22 जून, 2020) में मुख्य वक्ता जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के निर्वतमान विभागाध्यक्ष प्रो. गोपीनाथ शर्मा ने कहा कि अनुसंधान कार्य में शोध की गुणवता, मौलिकता, नवीनता एवं ईमानदारी की ओर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। उन्होंने शोध की दार्शनिक क्रियाविधि पर प्रकाश डालते हुये तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा व मूल्य मीमांसा के बारे में बताया। शिक्षा व मूल्यों के अन्तर्सम्बंध के बारे में उन्होंने कहा कि ये मानवीय गुणों का संवर्द्धन करने वाले तत्त्व हैं, इन्हें अलग-अलग नहीं किया जाकर एक ही मानना चाहिये। उन्होंने पुस्तकालय में रखे जाने वाले अनुसंधान नहीं, बल्कि स्थानीय स्तर से लेकर विश्व स्तर तक उपयोग अनुसंधानों की आवश्यकता बताई। राजस्थान विश्वविद्यालय के एक्स डीन प्रो. एम पारीक ने अपने सम्बोधन में अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि की व्याख्या प्रस्तुत की और समस्या का चयन, उद्देश्य, परिकल्पना, उपकरण निर्माण, चर, न्यादर्श, सांख्यिकी आदि के बारे में बताते हुये सर्वेक्षण विधि में गुणवत्ता और ईमानदारी आवश्यक बताये। दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय गोरखपुर के प्रो. उदयसिंह ने गुणात्मक और परिणामात्मक दो प्रकार शोध के बताये और शोध की प्रकृति के अनुसार शोध की विधि अपनाने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि हमें शोध को पुस्तकालयों की शोभा से बाहर लाकर जनोपयोगी व जन समस्या निवारक बनाना चाहिये। ऐश्वर्य कॉलेज आफ एकेडमिक जोधपुर के डीन प्रो. ए.के. मलिक ने अनुसंधान की वैज्ञानिक क्रियाविधि के विभिन्न चरणों को सटीक और सोदाहरण बताया। कार्यक्रम के संयोजक, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि तार्किक विश्लेषण विधि द्वारा ही शोध में अच्छे परिणाम लाये जा सकते हैं, लेकिन तर्क का स्थान बहस को नहीं लेना चाहिये, क्योंकि तर्क से ज्ञान का विकास होता है, लेकिन बहस से विवाद और विघटन पैदा होता है। अंत में डॉ. मनीष भटनागर ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन व तकनीकी सहयोग मोहन सियोल ने किया।

नई शिक्षा नीति का सफल क्रियान्वयन देश को नई दिशा देने में सक्षम

संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम में व्याख्यान का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 19 दिसम्बर को संचालित 'संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम' में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 : तथ्य और चुनौतियां' विषय पर डॉ. गिरधारीलाल शर्मा ने अपने व्याख्यान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों के बारे में चर्चा करते हुये स्कूल शिक्षा, उच्च शिक्षा तथा शिक्षक शिक्षा के बारे में सुधारों की व्याख्या की। उन्होने बताया कि स्कूल शिक्षा में 5 : 3 : 3 : 4 पैटर्न, कक्षा 6 से ही व्यावसायिक शिक्षा का प्रारम्भ, कक्षा 5 तक अनिवार्य मातृभाषा में शिक्षा, शिक्षक शिक्षा में 2030 तक चार वर्षीय एकीकृत बीएड को ही मान्यता, शिक्षक पात्रता परीक्षा में बदलाव, शिक्षक भर्ती में डेमो व साक्षात्कार की अनिवार्यता आदि सुधार प्रमुख हैं, जिन्हें लागू करने में अनेक चुनौतियां हैं। इनमें राज्य सरकारों का सहयोग, वित्तीय व्यवस्था, मानवीय संसाधनों की आपूर्ति, भाषा सम्बंधी चुनौतियां प्रमुख हैं, जिनका सामना सबके सहयोग से ही किया जा सकता है। यह नई शिक्षा प्रणाली 'रीड टू लर्न' के स्थान पर 'लर्न टू रीड' पर जोर देती है। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने इस अवसर पर कहा कि नई शिक्षा नीति के प्रावधान शिक्षा के विभिन्न आयामों को नई दिशा देने वाले हैं। अगर इनका क्रियान्वयन सफल तरीके से होता है, तो यह नई प्रणाली भारत को विश्व के अग्रणी देशों में समकक्ष ले जाएगी। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरीराज भोजक, डॉ. ममता सोनी, ललित गौड़ आदि शिक्षा संकाय के सदस्य उपस्थित रहे।

एकता के सूत्र में बांधने वाले थे सरदार वल्लभ भाई पटेल

लौहपुरूष के जन्मदिन पर एकता दौड़ व शपथ ग्रहण आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में राष्ट्रीय एकता दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी एवं शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में एकता दौड़ एवं शपथ ग्रहण का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रो. बीएल जैन ने कहा कि भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल देश की एकता, अखंडता के सूत्रधार रूप में आज भी लौहपुरुष माना जाता है। वे स्वाभिमान, कर्त्तव्य परायण, अध्ययनशील, देश सेवा के भाव, किसान हितैषी, स्वतंत्रता के महान सेनानी, देशी रियासतों का वर्गीकरण करने वाले गुणों से पूरित थे। एकता दौड़ कार्यक्रम में डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज राय, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. ममता सोनी, प्रमोद ओला, ललित, अभिषेक चारण, डॉ. जे.पी. सिंह, श्वेता खटेड, बलबीर, शेरसिंह, अभिषेक शर्मा, प्रगति चोरडिया, डॉ. रविन्द्र राठौड, डॉ. विकास शर्मा, दीपाराम खोजा, प्रकाश गिरिया, घासीलाल शर्मा आदि संस्थान के सदस्य उपस्थित रहे।

योग से व्यक्ति के तनाव व मनोदैहिक रोगों का उपचार संभव- डॉ. राय

संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम में व्याख्यान का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम के डा. सरोज राय ने 'तनाव प्रबंधन में योग शिक्षा की भूमिका' विषय पर अपना व्याख्यान 28 नवम्बर को प्रस्तुत किया। डा. राय ने बताया कि वर्तमान युग में लोगों के लिये तनाव सामान्य अनुभव बन चुका है, ऐसे में तनाव सम्बंधी रोगों को रोकने के लिये योग शिक्षा पूरी तरह से सफल सिद्ध हो रही है। योग एक जीवन पद्धति है, जिसका तनाव और स्वास्थ्य के प्रति सदैव समग्र दृष्टिकोण रहा है। इसमें मन, शरीर व आत्मा तीनों का उपचार सम्मिलित है। उन्होंने कहा कि जीवन की बदलती दिनचर्या और जीवन की भूमिकाओं के बीच मनुष्य अनेक मनोदैहिक विकारों के बीच सिमटता चला जा रहा है। इसके लिये उसके अस्तित्व से जुड़ी समस्याओं को सुलझाने में समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इसलिये तनाव प्रबंधन में पारम्परिक योग शारीरिक गतिशीलता को सक्रिय बनाए रखने के लिये नियंत्रण, संतुलन स्थापित करने के लिये उपचार की आवश्यकता है। संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किये एवं आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर डा. मनीष भटनागर, डा. भाबाग्रही प्रधान, डा. विष्णु कुमार, डा. आभा सिंह, डा. गिरीराज भोजक, डा. अमिता जैन आदि संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

तेजी से बढते मनोरोगों के प्रति जागरूकता जरूरी- डा. अमिता जैन

संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम में व्याख्यान का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में ''संकाय संवर्धन कार्यक्रम'' के अंतर्गत ''वर्तमान में मानसिक रोगों के लक्षण, कारण तथा उपाय'' विषय पर डॉ. अमिता जैन ने 5 दिसम्बर को अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मानसिक रोगों की बढ़ती संख्या ने व्यक्ति, समाज व देश को प्रभावित किया है। मानसिक रोगों की संख्या वैश्विक महामारी कोविड-19 के बाद तेजी से फैली है। व्यक्ति में भय, तनाव, अनिद्रा आदि के कारण यह रोग तेजी से बढ़ा है। इच्छाएं, आकांक्षा और आवश्यकताओं की पूर्ति के अभाव के कारण मनोरोग ग्रस्तता बढ़ी है और उनमें विविध बीमारियां बढ़ी हैं। यह आवश्यक हो गया है कि मानसिक रोगों के प्रति लोगों को जागरूक किया जावे। डा. जैन ने इस विषय पर गहन चिंतन तथा मनन की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि स्वस्थ व्यक्तियों से ही देश का विकास संभव है। बीमारु देशों ने कभी भी अपना विकास नही किया है। इस अवसर पर शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि अवकाश के समय का सदुपयोग, रचनात्मक कार्य एवं सकारात्मक सोच आदि से मानसिक रोगों से बचा जा सकता है। कार्यक्रम के अंतर्गत डॉ. सरोज राय, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारीलाल, डॉ. ममता सोनी, प्रमोद ओला, ललित कुमार आदि उपस्थित रहे।

हिन्दी का विपुल साहित्य हमें आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम- प्रो. शर्मा

हिंदी की वर्तमान में प्रासंगिकता पर राष्ट्रीय संवाद कार्यक्रम आयोजित

हिन्दी दिवस के अवसर पर एक राष्ट्रीय संवाद कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्वावधान में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के पूर्व डीन एवं शिक्षाशास्त्री प्रो. गोपीनाथ शर्मा ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में हिंदी को महत्त्व दिया हैं। उन्होंने हिंदी दिवस मनाने का औचित्य, प्रासंगिकता एवं अवदान पर भी प्रकाश डाला और कहा कि हिंदी का साहित्य विपुल है, हम हिंदी भाषा से भारत को आत्मनिर्भर बना सकते हैं। यह भाषा चिन्तन, सोच, रचनात्मकता विकसित करती हैं।

केशव विद्यापीठ जामडोली जयपुर के श्रीअग्रेसन स्नात्तकोतर शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालय सी.टी.ई की प्रो. रीटा शर्मा ने कहा कि आजकल हिंदी व अंग्रेजी का मिश्रित रूप प्रचलन में आ गया हैं। हिंदी दिवस की प्रासंगिकता को विविध कार्यक्रमों जैसे वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, शब्दकोश का संवर्धन, हिंदी की मानक शब्दावली का प्रयोग, कविता लेखन, वर्तनी आदि से बढ़ाना होगा। भारत को आत्मनिर्भर बनाने में हिंदी भाषा ही समर्थ होगी। हमें राजकीय, प्रशासकीय, तकनीकी, विज्ञान, संगणक आदि में इस भाषा का प्रयोग बढ़ाना होगा।

छात्रा सुमन चौधरी एवं हृषिता स्वामी ने हिंदी को सामाजिक जन-जीवन, व्यवहार एवं व्यापार में प्रयोग की जाने वाली भाषा कहा। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. बी.एल. जैन ने विशेषज्ञ का परिचय कराते हुए कहा, हिंदी ही समृद्ध, सशक्त और गौरव प्रदान करने वाली भाषा है। अंत में आभार ज्ञापन डॉ. सरोज राय ने किया। तकनीकी कार्य मोहन सियोल ने किया।

सजीव व प्राणवंत शिक्षा के लिए सोचने, विचारने और खोजने की जरूरत- प्रो. जैन

संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम में व्याख्यान का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में संकाय संवर्धन कार्यक्रम के अंतर्गत 'शिक्षा में सोचने, विचारने और खोजने पर बल' विषय पर व्याख्यान का आयोजन 22 दिसम्बर को किया गया। इसमें विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी को जीवन की कला सिखाने का प्रयास करना चाहिए। व्यक्तित्व निर्माण के साथ व्यक्तित्व के गुणों का विकास करने की आवश्यकता है। किताबें कम तथा शोधपत्र अधिक लिखे जाने चाहिए। शोधपत्र लिखने में समय कम लगता है, जिससे कि हम नई क्रियाओं को विद्यार्थियों को बता सकते हैं। किताब लिखने में एक या दो साल का समय लगता है। तब तक हमारा ज्ञान पुराना हो जाता है और वे किताबें उतनी उपयोगी नहीं रह पाती हैं। इसलिए विद्यार्थी को शिक्षक नए-नए शोध कार्य लिखाने एवं नवीन विषयों समझाने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा में समय के साथ बदलाव और नवीन संसाधनों के प्रयोग उसी समय लागू किये जाने चाहिये। उन्हें समयान्तर से अपनाने से उपयोगिता का असर कम हो जाता है। मानसिक विकास के लिए आवश्यक नहीं है कि बंद पुस्तक की शिक्षा ही उसे दी जाए, उसे खुले विचारों की शिक्षा देने का प्रयास करना चाहिए। शिक्षा को सजीव, सक्रिय व प्राणवंत बनाने का प्रयास शिक्षक को सोचने, विचारने और खोजने से करना चाहिए। कार्यक्रम में शिक्षा संकाय के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. बी. प्रधान, डॉ विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज राय, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारी लाल, डॉ. ममता सोनी, सुश्री प्रमोद ओला, ललित कुमार उपस्थित रहे।

शिक्षा नीति के प्रतिबिम्ब विषय पर वेबिनार हुई

संस्थान में ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 पर प्रतिबिम्ब'' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में हुए इस वेबिनार में मुख्य वक्ता एनसीईआरटी नई दिल्ली के प्रो. बी.पी. भारद्वाज ने कहा कि नई शिक्षा नीति-2020 में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बालकों की अवस्था एवं मनोवैज्ञानिक पक्षों, बहुविषय और समग्र शिक्षा, हुनर की पहचान और विकास, अवधारणात्मक समझ पर बल, 4 वर्षीय एकीकृत बी.एड. डिग्री, बहु-आयामी शिक्षक आदि शिक्षा के कमजोर पक्षों को मजबूत बनाने में सार्थक सिद्ध होगी और भारतीय संस्कृति, संस्कार, सोच, भारतीय भाषा एवं मातृभाषा का समावेश शिक्षा को सुदृढ़ एवं सशक्त बनाने में समर्थ होगा। श्री श्यामलाल पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज शिकारपुर बुलंदशहर के विभागाध्यक्ष प्रो. अशोक कुमार शर्मा ने कहा कि प्राचीन मूल्यों का संरक्षण, चिंतारहित एवं चिन्तन युक्त शिक्षा, आनन्दप्रद शिक्षा, रोजगारपरक शिक्षा देश को समर्थ एवं आत्मनिर्भर बनाने में नई शिक्षा नीति सक्षम रहेगी। उन्होंने कहा कि शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण, भारतीय संस्कृति व संस्कार को अधिक समपुष्टता प्रदान की जाए तो भारत की शिक्षा विश्व में सर्वोतम होगी। राजस्थान विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान एवं शिक्षा विभाग के निवर्तमान विभागाध्यक्ष प्रो. अवनत वीरसिंह मदनावत ने कहा कि शिक्षा की समस्या के समाधान, मूल्यों की गिरावट को रोकने, रचनात्मक और तार्किक सोच विकसित करने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 सार्थक होगी, लेकिन भौतिक और मानवीय संसाधनों को मजबूत किए बिना यह नीति कारगर होने में सन्देह होगा।

महिला सप्ताह के तहत विविध कार्यक्रमों की श्रृंखला

महिलाओं को सामाजिक पाबंदियों से मुक्त करना होगा

महिलाओं के विकास से सम्बंधित विचार गोष्ठी एवं प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित

''महिलाओं के विकास में सरकार को क्या करना चाहिये'' इस विषय पर संस्थान में चल रहे सात दिवसीय कार्यक्रम में 5 मार्च को विचार-गोष्ठी एवं प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में रेखा शेखावत ने बताया कि महिलाओं को अपनी रक्षा स्वयं करने के लिये तैयार होना होगा तथा आत्मरक्षा के उपायों को सीख कर किसी भी परिस्थिति से मुकाबले में सक्षम बनना होगा। महिलाओं को आगे आने से रोकने के प्रयास और महिलाओं को पाबंदियों में बांधने सम्बंधी अपनी व्यवस्थाओं पर समाज को पुनर्विचार करना होगा तथा महिलाओं की स्वतंत्रता की रक्षा करनी होगी। मनीषा पंवार ने निर्भया कांड का उदाहरण प्रस्तुत करते हुये कहा कि महिलाओं के साथ हुये अन्याय पर सुनवाई जल्दी किये जाने के लिये कानून में बदलाव की जरूरत है। पूनम चारण ने अपने विचारों में कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं के विकास की ओर सरकार को पूरा ध्यान देना चाहिये। उनकी समस्याओं के प्रति जागरूकता बरतते हुये उनके लिये विशेष योजनायें बनाई जानी चाहिये। दीक्षा चौधरी ने कहा कि समाज में महिलाओं को बराबरी का दर्जा दिये जाने की सोच विकसित करने की जरूरत है। बालिका शिक्षा को शत-प्रतिशत बनाया जाकर ऐसा किया जा सकता है। लड़कियों को आगे बढाने एवं उन्हें शिक्षा के साथ विभिन्न प्रतियोगी क्षेत्रों में आगे बढाने के लिये हौसला अफजाई करने की ओर ध्यान दिया जाना चाहिये।

कार्यक्रम में भावना ने एक गीतिका के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने किया और उन्होंने इस सम्बंध में पूछे गये प्रश्नों के जवाब देकर छात्राध्यापिकाओं की जिज्ञासायें शांत की।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में राजस्थानी व फाल्गुनी नृत्य-गीत ने धूम मचाई

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत चल रहे महिला सप्ताह के छठे दिन विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में एकल नृत्य, सामुहिक नृत्य, एकल गीत, समूह गीत, भजन आदि की प्रस्तुतियां छात्राध्यापिकाओं ने दी और कार्यक्रम में बढ-चढ कर हिस्सा लिया। कमलेश व समूह, प्रियंका एवं समूह, प्रमिला व समूह, दमयंती व समूह, राजन व समूह आदि ने इस अवसर पर विभिन्न राजस्थानी गीतों के साथ होली के रंग में डूबे चंग और गीतों का प्रस्तुतिकरण किया, जिनसे राजस्थानी संस्कृति जीवन्त हो गई। इन्हें सभी ने जमकर सराहा। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने अपने सम्बोधन में कहा कि महिलायें केवल अपना घर ही नहीं संवारती, बल्कि संस्कृति की संवाहक, संरक्षक, संवर्द्धक के रूप में भी अपनी भूमिका निभाती है। महिलायें जहां भी जाती हैं, अपनी परम्परा और सांस्कृतिक विशेषताओं को भी ले जाती है और इस प्रकार वे संस्कृति की रक्षक ही नहीं बल्कि उसके संवहन का दायित्व भी स्वप्रेरणा से वहन करती हैं। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरीराज भोजक, डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज राय, डॉ. आभासिंह, डॉ. ममता सोनी, स्वाति शर्मा, रवि शर्मा आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. गिरधारीलाल शर्मा ने किया।

निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

महिला सप्ताह के तहत महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। महिला के विकास में स्वास्थ्य शिक्षा की भूमिका विषय पर आयोजित इस निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर स्मृति कुमारी, द्वितीय रेखा परमार और तृतीय स्थान पर चन्द्रकांता रही।

सभी विजेताओं को पुरस्कार के रूप में पुस्तकें प्रदान की गई। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने महिला स्वास्थ्य के बारे में बताया तथा कोरोना वायरस के लक्षणों, उससे बचने के उपाय आदि के बारे में बताया।

रैगिंग अपराध निषेध सेमीनार का आयोजन

संस्थान में रैगिंग अपराध निषेध सेमिनार का आयोजन 14 दिसम्बर को किया गया। यह कार्यक्रम एंटी रैगिंग सेल व एंटी स्काउट सेल के अध्यक्ष व संस्थान के कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ के नेतृत्व में आयोज्य हुआ। एंटी रैगिंग सेल कार्यक्रम के संयोजक प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि उच्च शिक्षा संस्थान में रैगिंग अपराध निषेध विनियम रैगिंग में नवीन प्रवेशार्थी या अन्य विद्यार्थियों से रंग, प्रजाति, धर्म, जाति, जातिमूल, लिंग, भाषा, जन्म, निवास स्थान या आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर शारीरिक या मानसिक प्रताड़ना का कृत्य रैगिंग अपराध है। रैगिंग में आपराधिक षड्यंत्र, शालीनता और नैतिकता भंग, चोट पहुंचाना, प्रहार करना, धमकी देना, अपमानित करना, बलात् ग्रहण करना, दुर्व्यवहार करना, अनुशासनहीनता का वातावरण बनाना, भय का वातावरण उत्पन्न करना, आर्थिक शोषण करना, नंगा करना, अश्लील हरकत करना, गाली देना आदि आता है। इसके लिए किसी के दोषी पाये जाने पर संस्थान की कमेटी प्रशासनिक कार्रवाई करते हुए संसथान से निष्कासित कर सकती है और कानूनी कार्रवाई कर सकती है। एंटी रैगिंग स्काउड सेल के संयोजक व कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने बताया कि स्काउड सेल संसथान, कैंटीन, छात्रावास आदि में औचक निरीक्षण का कार्य करती है। अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर ने कहा हमें मित्रता, प्रेम, सहयोग की भावना से रहना चाहिए, जिससे इस प्रकार की कठिनाई नहीं हो।

कमेटी के सदस्यों का परिचय एवं आभार ज्ञापन प्रो बी.एल जैन ने किया। कार्यक्रम में कमेटी के डॉ आभा सिंह, डॉ बिजेन्द्र प्रधान, वी.के. शर्मा, डॉ प्रगति भटनागर तथा संस्थान के सभी विभागों के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

वसंत पंचमी पर कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने वसंत पंचमी के अवसर पर 29 जनवरी को आयोजित कार्यक्रम में कहा कि हमारे देश में ऋतुओं के परिवर्तनों को त्यौंहार के रूप में मनाने की परम्परा रही है। वसंत ऋतु के आगमन के प्रतीक के रूप में प्रकृति के नवीन स्वरूप में आने की खुशी के रूप में हर वर्ष वसंत पंचमी का पर्व मनाया जाता है और इस अवसर पर सरस्वती मां की आराधना की जाती है। सरस्वती उपासकों शिक्षक, विद्यार्थी, लेखक और अन्य विद्वानों को इस पर्व पर अपने कार्यों, आदर्शों व व्यवहार में संस्कारों को प्रधानता देने का संकल्प लेना चाहिये।

डॉ. गिरीराज भोजक ने वसंत पंचमी पर्व को जीवन में उल्लास भरने वाला और सृजन का संचार करने वाला पर्व बताया और कहा कि सदैव ज्ञानार्जन के प्रति उत्सुक रहना चाहिये। कार्यक्रम में छात्राध्यापिकाओं ने वसंत पंचमी पर्व की वैज्ञानिकता और उसके

पौराणिक महत्व के बारे में बताया। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, रवि कुमार, स्वाति एवं समस्त एमएड, बीएड, बीए-बीएड, बीएससी-बीएड में अध्ययनरत छात्राध्यापिकायें उपस्थित रही।

संविधान दिवस पर ऑनलाईन कार्यक्रम

संस्थान के शिक्षा विभाग में संविधान दिवस का आयोजन 26 नवम्बर को ऑनलाइन किया गया। सर्वप्रथम आयोजना में संविधान की प्रस्तावना प्रस्तुत कर शपथ ग्रहण की गयी। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि सामाजिक न्याय, आर्थिक न्याय, राजनैतिक न्याय आदि की बात संविधान में उल्लेखित है। धर्म, भाषा, प्रान्त, पंथ आदि की दृष्टि से कोई भेदभाव न हो इसके लिए संविधान में सामाजिक न्याय की बात की गयी है। डॉ. अमिता जैन ने संयोजन करते हुए कहा कि संविधान की प्रस्तावना में कुछ आदर्श, आधार एवं मूल्य हैं, जिन्हें आत्मसात करके अच्छे नागरिक का दायित्व निर्वहन करते हुए आगे बढ़ना है। कार्यक्रम में लगभग 70 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

मातृभाषा दिवस पर निबंध व भाषण प्रतियोगिता

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्वावधान में भी मातृभाषा दिवस के अवसर पर भाषण एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कुल 80 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि मातृभाषा हमारी संवेदनाओं की वाहक होती है। अपनी मातृभाषा में अधिकतर बात करना अच्छा होता है, क्योंकि यह हमारा मूल आधार है और यह हमें अपनत्व का बोध करवाती है। कार्यक्रम में डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरधारी लाल, मुकुल सारस्वत, देवीलाल आदि उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय अन्तर्महाविद्यालय हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता

देश को गुमराह नहीं करने वाली राजनीति से ही देश का विकास संभव

अखिल भारतीय अन्तर्महाविद्यालय हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन 31 जनवरी को संस्थान स्थित महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के तत्वावधान में किया गया। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित इस प्रतियोगिता के शुभारम्भ कार्यक्रम की मुख्य अतिथि नगरपालिका की अध्यक्ष संगीता पारीक थी। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में समाजसेवी जगदीश प्रसाद पारीक व शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. बीएल जैन थे। प्रतियोगिता में कुल 31 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया और 'सदन की राय में क्षेत्रीय दलों का बढता वर्चस्व देश के संघीय ढांचे के लिये हानिकारक है' विषय के पक्ष व विपक्ष में अपने विचार व्यक्त किये। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की स्नेहा पारीक रही। द्वितीय स्थान पर आदर्श बीएड कॉलेज श्रीडूंगरगढ के जितेन्द्र राजपुरोहित, तृतीय गवर्नमेंट लॉ कॉलेज बीकानेर की विद्या भाटी रही और सांत्वना पुरस्कार राजकीय विधि महाविद्यालय चूरू की प्रमिला प्रजापत और महारानी सुदर्शना कॉलेज बीकानेर की खुशबू भाटी ने प्राप्त किया।

लोगों को बांटने वाली राजनीति अनुचित

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि प्रो. जैन ने कहा कि वक्तृत्व कला के लिये सबसे ज्यादा जरूरी आत्मविश्वास होता है और उसके बाद वाणी की ओजस्विता और नेतृत्व शैली का महत्व होता है। उन्होंने जातिवाद, धर्म, क्षेत्र, भाषा आदि के माध्यम से राजनीति करने और लोगों को बांटने के काम को संविधान की आत्मा के विरूद्ध बताया और कहा कि राजनीति में आत्मवंचना सबसे खराब होती है। अगर राजनीति से गुमराह करने वाली बात हट जाये तो राजनीति देश का विकास करने वाली साबित होगी। पालिकाध्यक्ष संगीता पारीक ने कहा कि वाद-विवाद प्रतियोगिता से जहां विद्यार्थियों में भाषण देने की क्षमता का विकास होता है, वहीं उन्हें तर्क द्वारा अपनी बात सिद्ध करने की कला भी सीखने को मिलती है। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रतियोगिता की विशेषताओं के बारे में बताया और आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित किये जा रहे विभिन्न प्रकल्पों व क्लबों के बारे में जानकारी देते हुये बताया कि यहां विवेकानन्द क्लब, महाप्रज्ञ क्लब, सोनल मानसिंह क्लब, रानी लक्ष्मीबाई क्लब आदि के माध्यम से छात्रायें विविध गतिविधियों में भाग लेकर अपनी रूचि के अनुरूप अपना विकास कर पाती है। उन्होंने छात्राओं के कॅरियर के सम्बंध में स्थापित ज्ञानकेन्द्र के बारे में भी बताया। इस अवसर पर प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. बिजेन्द्र प्रधान, डॉ. पुष्पा मिश्रा, सोमवीर सांगवान, डॉ. विनोद सिहाग, शेर सिंह, मांगीलाल, दक्षता कोठारी, हसीना बानो आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया।

अन्तर्विद्यालयी नृत्य प्रतियोगिता

एकल नृत्य में ऐश्वर्या व सामुहिक नृत्य में तेजिका समूह रहा विजेता

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित सोनल मानसिंह क्लब एवं राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) के संयुक्त तत्वावधान में अन्तर्विद्यालयी नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन 8 फरवरी को महाप्रज्ञ-महाश्रमण ओडिटोरियम में किया गया। प्रतियोगिता में एकल नृत्य में आदर्श विद्या मन्दिर जसवंतगढ़ की ऐश्वर्या सोनी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। केशरदेवी राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की छात्रा जयश्री वर्मा द्वितीय स्थान एवं श्रीलाडमनोहर बाल निकेतन माध्यमिक विद्यालय की छात्रा प्रियंका जांगिड़ तृतीय स्थान पर रही एवं प्यारीदेवी तापड़िया उच्च माध्यमिक विद्यालय, जसवंतगढ़ की पूजा शर्मा ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। इसी प्रकार सामूहिक नृत्य प्रतियोगिता में ओसवाल उच्च माध्यमिक विद्यालय, सुजानगढ़ की तेजिका चौधरी व समूह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। सेठ सूरजमल भूतोड़िया राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की मनीषा प्रजापति एवं समूह ने द्वितीय व मदनलाल भवंरीदेवी आर्य मेमोरियल संस्थान की छात्रा स्नेहा सैनी एवं समूह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सांत्वना पुरस्कार के लिए संस्कार उच्च माध्यमिक विद्यालय की शबाना एवं समूह का चयन किया गया। कार्यक्रम में सभी विजेता छात्राओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किये गये।

गलतियां सुधार कर आगे बढें

इस अवसर पर प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि शिक्षा के साथ अन्य गतिविधियां भी छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक है। ऐसी प्रतियोगिताओं के आयोजनों के माध्यम से निर्णय लेने की क्षमता, प्रबन्धन की कला, साहस और धैर्य का विकास होता है। विशिष्ट अतिथि आयशा सिंह ने कहा कि हम खुशी के लिए काम करेंगे तो ना खुशी मिलेगी और ना सफलता, लेकिन अगर हम खुश रहकर किसी काम को करते हैं तो सफलता के नित नये आयाम छू सकते हैं। मुख्य अतिथि पूजा चौधरी ने कहा कि जीवन में निराश होना प्रगति में बाधक है। असफलताओं से निराश होने की बजाय सीख लेनी चाहिए ताकि अपनी गलतियों को सुधारकर असफलता रूपी सागर से पार पाया जा सके। कार्यक्रम के प्रारम्भ में स्वागत गीत कुसुम एवं समूह ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्षा तारा बोथरा, मंत्री सपना भंसाली, कनक दूगड़, गजेन्द्र जी बोहरा एवं मदनलाल चिण्डालिया अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इनका स्वागत क्लब सदस्य छात्राओं द्वारा पुष्प-गुच्छ एवं संस्थान का प्रतीक चिन्ह भेंट कर किया गया। उदयपुर से प्रतियोगिता हेतु पधारे गजेन्द्र बोहरा द्वारा सोनल मानसिंह क्लब को 5 हजार रूपये की प्रोत्साहन राशि भेंट की गई। डॉ. पुष्पा मिश्रा द्वारा कार्यक्रम की समीक्षा की गई। आभार क्लब प्रभारी वाणिज्य व्याख्याता श्वेता खटेड़ द्वारा किया गया।

छात्राओं की छात्राओं के लिए छात्राओं द्वारा आयोजित अनोखी प्रतियोगिता

कार्यक्रम का आयोजन सोनल मानसिंह क्लब की छात्राओं द्वारा लाडनूं क्षेत्र के सभी उच्च माध्यमिक विद्यालयों हेतु किया गया, जिसमें छात्राओं का उद्देश्य नृत्य प्रतियोगिता के माध्यम से युवा छात्राओं में देश की संस्कृति एवं लोक-गीतों के प्रति जागरूकता लाना रहा। देश की सांस्कृतिक विरासत को बचाने का यह उपक्रम काफी हद तक सफल भी साबित हुआ। कार्यक्रम में अध्यक्ष, मुख्य अतिथि, संचालनकर्ता, निर्णायक आदि सभी भूमिकाएं क्लब सदस्य छात्राओं द्वारा निभाई गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता छात्रा दक्षता कोठारी ने की। सह-अध्यक्ष की भूमिका सृष्टि जड़िया ने अदा की, वहीं मुख्य अतिथि छात्रा पूजा चौधरी एवं विशिष्ट अतिथि आयशा सिंह रही। प्रतियोगिता में निर्णायक के तौर पर भी छात्रा प्रीति फूलफगर, दिव्यता कोठारी व पूजा प्रजापत रही। कार्यक्रम की छात्रा समीक्षक की भूमिका में बी.कॉम तृतीय वर्ष की छात्रा सोनम कंवर थी। कार्यक्रम का संचालन काजल प्रजापत, मानसी जांगीड़, नवनिधि दौलावत, कीर्ति बोकड़िया, सुरभि नाहटा व हसीबा बानो ने किया। कार्यक्रम में सहयोगी रही छात्राओं में मुस्कान बानो, ईशा जड़िया, दिशा बैंगानी, पूजा सोनी, ऋतिका सांखला, निशा राठौड़ आदि शामिल रही। इस अवसर पर सोनल मानसिंह क्लब की छात्राओं ने भी नृत्य प्रस्तुतियां देकर विद्यालय से आई छात्राओं को प्रेरणा दी।

आम नागरिक की इकोनोमी के प्रति जागरूकता ही आर्थिक अपराधों को रोक सकती है- शर्मा

वित्तीय अनियमितताओं की रोकथाम के उपायों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में ''वित्तीय अनियमितताओं की रोकथाम के उपाय'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 22 फरवरी को किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुये प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के लिये वहां होने वाली वित्तीय अनियमिततायें सबसे अधिक नुकसानदायी होती है। इनके द्वारा सारा आर्थिक व्यवहार छिन्न-भिन्न हो जाता है और बड़ी संख्या में लोग आर्थिक समस्याओं से जूझने को मजबूर हो जाते हैं। उन्होंने विभिन्न बैंक घोटालों, चिटफंड कम्पनियों, मनी सर्कुलेशन योजनाओं आदि का उदाहरण देते हुये कहा कि देश को खोखला करने में ये सबसे अधिक भूमिका निभाते हैं। इन पर प्रभावी नियंत्रण कायम करने में सरकारों की विफलता के कारणों में विशेषज्ञों की पर्याप्त सहायता नहीं मिलना है। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के संदर्भ व्यक्ति शांतिलाल शर्मा ने शेयर मार्केट में होने वाली हलचलों और उतार-चढाव में प्रभावी सेगमेंट्स पर प्रकाश डाला और बताया कि सन 1988 से देश में प्रतिभूति और वित्त का नियामक बोर्ड सेबी बना हुआ है। सेबी का प्रमुख उद्देश्य भारतीय स्टाक निवेशकों के हितों का उत्तम संरक्षण प्रदान करना और प्रतिभूति बाजार के विकास तथा नियमन को प्रवर्तित करना है। उन्होंने बताया कि सेबी प्रतिभूति बाजार से जुड़े लोगों को प्रशिक्षित करता है और निवेशकों के लिये शिक्षा प्रोत्साहन प्रदान करता है। समस्त प्रकार के प्रतिभूति बाजार, व्यवहार और म्युचुअल फंड और संबंधित व्यक्तियों के नियमन का अधिकार सेबी के पास है। जनता से 100 करोड़ रुपये से अधिक धनराशि जुटाने वाली सभी योजनायें सेबी के अधीन हैं। सेबी को तलाशी, जब्ती व संपत्ति कुर्क करने का अधिकार है। नियमों का पालन नहीं करने वालों को हिरासत में लेने का अधिकार भी सेबी के पास है और

देश-विदेश के नियामकों से सूचनाएं मांगने की अनुमति भी सेबी को प्राप्त है। उन्होंने सेबी के रिसोर्स में शिकायतें दर्ज करवाने और उनके निपटारे की प्रक्रिया के बारे में भी बताया।

श्वेता खटेड़ ने भी संगोष्ठी में देश में व्याप्त वित्तीय अनियमितताओं के बारे में विस्तार से बताया और कहा कि जब तक इन पर व्यापक नियंत्रण नहीं किया जाता है, तब तक देश को मजबूती नहीं मिल सकती। प्रारम्भ में अभिषेक शर्मा ने अपने वक्तव्य में अतिथियों का स्वागत किया। संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में सेबी के संदर्भ व्यक्ति शांतिलाल शर्मा ने देश भर में फैले विभिन्न स्तर पर आर्थिक अपराधों की गतिविधियों के बारे में बताया और उनकी रोकथाम के उपाय सुझाये। उन्होंने स्पष्ट कहा कि जब तक आम नागरिक जागरूक नही रहेगा और इकोनोमी को नहीं समझेगा, तब तक उसका लाभ ऐसे आर्थिक अपराधी उठाते रहेंगे। संगोष्ठी में कमल कुमार मोदी, डॉ. प्रगति भटनागर व प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने भी विभिन्न वित्तीय अनियमितताओं के संबंध में विचार व्यक्त किये। अंत में सेबी के शांतिलाल शर्मा ने सभी विद्यार्थियों एवं सम्भागियों की शंकाओं व जिज्ञासाओं का समाधान प्रस्तुत किया।

शिक्षक दिवस मनाया

संस्थान में 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा है कि शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। महाविद्यालय से निकलने वाले छात्र ही राष्ट्र का भविष्य बन कर सामने आते हैं। उन्होंने डा. राधाकृष्ण को याद करते हुए कहा कि हमारे देश के इतिहास में गुरू-शिष्य की श्रेष्ठतम जोड़ियों का निर्माण होता रहा है। रामकृष्ण परमहंस ने स्वामी विवेकानन्द जैसा शिष्य देश को दिया। कौटिल्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य का निर्माण किया। गुरू रामदास की शिक्षा से छत्रपति शिवाजी ने मुगलों के छक्के छुड़ाये। गौड़पाद ने गुरू बनकर जगद्गुरू शंकराचार्य का निर्माण किया।

आचार्य तुलसी ने आचार्य महाप्रज्ञ को तैयार किया था। उन्होंने इस अवसर पर अरस्तू और सिकन्दर के दृष्टान्त भी प्रस्तुत किये। ऑनलाईन आयोजित किये गये इस कार्यक्रम के प्रारम्भ में डा. बलवीर सिंह चारण ने शिक्षक दिवस की भूमिका प्रस्तुत की। छात्राओं ममता एवं संगीता ठोलिया ने भी शिक्षक दिवस पर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में कमल कुमार मोदी, सोमवीर सांगवान, शेरसिंह, अभिषेक शर्मा, श्वेता खटेड़, डा. विनोद सियाग आदि उपस्थित रहे।

हिन्दी दिवस मनाया

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में हिन्दी दिवस पर आयोजित ऑनलाईन कार्यक्रम प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुआ। उन्होंने हिन्दी की महता पर प्रकाश डालते हुये इस भाषा की विशेषताओं के बारे में बताया तथा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान के लिये राजेन्द्र सिन्हा को याद किया और उनकी स्वर्णजयंती 14 सितम्बर का महत्व बताया। कार्यक्रम में मुमुक्षु आयुषी ने प्रियंका राठौड़ ने हिन्दी कवितायें प्रस्तुत की। डा. बलवीर सिंह, सोमवीर सांगवान, अभिषेक चारण ने हिन्दी दिवस एवं हिन्दी भाषा के महत्व के बारे में बताया।

अभिभावक-अध्यापक बैठक आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 14 फरवरी को आयोजित अभिभावक-शिक्षक बैठक की अध्यक्षता करते हुये प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि अभिभावकों द्वारा दिये जाने वाले सुझाव व उठाये जाने वाले सवाल बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। वे उन्हें विद्यार्थी एवं स्वयं के अनुभवों के आधार पर रखते हैं, उनका समाधान किया जाने से निश्चित रूप से महाविद्यालय का स्वरूप निखारकर यहां की शिक्षण व्यवस्था तुलनात्मक रूप से अन्य महाविद्यालयों से अधिक गुणवतापूर्ण बन पाती है। उन्होंने महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताते हुये संचालित विभिन्न क्लबों के माध्यम से छात्राओं की रूचि के अनुरूप उनके कौशल का विकास किये जाने, उनमें वक्तृत्व कला, नृत्य कला, गायन कला, चित्रकला, योग आदि के गुणों का विकास शिक्षण के साथ सहज भी संभव हो पाता है। बैठक में छात्रा दक्षता कोठारी, सुरभि नाहटा व माधुरी सोनी ने महाविद्यालय की विशेषताओं के बारे में बताया। कार्यक्रम के शुरू में कुसुम नाई व समूह ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। अभिभावकों व अध्यापकों का परस्पर परिचय करवाया गया। अंत में अभिभावकों की जिज्ञासाओं एवं सवालों के जवाब दिये गये। व्याख्याता कमल कुमार मोदी, अभिषेक चारण व राजश्री शर्मा ने सभी की शंकाओं का समाधान प्रस्तुत किया। अभिभावकों ने महाविद्यालय की व्यवस्थाओं व शिक्षा के प्रति संतोष जताया। बैठक में प्रदीप कोठारी, मोहम्मद अयूब, हरिराम जाट, रामकुमार मंडा, किशन प्रजापत, महावीर सारण, धनराम बाघवानी, नत्थूसिंह सांखला, पन्नालाल शर्मा, जाकिर खां, लीला देवी, जयश्री पांड्या, किरण सांखला, बिस्मिल्लाह बानो, बरजी देवी, जमना देवी, मनीषा, सरिता, मुन्नी देवी, मनफूल देवी, मंजू देवी, मधु नाहटा, ज्योत्सना राठौड़ आदि उपस्थित थे। बैठक का संचालन अभिषेक चारण ने किया।

भ्रूण हत्या व लैंगिक असंतुलन पर नियंत्रण को लेकर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में भ्रूण हत्या और लैंगिक असंतुलन पर नियंत्रण के उपाय विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 17 फरवरी को किया गया। संगोष्ठी के शुभारम्भ सत्र की अध्यक्षता करते हुये प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने देश के सामाजिक माहौल में महिलाओं के प्रति सोच के नजरिये को बदलने की आवश्यकता बताते हुये कहा कि भ्रूणहत्या अमानवीय कृत्य है और इसी सामाजिक बुराई के कारण समाज में लैंगिक असंतुलन को बढावा मिला है। इस पर नियंत्रण के लिये जरूरी है कि समाज की आम सोच को बदला जावे। उन्होंने अहिंसा प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत जन साधारण की सोच को बदलने की शक्ति बताई और कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने इस दिशा में राह दिखाई थी। कार्यक्रम में मुख्यवक्ता के रूप में गर्भस्थ शिशु संरक्षण समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामकिशोर तिवाड़ी ने कहा कि जब तक समाज की मातृशक्ति जागृत नहीं होगी, तब तक इस सामाजिक बुराई पर अंकुश संभव नहीं लगता है। उन्होंने सामाजिक संस्कारों में परिवर्तन लाने और इस घोर-पाप के प्रति मानसिकता में बदलाव लाने की जरूरत बताई। समिति के मंत्री करणीदान ने सहज राजस्थानी और अपनी काव्यात्मक भाषा में कन्या भ्रूण हत्या की कुप्रथा की रोकथाम के विभिन्न पहलुओं के बारे में बताया और छात्राओं को जागरूक किया। कार्यक्रम में गर्भस्थ शिशु संरक्षण समिति के स्थानीय ईकाई के अध्यक्ष सूरजनारायण राठी, मंत्री अभय नारायण शर्मा, संकाय सदस्य डॉ. प्रगति भटनागर, कमल कुमार मोदी, सोमवीर सांगवान, डॉ. विनोद सियाग, श्वेता खटेड़, शेरसिंह, अभिषेक शर्मा, मांगीलाल आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. बलबीर सिंह चारण ने किया।

मातृभाषा से होता है मानसिक विकास- प्रो. त्रिपाठी

विश्व मातृभाषा दिवस मनाया

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 21 फरवरी को अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि मातृभाषा जीवन की पहली सीढी होती है और इसके माध्यम से जो ज्ञान सीखा जाता है, वह विद्यार्थी सहजता से हृदयंगम कर सकता है, वहीं उसका अपनी भाषा द्वारा मानसिक विकास भी संभव हो पाता है, साथ ही सीखी हुई बातों को लम्बे समय तक उसे स्मृति में भी बनाया रखा जा सकता है। मातृभाषा द्वारा अन्य संस्कृतियों को समझने में एवं उनके साथ समन्वय स्थापित करने में भी सहायता मिलती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मानव संसाधन मंत्रालय ने मातृभाषा को महत्व देते हुये देश भर में मातृभाषा को अंगीकार करने के लिये अभियान चलाया है। कार्यक्रम में हेमलता शर्मा, मेहनाज बानो, सुमन प्रजापत, करिश्मा खान, नन्दिनी पारीक, दक्षता कोठारी, नीलोफर बानो आदि ने मातृभाषा पर अपने विचार प्रकट किये और इसमें अपनत्व की भावना को महत्वपूर्ण बताया। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी व्याख्याता अभिषेक चारण ने किया। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य एवं छात्रायें उपस्थित रही।

मान्यता नहीं होने पर भी जन-जन की भाषा है राजस्थानी

विश्व मातृभाषा दिवस पर समारोह का आयोजन, प्रतियोगिताओं में जौहरा व दक्षता रही प्रथम

विश्व मातृभाषा दिवस पर यहां 21 मार्च को ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने राजस्थानी भाषा को मान्यता दिये जाने एवं उसके विकास को लेकर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि मातृभाषा हृदय के उद्गारों को व्यक्त करने वाली भाषा होती है। आयोजित समारोह में भले ही राजस्थानी को शासकीय मान्यता नहीं मिली हो, लेकिन प्रदेश में जन-जन की भाषा आज भी यही है। प्रांत के समस्त लोगों के व्यवहार की अभिव्यक्ति राजस्थानी भाषा में ही होती है। उन्होंने कहा कि हमें बिना किसी विवाद के अपनी मातृभाषा को सम्मान देना चाहिये।

सब भाषाओं की जननी संस्कृत का महत्व नहीं भूलें

अध्यक्षता करते हुये अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवाड़ी ने कहा कि समस्त भाषाओं की जननी संस्कृत है। हमें संस्कृत के महत्व को समझना चाहिये। उन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी व रसियन भाषाओं में एकरूपता वाले शब्दों का उदाहरण देते हुये कहा कि सभी शब्द मूल रूप से संस्कृत से ही निकले हैं।

शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने मातृभाषा और राजभाषा तथा शिक्षण में भाषाओं का स्तर व मान्यता के बारे में इतिहास बताते हुये कहा कि मातृभाषा के विकास पर जोर दिया जाना आवश्यक बताया। प्रतियोगिता समन्वयक डॉ. अमिता जैन ने कहा कि मातृभाषा में शिक्षा दिया जाना शिक्षा को सरल व सुबोध बनाता है। अंत में डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने आभार ज्ञापित किया।

प्रतियोगिताएं आयोजित

समारोह के द्वितीय चरण में मातृभाषा पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें एकल गायन प्रतियोगिता में 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रथम जौहरा फातिमा रही। द्वितीय आशा स्वामी और तृतीय स्थान पर सैयद निखतनाज रही। भाषण प्रतियोगिता में कुल 7 प्रतिभागी छात्राओं ने हिस्सा लिया। इनमें से प्रथम दक्षता कोठारी रही तथा द्वितीय आयुषी सैनी व तृतीय स्थान पर सुविधा जैन नही। पेंटिंग प्रतियोगिता में कुल 6 छात्राओं ने हिस्सा लिया। निर्णायकों में डॉ. गिरीराज भोजक व अभिषेक चारण थे।

सोशल डिस्टेंसिंग में ऑनलाईन कक्षाओं सम्बंधी व्याख्यान आयोजित

गूगल क्लासरूम का महत्व, उपयोगिता और तकनीक बताई

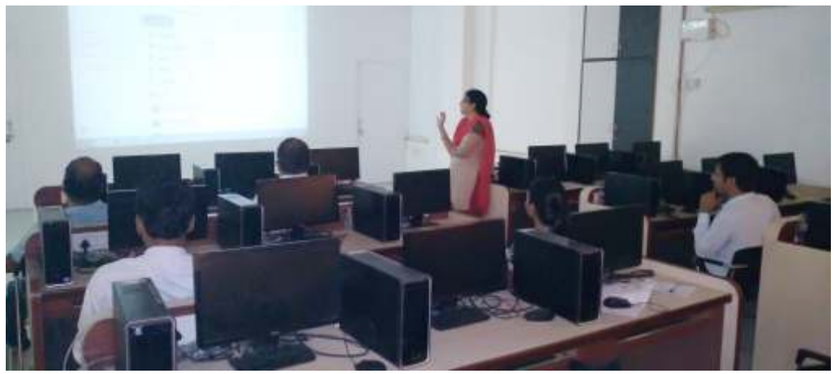

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आंतरिक व्याख्यान श्रृंखला के अन्तर्गत प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में 11 सितम्बर को आयोजित व्याख्यान में डा. प्रगति भटनागर ने गूगल क्लासरूम द्वारा ऑनलाईन पढाई के बारे में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होनें गूगल क्लासरूम एप्प के जरिये अध्ययन-अध्यापन के विविध आयामों एवं तकनीक के बारे में जानकारी दी। डा. भटनागर ने सभी पाठ्यक्रमों एवं सेमिनारों तक के ऑनलाईन किये जाने की जरूरत बताई। उन्होंने बताया कि गूगल क्लासरूप एक ऐसा प्लेटफार्म है, जिस पर अलग-अलग कक्षाओं का संचालन किया जा सकता है। क्लासरूम के ऑनलाईन मैनेजमेंट के लिये इस प्लेटफार्म की अपनी खूबियां हैं। उन्होंने गूगल क्लासरूम में कक्षा क्रियेट करने, उसे नाम देकर जेनरेट करने, विद्यार्थियों द्वारा जॉइन करने, कोड एंटर करने, टॉपिक जोड़ने, शिक्षक को आमंत्रित करने, पाठ्य सामग्री जोड़ने, उसे पोस्ट करने, असाइनमेंट बनाने, डोक्यूमेंट्स क्रियेट करने आदि विविध पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला और उसे स्मार्ट बोर्ड पर प्रेक्टिकली बताया। उन्होंने बाद में इस सम्बंध में उपस्थित लोगों की जिज्ञासाओं एवं सवालों के जवाब भी दिये। प्रारम्भ में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने विषय के सम्बंध में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सोशल डिस्टेंसिंग के चलते ऑनलाईन कक्षाओं का महत्व बढ गया है।

इस सम्बंध में विभिन्न तकनीकों के बारे में सबके लिये जानकारी आवश्यक है। कार्यक्रम का संचालन समन्वयक सोमवीर सांगवान ने किया।

वित्तीय नियोजन के सम्बंध में राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन एवं वाणिज्य संकाय के तत्वावधान में 29 दिसम्बर को 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वित्तीय नियोजन की भूमिका' विषय पर एक राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया। वेबिनार की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने की। सेमिनार के प्रमुख वक्ता के रूप में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के प्रो. पी.के. सिंह द्वारा आय, निवेश एवं व्यय समायोजन के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने एक निश्चित उम्र के पड़ाव पर किस प्रकार आर्थिक निवेश करना चाहिये, को व्याख्यायित किया। केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान से डॉ. संजय कुमार पटेल ने 'निवेश के माध्यम से टैक्स सेविंग' किस प्रकार की जा सकती है, की जानकारी दी। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर छत्तीसगढ़ से जुड़े वक्ता डॉ. अमित मंगलानी ने निवेश के नूतन आयामों पर विस्तृत चर्चा की। सेमिनार की शुरुआत में महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय के व्याख्याता अभिषेक शर्मा ने वक्ताओं का परिचय करवाया एवं प्रो. त्रिपाठी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए समय-समय पर ऐसे आयोजनों के महत्व को उजागर किया और वाणिज्य संकाय के सदस्यों को इसके लिए बधाई दी। इस राष्ट्रीय वेबीनार में देश के विभिन्न राज्यों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। अंत में कमलकुमार मोदी ने आभार ज्ञापित किया। वेबीनार का संचालन व्याख्याता श्वेता खटेड़ ने किया।

कोरोना के विरूद्ध जन आंदोलन के लिये शपथ ग्रहण करवाई

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर कोरोना महामारी के विरूद्ध जन आंदोलन के निमित्त 'मास्क पहनो, शारीरिक दूरी बनाओ एवं हाथों को स्वच्छ रखो'' अभियान में शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन 15 अक्टूबर को किया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशानुसार संस्थान की एनएसएस की दोनों ईकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि जब तक कोई वैक्सीन नहीं बन जाती है, तब तक मात्र मास्क लगाने से ही कोरोना से बचा जा सकता है, इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को अनिवार्य रूप से मास्क धारण करना चाहिये। इसी के साथ परस्पर न्यूनतम 6 फीट की दूरी बनाये रखने और हाथों को हेंड-सेनिटाईजर और साबुन से धोकर स्वच्छ बनाये रखने की आवश्यकता भी है। इस अवसर पर प्रो. त्रिपाठी ने समस्त शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक कार्मिकों को निर्धारित शपथ ग्रहण करवाई। कार्यक्रम में एनएसएस की दोनों ईकाइयों के प्रभारी डा. प्रगति भटनागर व डा. बलवीरसिंह चारण एवं कमल कुमार मोदी, सोमवीर सांगवान, श्वेता खटेड़, शेरसिंह, डा. विनोद सैनी, घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे।

गरबा नृत्य की वर्चुअल प्रतियोगिता में स्नेहा व दिव्यता रही प्रथम

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के तत्वावधान में प्रतिवर्ष किये जाने वाले गरबा नृत्य प्रतियोगिता का वर्चुअल आयोजन इस साल कोरोना प्रकोप को ध्यान में रखते हुये 24 अक्टूबर को ऑनलाईन आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा यहां प्राचार्य प्रा. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर स्नेहा पारीक व दिव्यता कोठारी रही। द्वितीय स्थान पर प्रीति फूलफगर और तृतीय स्थान पर निकिता लोढा रही। सांत्वना पुरस्कार के लिये कल्पना सोलंकी व भूमि प्रजापत का चयन किया गया। प्रतियोगिता में अधिकतम 3 मिनट के एकल गरबा नृत्य का वीडियो अपलोड करना था। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में नुपूर जैन, प्रगति चौरड़िया व डा. पुष्पा मिश्रा रही। समन्वयक डा. प्रगति भटनागर ने बताया कि विजेताओं को पुरस्कृत करने के अलावा इस गरबा प्रतियोगिता में सहभागी बने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गए।

पुस्तक समीक्षा

आचार्य महाप्रज्ञकृत 'महावीर का अर्थशास्त्र' पुस्तक की समीक्षा

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में 1 फरवरी को आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा रचित पुस्तक ''महावीर का अर्थशास्त्र'' की समीक्षा वाणिज्य व्याख्याता अभिषेक शर्मा द्वारा की गई। शर्मा ने समीक्षा प्रस्तुत करते हुये बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ ने सापेक्ष अर्थशास्त्र की बुनियाद कायम की है। उनकी पुस्तक ने शोषण विहीन समाज, नैतिकता पूर्ण आजीविका, प्रकृति व पर्यावरण हितैषी अर्थशास्त्र आदि के सम्बंध में व्यापक प्रकाश डाला है। शर्मा ने बताया कि यह पुस्तक कुल नौ भागों में विभक्त की गई है, जिनमें प्रथम भाग में केन्द्र में कौन-मानो या अर्थ, द्वितीय विकास की अर्थशास्त्रीय अवधारणा, तृतीय अहिंसा और शांति का अर्थशास्त्र, चतुर्थ व्यक्तिगत स्वामित्व एवं उपभोग का सीमाकरण, पंचम पर्यावरण और अर्थशास्त्र, षष्ट गरीबी और बेरोजगारी, सप्तम महावीर, मार्क्स, केनिज और गाँधी, अष्टम नई अर्थनीति के पेरामीटर, नवम भाग में धर्म से आजीविका : इच्छा परिमाण में अर्थशास्त्र के बारे में व्यापक चर्चा की गई है। इस दौरान प्रो. त्रिपाठी द्वारा पुस्तक में परित्राण शब्द के शब्दार्थ एवं भावार्थ पर विषद् चर्चा की एवं संकाय सदस्यों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। इस दौरान महाविद्यालय के वाणिज्य व्याख्याता कमल कुमार मोदी ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संयोजन सोमवीर सांगवान ने किया। सहायक आचार्य डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, शेरसिंह राठौड़ आदि उपस्थित रहे।

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस मनाया

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में मानवाधिकार दिवस के अवसर पर ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन 10 दिसम्बर को किया गया, जिसमें सभी संकाय सदस्यों सहित छात्राओं ने भी हिस्सा लिया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि मानवाधिकार मानव जीवन की वे परिस्थितियां हैं, जिनके बिना मनुष्य सद्जीवन प्राप्त नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि न केवल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी मानवाधिकारों की रक्षा एवं संरक्षण हेतु अनेक आयोग कार्यरत हैं, जिनका मुख्य प्रयोजन मानवाधिकारों को बनाए रखना है। कार्यक्रम में वर्षा रांकावत, नफीसा बानो, मुस्कान बल्खी, संतोष ठोलिया आदि छात्राओं ने कविता व भाषण माध्यम से मानवाधिकार दिवस के बारे में अपने विचारों की अभिव्यक्त दी। प्रारम्भ में सहायक आचार्य डॉ. प्रगति भटनागर ने स्वागत वक्तव्य दिया और अंत में सहायक आचार्य श्वेता खटेड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के सहायक आचार्य कमल कुमार मोदी, अभिषेक चारण, सोमवीर सांगवान, अभिषेक शर्मा, डॉ. विनोद कुमार सैनी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह ने किया।

मासिक व्याख्यानमाला

साहित्य के द्वारा जीवन में नैतिक व सामाजिक आयामों में वृद्धि पर मासिक व्याख्यान माला आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 3 फरवरी को मासिक व्याख्यान माला प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित की गई, जिसमें महाविद्यालय के सहायक आचार्य (अंग्रेजी) सोमवीर सांगवान द्वारा "Enhancement of Social, Moral & Philosophical Dimensions of Life Through Literature" विषय पर व्याख्यान दिया गया। सांगवान ने बताया कि साहित्य ही समाज का दर्पण है, इसके माध्यम से व्यक्तिगत सम्बन्धों में मधुरता उत्पन्न कर जीवन को बेहतरी के साथ जीने की प्रेरणा मिलती है। जीवन में सहज, सद्भाव के साथ कैसे जिया जाये, यह साहित्य से बेहतर कोई अभिव्यक्त नहीं कर सकता। साहित्य की इस माकूल विशेषता के कारण साहित्य जन-मानस चेतना से होते हुए मानव संस्कारों का रूप लेता है। साहित्य में भारतीय संस्कृति का स्वर सहजता से सुना जा सकता है। प्राचार्य त्रिपाठी ने विषय को सार्थक एवं सही दिशा में व्याख्यायित करने की बधाई देते हुए कहा कि सांस्कृतिक सद्भावना को सर्वोपरि रखने के लिए सभी संकाय सदस्यों को प्रेरित किया। संचालन डॉ. बलबीर सिंह चारण ने किया। अंत में डॉ. प्रगति भटनागर ने आभार ज्ञापन किया।

'महाकवि रसखान की कृष्ण भक्ति और उनका रचना संसार' विषय पर व्याख्यान

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आंतरिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत अभिषेक चारण ने 'महाकवि रसखान की कृष्ण भक्ति और उनका रचना संसार' विषय पर व्याख्यान 23 दिसम्बर को प्रस्तुत किया। प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुए इस व्याख्यान में चारण ने बताया कि रसखान मुस्लिम धर्म से ताल्लुक रखते थे और उनका मूल नाम सैयद इब्राहिम था, परन्तु कृष्ण की भक्ति उनके रोम-रोम में बसी हुई थी। उन्होंने अपना पूरा जीवन कृष्ण की भक्ति और उन पर काव्य रचने में लगा दिया था। मुस्लिम होने के बावजूद हिन्दू धर्म और पौराणिक कथाओं से बहुत गहराई से वे परीचित थे। रसखान ने कृष्ण की बाल-लीलाओं से लेकर रास-लीलाओं तक का सजीव चित्रण अपनी रचनाओं में किया। साथ ही गूढ दार्शनिक तत्वों का उल्लेख उन्होंने अपनी रचनाओं में सरल शब्दों और भाषा में करके उन्हें सहज बनाया। व्याख्यान के अंत में प्रश्नोत्तरी में उपस्थित संकाय सदस्यों ने अनेक जिज्ञासाएं प्रस्तुत की, जिनके बारे में चारण ने जवाब देकर समाधान प्रस्तुत किए। सोमवीर सांगवान ने प्रारम्भ में व्याख्यान की विषयवस्तु पर प्रकाश डाला और कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम के अंत में डा. बलवीरसिंह चारण ने आभार ज्ञापित किया।

मासिक व्याख्यानमाला में समुद्र विज्ञान पर व्याख्यान

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के कॉफ्रेन्स हॉल में 29 फरवरी को महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में व्याख्याता मांगीलाल सुथार द्वारा समुद्र विज्ञान विषय पर व्याख्यान दिया गया। सुथार ने अपने व्याख्यान में समुद्र में मग्नतटों के निर्माण की प्रक्रिया को बताते हुए गर्म व ठण्डी धाराओं की मौजूदगी को मछलियों एवं समुद्री जीवों हेतु सर्वाधिक उपयोगी बताया, वहीं वाष्पीकरण की अधिकता होने पर लवणता की अधिकता की सम्भावना पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने समुद्र विज्ञान में चेलेन्जर अभियान के बारे में बताया, जो 1872-76 के मध्य संचालित हुआ तथा जिसका मुख्य उद्देश्य समुद्री खाइयों तथा समुद्री निक्षपों के बारे में पता लगाना था। व्याख्यान के अन्त में प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी ने व्याख्यान अभिव्यक्ति में आंकड़ों की महत्ता को स्वीकार किया तथा एक नये विषय क्षेत्र से परिचय करवाने के लिये महाविद्यालय के लिए इस व्याख्यान को सार्थक बताया। शेरसिंह राठौड़ द्वारा अंत में आभार ज्ञापन किया गया। कार्यक्रम का संचालन सोमवीर सांगवान द्वारा किया गया।

फोरेंसिक एकाउंटिंग से रोका जा सकता आर्थिक घोटालों को

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में मासिक व्याख्यानमाला के तहत 23 नवम्बर को प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में मुख्य वक्ता वाणिज्य संकाय के सहायक आचार्य अभिषेक शर्मा ने 'फॉरेंसिक अकाउंटिंग' विषय पर अपने व्याख्यान में बताया कि बैंकिंग एवं व्यवसायिक क्षेत्र में आए दिन होने वाले घोटालों को फोरेंसिक एकाउंटिंग से रोका जा सकता है तथा यह तकनीक भारतीय अर्थव्यवस्था में बेहतरी के साथ वित्तीय जागरूकता ला सकती है। उन्होंने इसकी विधि और काम करने के तरीकों के बारे में बताते हुए विस्तृत विचार प्रकट किए। व्याख्यान के अंत में अध्यक्षता करते हुए प्रो. त्रिपाठी ने फोरेंसिक एकाउंटिंग की आवश्यकता के बारे में बताया और धन्यवाद ज्ञापित किया।

साईबर सिक्योरिटी विषय पर व्याख्यान का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशानुसार 'साईबर सिक्योरिटी' विषय पर विशेष जागरूकता के लिये एक व्याख्यान का आयोजन 11 दिसम्बर को किया गया। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुये इस कार्यक्रम में आईटी प्रभारी डा. प्रगति भटनागर ने कहा कि डिजीलाईटेशन के दौर से गुजरते विश्व में वर्तमान में लापरवाही के कारण कभी भी कोई समस्याओं का शिकार हो सकता है। ऑनलाईन लेन-देन और अन्य उपक्रमों में हमारे व्यक्तिगत डाटा चुराये जाने एवं अन्य तरीकों से आर्थिक नुकसान पहुंचना संभावित है। ऐसे में हमें क्रियाशील रहने के साथ ही सतर्क भी रहना होगा। डा. भटनागर ने कहा कि हमें इस तरह से शिकार बनने से बचने के लिये अनेक सुरक्षात्मक उपायों को अपनाना चाहिये। हमें किसी भी अपरीचित ईमेल को नहीं खोलना चाहिये। अपने कम्प्यूटर एवं मोबाईल को किसी अच्छे एंटीवायरस से सुरक्षित रखना चाहिये। सोशल मीडिया पर अपनी कोई भी व्यक्तिगत जानकारी साझा नहीं करनी चाहिये। मोबाईल में व्हाट्सअप एवं अन्य सोशल साईट्स पर आने वाले लुभावने मैसेज से खुद को बचाना चाहिये। इंटरनेट पर अक्सर प्रलोभनों के जरिये धोखा और लूट की जा सकती है। उन्होंने अपने व्याख्यान में सरकार द्वारा साईबर क्रईम से सुरक्षा के लिये उठाये गये कदमों के बारे में जानकारी दी तथा सर्टिन को साईबर सिक्योरिटी के क्षेत्र में उठाया गया महत्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने उपस्थित सदस्यों द्वारा व्याख्यान के अंत में उठाई गई जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। कार्यक्रम का संचालन सोमवीर सांगवान ने किया और अंत में विनोद कुमार सैनी ने आभार ज्ञापित किया।

भारतीय संघवाद के बदलते प्रतिमान पर व्याख्यान

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय द्वारा संचालित की जा रही आंतरिक व्याख्यानमाला में डा. बलवीरसिंह चारण ने 'भारतीय संघवाद के बदलते प्रतिमान' विषय पर अपना व्याख्यान 26 अक्टूबर को प्रस्तुत किया। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित इस व्याख्यान में डा. चारण ने आजादी के बाद से अलग-अलग समय एवं परिस्थितियों में देश के संघवाद में आये बदलावों को रेखांकित किया तथा उनके प्रभावों को स्पष्ट किया। उन्होंने एकात्मक संघवाद, सहयोगी संघवाद, दृढ एकात्मक संघवाद, सौदेबाजी के संघवाद आदि के बारे में जानकारी देते हुये दलीय स्थिति, प्रधानमंत्री के व्यक्तित्व, राष्ट्र की परिस्थितियों, अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों के कारण संघवाद में आने वाले बदलावों के बारे में बताया। डा. चारण ने बताया कि वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के व्यक्तित्व से पूरी शासन व्यवस्था में परिवर्तन आया है और उसका क्रम जारी है। व्याख्यान के पश्चात उन्होंने प्रश्नोत्तरी में विभिन्न जिज्ञासाओं के जवाब देकर स्पष्ट किया। अंत में अभिषेक शर्मा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का सचांलन सोमवीर सांगवान ने किया।

अध्यात्म के साथ सामाजिक जीवन से सरोकार रखते हैं भारतीय दर्शन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने "भारतीय दर्शन की भविष्योन्मुखी दृष्टि" विषय पर 26 सितम्बर को बोलते हुये कहा कि दर्शनों को आमतौर पर आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों के लिये जाना जाता है, लेकिन इन सबका आम आदमी के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव और जीवन की समस्याओं से समाधान में भी इन दर्शनों की भूमिका पर भी विचार किया जाना चाहिये। उन्होंने विभिन्न भारतीय दर्शनों की मूलभूत विषयवस्तु के बारे में जानकारी देते हुये बताया कि भारतीय दर्शन निस्संदेह आध्यात्मिक हैं, परन्तु उनमें जीवन जीने का तरीका भी है और उनमें समस्याओं के समाधान भी हैं।

उन्होंने चार्वाक दर्शन पर विचार व्यक्त करने के साथ ही बताया कि जैन दर्शन अध्यात्मवादी दर्शन है, लेकिन इस दर्शन का आधारभूत सिद्धांत अनेकांतवाद है, जो सामाजिक समस्याओं को हल करने वाला सबसे बढिया सिद्धांत है। प्रत्येक वस्तु के अनेक धर्मों को स्वीकार करने से यह सिद्धांत व्यक्तिगत जीवन से लेकर विश्व स्तर की समस्याओं का हल करने की क्षमता रखता है। इसे मानने से अहंकार, अनाग्रह जैसे दुर्गुण दूर हो जाते हैं। जैन दर्शन की फिलोसोफी प्रदूषण और पर्यावरणीय समस्याओं का भी समाधान करती है। इच्छाओं को सीमित करने से जीवन भी सुखी हो सकता है। भोग को कम करने की भावना के कारण यह दर्शन विभिन्न समस्याओं का निराकरण कर देता है। उन्होंने बौद्ध दर्शन के सम्यक् वचन, सम्यक दर्शन, सम्यक आजीविका आदि को भी जीवन में उपयोगी बताया और योग दर्शन को जीवन सुधार का ही मार्ग बताया। इनके अलावा विभिन्न भारतीय दर्शनों पर प्रकाश डालते हुये उन्होंने विभिन्न जैनाचार्यों, शंकराचार्य, महर्षि कणाद, जैमिनी आदि के जीवन व सिद्धांतों के बारे में भी बताया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्रस्तावना व्याख्यानमाला संयोजक सोमवीर सांगवान ने रखी और अंत में दिनेश सैनी ने आभार ज्ञापित किया।

अन्तर्राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता में पुरस्कृत हुई छात्रा करूणा जांगिड़

अन्तर्राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता में संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की छात्र करूणा जांगिड ने द्वितीय स्थान प्राप्त करके योग की परचम फहराया है। छात्र करूणा ने इंदौर में परमानन्द योग विश्वविद्यालय एवं इंटरनेशनल एसोसियेशन आफ योग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 8वीं अन्तर्राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता में हिस्सा लिया था। डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने बताया कि इस प्रतियोगिता में 40 देशों के 450 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया था। इन सबमें छात्र करूणा ने सामान्य श्रेणी में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। करूणा जांगिड़ की इस सफलता के लिये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उसे बधाई दी और निरन्तर सफलता की कामना की।

'अवचेतन मन से संपर्क पुस्तक' में महाप्रज्ञ ने बताया अखंड व्यक्तित्व निर्माण का मार्ग

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत संस्थान के योग व जीवन विज्ञान विभाग में 21 मई को पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम में आचार्य महाप्रज्ञ कृत पुस्तक 'अवचेतन मन से सम्पर्क' की समीक्षा डॉ. हेमलता जोशी द्वारा प्रस्तुत की गई। डॉ. जोशी ने बताया कि चेतना एक ऐसा तत्त्व है, जो प्राणी को उसके अस्तित्व और उसके पर्यावरण का ज्ञान कराती है। चेतना के तीन स्तर माने गए हैं- चेतन, अवचेतन और अचेतन। चेतन का संबंध प्रत्यक्ष ज्ञान से है, जिसमें हमारी इंद्रियां प्रत्यक्ष जुड़ी रहती हैं, तो अवचेतन का संबंध अप्रत्यक्ष ज्ञान से है। अचेतन का संबंध इन दोनों से परे है, जहां का हमें कोई ज्ञान नहीं है। अचेतन हमारे व्यवहार का मूल है। हमारे भीतर जो संस्कार, जो इच्छाएं, विश्वास जमा हैं, चाहे वे सकारात्मक हों या नकारात्मक, वही व्यवहार रूप में व्यक्त होते हैं। अतः नकारात्मकता को दूर करने हेतु अचेतन का परिष्कार और सकारात्मकता को बढ़ाने हेतु अचेतन को प्रशिक्षित करना आवश्यक माना गया है। आचार्य महाप्रज्ञ ने इस पुस्तक को तीन भागों में बांटा है- ज्ञात-अज्ञात, मन की सीमा और चेतना के आयाम। इनमें वर्तमान की तीन ज्वलंत समस्याओं मानसिक अशांति, हिंसा की उग्रता और नैतिक चेतना का अभाव के समाधान के लिए बौद्धिक और भावात्मक विकास का संतुलन, विधायक दृष्टिकोण और संबंधों के नये क्षितिज को महत्त्व दिया है, जिसके लिए अवचेतन और अचेतन मन से संपर्क स्थापित करने की बात कही है। आचार्य महाप्रज्ञ ने अखंड व्यक्तित्व की परिकल्पना की है, जिसमें ज्ञात-अज्ञात अर्थात् बाह्य और आंतरिक पक्ष के संतुलन की बात कही है। इसके लिये विधायक दृष्टिकोण, यथार्थ चिंतन और अनुशासन आदि के साथ इनके मूल भाव को परिष्कृत करने पर सर्वाधिक बल दिया गया है। ध्यान के प्रयोगों में प्रेक्षाध्यान के विभिन्न प्रयोग कायोत्सर्ग, श्वासप्रेक्षा, चैतन्यकेन्द्र प्रेक्षा, लेश्याध्यान, अनुप्रेक्षाओं को विशेष महत्त्व दिया है, जिनका संबंध भाव परिष्कार से है।

समग्र स्वास्थ्य के विकास में योग की भूमिका पर वेबिनार का आयोजन

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के अन्तर्गत समग्र स्वास्थ्य का विकास विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार के मुख्य वक्ता योग एवं जीवन विज्ञान के डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने स्वास्थ्य के विभिन्न आयामों जैसे- शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य का वर्णन किया तथा योग में वर्णित आठ अंगों यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि और प्रेक्षाध्यान के द्वारा समग्र स्वास्थ्य का विकास किया जाने पर विस्तार से चर्चा की। इसके साथ वर्तमान परिस्थिति में योग की उपयोगिता एवं प्रेक्षाध्यान द्वारा रोग-निवारण पर किए गये विभिन्न शोधों का भी विस्तार पूर्वक वर्णन किया। इस वेबिनार का संचालन दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की सहायक आचार्या डॉ. प्रगति चोरड़िया ने किया। वेबिनार में तकनीकी सहयोग मोहन सियोल द्वारा दिया गया।

फार्म 4
(नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान
2.	प्रकाशन अवधि	:	अर्द्धवार्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	रमेश कुमार मेहता
	क्या भारत के नागरिक है ?	:	हाँ
	पता	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान
4.	प्रकाशक का नाम	:	रमेश कुमार मेहता
	क्या भारत के नागरिक है	:	हाँ
	पता	:	(कॉलम 3 के अनुसार)
5.	सम्पादक का नाम	:	डॉ. समणी भास्कर प्रज्ञा
	क्या भारत के नागरिक है	:	हाँ
	पता	:	(कॉलम 3 के अनुसार)
6.	उन व्यक्तियों के नाम पते जो पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान

मैं रमेश कुमार मेहता एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

लाडनूं
दिनांक : 1 मार्च, 2021

रमेश कुमार मेहता
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

दूरस्थ विद्यार्थियों के लिये एप्प का शुभारम्भ

संस्थान दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा देश भर में फैले अपने विद्यार्थियों की सुविधा व सहयोग के लिये ऑनलाइन हेल्पडेक्स वाट्सअप ऐप्प का शुभारम्भ कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ द्वारा 1 सितम्बर को किया गया। इस अवसर पर दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के सहायक निदेशक पंकज भटनागर ने बताया कि इस एप्प में दूरस्थ शिक्षा के पाठ्यक्रम संबंधी जानकारी, प्रवेश की जानकारी, दूरस्थ शिक्षा में चलाए जा रहे कोर्स, उन अलग-अलग कोर्स की जानकारी, माइग्रेशन प्रमाण पत्र प्राप्त करने हेतु जानकारी, डिग्री प्रमाण पत्र प्राप्त करने हेतु जानकारी, परीक्षा से संबंधित विभिन्न जानकारी, विद्यार्थियों के लिए पाठ्यसामग्री, पुराने प्रश्नपत्र, सत्रीय कार्य के लिए प्रश्न बैंक, प्रवेश पहचान पत्र आदि की सम्पूर्ण जानकारी का समायोजन किया गया है। इससे हेल्प डेस्क से विद्यार्थियों को 24 घंटे सातों दिन सुविधा मिलती रहेगी। इस ऑनलाइन हेल्प सुविधा को शुरू करने के साथ ही विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएं भी इस सम्बंध में मिलने लगी है। अधिकतर विद्यार्थियों ने इसे उपयोगी और श्रेष्ठ बताया है। इस अवसर पर दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि यह ऑनलाइन एप्प विद्यार्थियों के लिए बहुत ही सहायक सिद्ध होगी। उन्हें मामूली सी जानकारी के लिये बार-बार फोन करने या चक्कर लगाने की असुविधा से बचा जा सकेगा। उन्होंने इस एप्प को तैयार करने के लिए सहायक निदेशक पंकज भटनागर का आभार व्यक्त किया और उनका सम्मान किया।

समग्र स्वास्थ्य विषयक वेबीनार आयोजित

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा 'योग और प्रेक्षा ध्यान के माध्यम से समग्र स्वास्थ्य विकास' पर 21 मई को एक वेबीनार का आयोजन किया गया। वेबीनार के मुख्य वक्ता डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत थे। 'कोविड-19 महामारी की स्थिति के दौरान तनाव और चिंता से कैसे उबरें' पर डॉ. शेखावत द्वारा सुझाया गया कि योग और ध्यान के सर्वोत्तम तरीकों को अपनाया जाना चाहिए। उन्होंने शांति से जीवन जीना ही अपनी आत्मा को परमात्मा से जोड़ना बताया। एक बिन्दु पर ध्यान केंन्द्रित करना। प्रेक्षाध्यान एवं योग, आसान की प्रक्रिया आदि से छात्रों को लाभ प्राप्त प्राप्त करने के बारे में बताया।

अंत में वक्ता के साथ जिज्ञासा समाधान का 15 मिनट का सत्र भी आयोजित किया गया। 200 प्रतिभागियों ने वेबीनार में हिस्सा लिया। पंजीकृत प्रतिभागियों को ई-सर्टीफिकेट प्रदान किए गए। प्रारम्भ में प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। अन्त में डॉ. जे.पी. सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रगति चौरड़िया ने वेबीनार का संचालन किया।

दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता आश्वासन पर वेबिनार आयोजित

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा 28 मई को "दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता आश्वासन" पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार में प्रो. पीके शर्मा निदेशक, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट - वर्धमान महावीर ओपन यूनिवर्सिटी और डॉ. अजय वर्धन आचार्य, क्षेत्रीय निदेशक जोधपुर- इग्नू और प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, निदेशक, दूरस्थ शिक्षा, जैन विश्व भारती संस्थान, वेबीनार के मुख्य वक्ता थे। प्रो. पी. के. शर्मा ने दूरस्थ शिक्षा में सी.आई.क्यू.ए. की उपयोगिता पर अपने व्याख्यान में एसएलएम सिस्टम, शिक्षण सामग्री और इसके निर्माण के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। प्रो. अजयवर्धन आचार्य ने दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में आई.सी.टी. के उपयोग और आई.सी.टी. का अर्थ, उपयोग का उद्देश्य, आई.सी.टी. शिक्षा क्या है तथा यह आधुनिक शिक्षा प्रणाली से कैसे संबंधित है, के बारे में बताया। प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्टडी मटीरियल सिस्टम ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन, टीचिंग एंड एग्जामिनेशन स्कीम, रेफरेंस बुक्स, स्टडी मटीरियल, कोर्स आउटकम, कंटेंट के बारे में बताया। प्रारम्भ में स्वागत भाषण प्रगति चोरड़िया द्वारा दिया गया और अंत में धन्यवाद ज्ञापन पंकज भटनागर ने प्रस्तुत किया। वेबिनार का संचालन मोहन सियाल ने किया। छात्रों, शिक्षकों और शोद्यार्थी समेत 170 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रकृति के अंधाधुंध दोहन से बिगड़ता है पर्यावरण- प्रो. त्रिपाठी

विश्व पर्यावरण दिवस पर ऑनलाईन कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 5 जून को आयोजित ऑनलाईन कार्यक्रम में मुख्य वक्ता दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि यह प्रकृति की व्यवस्था है कि पृथ्वी अपना पर्यावरणीय संतुलन स्वयं बनाती है, लेकिन मनुष्य इस संतुलन को बिगाड़ने में लगा हुआ हैं। प्राकृतिक आपदाओं पर नियंत्रण के लिये आवश्यक है कि मनुष्य प्रकृति का दोहन संयमित होकर करें। डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने कहा कि विज्ञान द्वारा की गई प्रगति ही हमारे पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली है। कार्यक्रम संयोजक डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने कहा कि वर्तमान में कोरोना महामारी के दौर में जब व्यक्ति घर में बैठ गया, कल-कारखाने बंद हैं, वाहनों का चलना बंद है तो उसके कारण वातवारण में प्रदूषण कम हुआ है। इससे नदियों का जल स्वच्छ हुआ है। पर्यावरण को बचाने के लिये हमें संसाधनों के गलत उपयोग को कम करना होगा।

देशभक्ति गीत प्रतियोगिता आयोजित

स्वतंत्रता दिवस पर 15 अगस्त को दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा देश भक्ति विषय पर कविता प्रस्तुति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में प्रत्येक प्रतिभागी ने अपनी मौलिक कविता प्रस्तुत की। प्रतियोगिता में 18-30 वर्ष के 31 प्रतिभागियों ने भाग लिया। संस्थान के नियमित और दूरस्थ मोड के छात्र शामिल हुए। प्रतियोगिता में हेमंत कुमार ने पहला स्थान, करन बुद्धिराजा ने दूसरा और राजूल मेहता ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा, श्रीमती नुपुर जैन और डा. गिरिराज भोजक को निर्णायक थे। सभी पंजीकृत प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और विजेताओं को विशेष प्रमाण पत्र और पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रारंभ में स्वागत भाषण निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी द्वारा दिया गया। संचालन प्रगति चोरड़िया ने किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना का सात दिवसीय शिविर

राष्ट्रहित व सामाजिक सोच को विकसित करने का माध्यम है एनएसएस

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में 3 फरवरी से सात दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर की अध्यक्षता करते हुये आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.

आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने एनएसएस के कार्यों व उद्देश्यों पर प्रकाश डाला और कहा कि विद्यार्थी जीवन से ही समाज सेवा और राष्ट्रहित की सोच को विकसित करने का यह सबसे बड़ा माध्यम है। एनएसएस केवल विचार परिवर्तित ही नहीं करता, बल्कि व्यावहारिक तौर पर विद्यार्थियों में समाज सेवा की आदत का विकास भी करता है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वित्ताधिकारी आर.के. जैन ने स्वास्थ्य एवं कॅरियर निर्माण के बारे में बताया तथा प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व को बताते हुये कहा कि इसमें एक्युप्रेशर जैसी बिना दवा और बिना अतिरिक्त समय गंवाये की जा सकने वाली चिकित्सा पद्धति भी शामिल है। छात्राओं ने उनसे अनेक सवाल भी पूछे, जिस पर जैन ने सबकी जिज्ञासाओं को शांत किया। इस अवसर पर गायन प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया, जिसमें पूजा प्रजापत, सोनम कंवर, पूजा, स्नेहा पारीक, रूबीना बानो आदि स्वयंसेविकाओं ने हिस्सा लेकर अपनी प्रस्तुतियां दी। प्रतियोगिता के निर्णायकों में डॉ. पुष्पा मिश्रा व श्वेता खटेड़ थी। कार्यक्रम के प्रारम्भ में ईकाई प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने सात दिनों के शिविर में आयोज्य कार्यक्रमों की जानकारी दी और कहा कि अनुशासन जीवन में सबसे जरूरी होता है। छात्राओं को पूर्ण संयमित रह कर दिये गये कार्यक्रमों को सम्पन्न करना है। अंत में द्वितीय इकाई प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह चारण ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

बैंकिंग क्षेत्र में बढते साईबर अपराध की रोकथाम के लिये सावधानियां जरूरी- डूडी

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे सात दिवसीय शिविर में 4 फरवरी को कैंसर दिवस, बौद्धिक सत्र में साईबर अपराध व बैंकिंग व्यवस्थायें पर

व्याख्यान तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। एनएसएस के ईकाई प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर व डॉ. बलबीर सिंह चारण के निर्देशन में चल रहे इस शिविर के दौरान आयोजित बौद्धिक सत्र में मुख्य वक्ता ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स के अधिकारी कैलाश चंद डूडी ने एनएसएस की छात्राओं को बैंकिंग व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी प्रदान की तथा बताया कि नेट बैंकिंग नवीन व्यवस्था है और इसके माध्यम से तेज लेनदेन संभव हो पाया है। हालांकि इसमें अनेक साईबर अपराधी सेंध लगाने के प्रयास करते हैं, फिर भी कुछ सावधानियां बरतने पर हम असुविधाओं और ठगी के शिकार होने से बच सकते हैं। उन्होंने साईबर अपराधों के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुये उनके प्रति छात्राओं को जागरूक किया तथा साईबर अपराध का शिकार होने से बचने के उपाय बताये। डूडी ने बैंकिंग क्षेत्र में कॅरियर बनाने के बारे में भी बताया और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के सूत्र छात्राओं को बताये।

विश्व कैंसर दिवस का आयोजन

विश्व कैंसर दिवस के अवसर पर शिविर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कैंसर की व्यापकता व भयावहता के बारे में बताया तथा उनसे बचने के लिये बरती जाने वाली सावधानियां एवं रहन-सहन में किये जाने वाले बदलावों के बारे में छात्राओं को जानकारी दी। स्वयंसेविका प्रतिष्ठा कोठारी ने इस अवसर पर कैंसर के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुये छात्राओं को कैंसर से बचाव के लिये प्रेरित किया और उन्हें स्वस्थ जीवन जीने के सूत्र बताये। शिविर के तृतीय सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। स्वयंसेविका अर्चना शर्मा ने गायन द्वारा सत्र का शुभारम्भ किया। अन्य स्वयंसेविकाओं ने भी अपनी प्रस्तुतियां दी।

प्राथमिक चिकित्सा, स्वास्थ्य व रक्त जांच आदि का दिया प्रशिक्षण

शिविर के तृतीय दिवस 5 फरवरी को स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जाकर प्राथमिक चिकित्सा सहायता उपलब्ध करवाने के बारे में प्रशिक्षण के साथ स्वस्थ्य रहने के सूत्र एवं प्रयोगशाला जांच के बारे में बताया गया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां भी दी गई।

एनएसएस के ईकाई प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर एवं डॉ. बलबीर सिंह चारण के निर्देशन में आयोज्य इन कार्यक्रमों में तीसरे दिन आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने अध्यक्षता की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि स्वयंसेवी छात्राओं के लिये आवश्यक है कि वे प्राथमिक चिकित्सा एवं स्वस्थ रहने की कला अवश्य सीखें, ताकि आपातकाल में किसी की भी मदद कर प्राथमिक चिकित्सा पहुंचा कर किसी की जान बचा सकें। कार्यक्रम में स्थानीय राजकीय चिकित्सालय में अस्थिरोग विशेषज्ञ डॉ. कमलेश कस्वां ने

छात्राओं को दुर्घटनाओं के समय घायलों को दी जाने वाली मदद और प्राथमिक चिकित्सा के बारे में विस्तार से बताया तथा घर, सफर आदि में अचानक होने वाली व्याधि से निपटने के लिये बीमार को पहुंचाई जाने वाली प्राथमिक चिकित्सा की राहत, आवश्यक उपकरणों व दवाओं की जानकारी के अलावा इस दौरान कोई उपकरण व दवा का अभाव हो तो उसके विकल्प के तौर पर किये जाने वाले कार्यों के बारे में भी बताया।

शिविर के अगले सत्र में संस्थान के लेब टेक्नीशियन रामनारायण गैणा ने एनएसएस के सभी स्वयंसेवकों व स्वयंसेविकाओं को प्रयोगशालायी जांच, रक्त-थूक आदि के नमूने एकत्र करने, उनकी जांच करने की विधियों आदि के बारे में बताया और ब्लड प्रेशर मापने के तरीके बताये। इसके अलावा उन्होंने प्रायोगिक तौर पर स्वयंसेविकाओं की रक्त जांच करते हुये उनके रक्त में हेमोग्लोबिन की जांच की और प्रक्रिया को अच्छी तरह से समझाया। तृतीय चरण में स्वयंसेवियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन छात्रा दिव्यता कोठारी ने किया।

मंगलपुरा में स्वास्थ्य जागरूकता रैली, पोस्टर प्रतियोगिता

चतुर्थ दिवस 6 फरवरी को एनएसएस द्वारा गोद लिये गये निकटवर्ती ग्राम मंगलपुरा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पोस्टर प्रतियोगिता, बच्चों को दूध पिलाने एवं स्वास्थ्य जागरूकता रैली के कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विद्यालय के कार्यवाहक प्राचार्य जयपाल शर्मा ने स्वास्थ्य की जागरूकता को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता बताई। डॉ. शिल्पी जैन ने बच्चों को दूध पिलाने के कार्यक्रम की प्रशंसा की। एनएसएस के इकाई प्रभारी डॉ. बलबीरसिंह चारण ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। अंत में एनएसएस की प्रथम ईकाई प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने आभार ज्ञापित किया।

इससे पूर्व एनएसएस के स्वयंसेवियों ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मंगलपुरा से एक स्वास्थ्य जागरूकता रैली का आयोजन किया, जिसे का. प्राचार्य जयपाल शर्मा ने हरी झंडी दिखाई। रैली गांव के प्रमुख मार्गों से होते हुये वापस विद्यालय भवन पहुंची। विद्यालय में एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 25 प्रतिभागी विद्यार्थियों ने भाग लिया और स्वास्थ्य जागरूकता विषय पर चित्र उकेरे। इस अवसर पर सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा सप्ताह को देखते हुये विद्यार्थियों को यातायात नियमों के बारे में जानकारी दी गई। इस सम्बंध में एक गीत भी प्रस्तुत किया गया।

परिसर को स्वच्छ बनाया

शिविर के समापन पर 9 फरवरी को स्वयंसेवक व स्वयंसेविकाओं ने विश्वविद्यालय परिसर में श्रमदान करके परिसर को स्वच्छ बनाया तथा सांस्कृतिक

कार्यक्रमों द्वारा सबका मनोरंजन किया। समारोह में सात दिनों में आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं के तृतीय स्थान तक के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। शिविर के दौरान विशेष सहयोग प्रदान करने वाली स्वयंसेविकाओं को भी इस अवसर पर पारितोषिक प्रदान किये गये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने छात्र जीवन में सेवाकार्य की भावना पनपने को देश के नवनिर्माण के लिये श्रेष्ठ बताया। प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि यहां के मूक बधिर दिव्यांग आवासीय विद्यालय के बच्चों को प्रोत्साहन दिया जाने के लिये वहां कार्यक्रम प्रस्तुत करने और उन विद्यार्थियों को कार्यक्रम में पुरस्कृत करने को एक अच्छा कार्य बताया। कार्यक्रम में एनएसएस के द्वितीय इकाई प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह चारण ने सात दिवस के दौरान किये गये समस्त क्रियाकलापों, प्रतियोगिताओं और समाजसेवा कार्यों के बारे में जानकारी दी और प्रगति विवरण प्रस्तुत किया। स्वयंसेविका रूबीना बानो ने शिविर के अपने अनुभव साझा किये। एनएसएस की प्रथम इकाई प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने अंत में आभार ज्ञापित किया।

राजस्थान की प्राचीन जल-संस्कृति की रक्षा आवश्यक- जेठू

एनएसएस के स्वच्छता पखवाड़े में पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम आयोजित

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों ईकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में चलाये जा रहे स्वच्छता पखवाड़े के अन्तर्गत 29 जनवरी को आयोजित पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम में मुख्य वक्ता पर्यावरणविद् बजरंगलाल जेठू ने जल संरक्षण के महत्व को प्रतिपादित करते हुये कहा कि शुद्ध जल पर्यावरण की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने इसके लिये बरसाती पानी को जमा करने की आवश्यकता बताई और कहा कि घरों में वर्षाजल के संग्रह के अलावा सार्वजनिक रूप से बरसाती पानी के जमा करने की आवश्यकता है। उन्होंने एनएसएस की स्वयंसेविकाओं से कहा कि वे जब भी किसी गांव में जायें तो वहां मौजूद नाडी, तालाब अथवा अन्य जलाशय को स्वयं श्रमदान करके स्वच्छ बनायें, ताकि उससे ग्रामवासियों को भी पानी के स्रोतों को साफ रखने की प्रेरणा मिले।

उन्होंने वर्षा के महत्व पर बोलते हुये कहा कि राजस्थान के रहवासी इसके प्रति बहुत सचेष्ट थे। बरसात के लिये केवल राजस्थानी भाषा में ही वर्गीकरण किया गया है। उन्होंने कहा कि राजस्थान में चैत्र मास में होने वाली बरसात को चड़पड़ाट, बैशाख की बरसात हबोलियो, जेठ में झपटो, आषाढ मास की वर्षा सरबांत, श्रावण की लौर, भादवा की झड़ी, आसोज की मोती, कार्तिक में कटक, मार्गशीर्ष में फांसरड़ो, पौष में पोवट, माघ में मावठ और फाल्गुन मास की बरसात को फटकटो कहा जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक बरसात के पानी के गुण-अवगुण का वर्णन भी मिलता है। उन्होंने बताया कि जो चेतना या सीख भीतर से उत्पन्न होती है, वह प्रेरणा बन जाती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की, उन्होंने कहा कि बरसात के प्रति इस प्रांत के जनमानस में गहरी चेतना रही है। प्राचीन परम्परागत जलस्रोतों की शिल्पकला दांतों तले अंगुलि दबाने वाली है। हमें अपने इन सभी जलस्रोतों की रक्षा का दायित्व निभाना चाहिये। प्रारम्भ में अभिषेक चारण ने पर्यावरण संरक्षण की प्रस्तावना प्रस्तुत की और अतिथि परिचय दिया। एनएसएस प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने अंत में आभार ज्ञापित किया और स्वयंसेवी छात्राओं को जल-संरक्षण करने व पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने को राष्ट्र की बहुत बड़ी सेवा बताई।

स्वच्छता पखवाड़े के साथ मनाया घूंघट हटाओ अभियान

संस्थान के अन्तर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों ईकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे स्वच्छता पखवाड़े के साथ घूंघट छोड़ो अभियान एवं शहीद दिवस भी मनाया गया। 30 जनवरी को इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये आचार्य कालू कन्या महा- विद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने घूंघट प्रथा के अवगुणों के बारे में बताया तथा सभी स्वयंसेवी छात्राओं को सामुहिक रूप से घूंघट के त्याग की शपथ दिलवाई। इस अवसर पर छात्राओं स्नेहा पारीक, मानसी जांगिड़, आयशा

सिंह आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। पूजा जैतमाल ने एक गीत की प्रस्तुति दी। एनएसएस प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने स्वच्छता पखवाड़े के अन्तर्गत चल रहे कार्यक्रमों की जानकारी देते हुये घूंघट प्रथा को अनुपयोगी बताया और कहा कि वर्तमान युग में घूंघट रखना नितांत अनुचित है। उन्होंने महात्मा गांधी की पुण्य तिथि शहीद दिवस पर उन्हें याद करते हुये दो मिनट का मौन रखवा कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन सुरभि नाहटा ने किया।

एनएसएस की छात्राओं ने किया श्रमदान

संस्थान में मनाये गए स्वच्छता पखवाड़े में राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई प्रथम व द्वितीय के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय छात्रवास को एन.एस.एस. स्वयंसेविकाओं द्वारा श्रमदान करके स्वच्छ किया गया। सफाई कार्यक्रम के अन्तर्गत छात्रवास के अन्दरूनी गलियारों और खेल मैदान एवं छात्रवास के बाहर सफाई कर स्वच्छ भारत अभियान के महत्व को उजागर किया गया। वहीं उन्होंने अपनी अन्य सहपाठी छात्रओं को कर्मशील बने रहने का संदेश देकर स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाया। इस समूचे स्वच्छता कार्यक्रम में छात्रवास प्रभारी गीता पूनिया एवं एन.एस.एस. इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने छात्राओं को उचित निर्देश देकर कार्यक्रम की सफलता में सतत् भागीदारी निभाई।

फिट इंडिया अभियान के तहत एनएसएस की छात्राओं ने भ्रमण द्वारा दिया संदेश

पल्स पोलियो प्रशिक्षण और नाकारा सामान के फिर से उपयोग की विधियां बताई

भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के निर्देशानुसार संस्थान में फिट इंडिया अभियान के अन्तर्गत लम्बी दूरी की चहल-कदमी का कार्यक्रम एवं खो-खो प्रतियोगिता का आयोजन 18 जनवरी को किया गया। शहरी पीएचसी के प्रभारी डॉ. बीआर सारण ने इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की स्वयंसेविकाओं को सदैव स्वस्थ रहने और टहलने, दौड़ लगाने, व्यायाम करने, खेलकूद में रूचिपूर्वक हिस्सा लेने, योगासनों एवं यौगिक क्रियाओं का अभ्यास करने आदि की जानकारी देते हुये उन्हें जीवन में नियमित रूप से अपनाने की आवश्यकता बताई। स्वयंसेवी छात्राओं ने इस अवसर पर रैली के रूप में किये गये इस भ्रमण कार्यक्रम के दौरान "फिट इंडिया- हिट इंडिया" के नारे भी लगाये। तेज गति से किये गये इस भ्रमण में छात्राओं ने काफी हल्का महसूस किया। इस कार्यक्रम में छात्राओं के साथ ईकाई प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर व डॉ. बलबीर सिंह चारण भी मौजूद रहे। खेल प्रशिक्षक अजयपाल सिंह भाटी ने एनएसएस की छात्राओं के बीच खो-खो की स्पर्धा करवाई, जिसमें सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

नाकारा सामान की पुनरोपयोग की विधियां बताई

स्वच्छता पखवाड़े के तीसरे दिन स्वयंसेविकाओं को कचरे के रिसाईक्लिंग करने एवं अनुपयोगी वस्तुओं व अन्य सामान के पुनरूपयोग के तरीकों को समझाया गया। एनएसएस की स्वयंसेविका सुरभि नाहटा ने कार्यक्रम में प्रत्येक वस्तु का पूर्ण उपयोग करने एवं उसके खराब हो जाने या नाकारा हो जाने पर फिर से उसका उपयोग करने के लिये उनके नवीनतम प्रयोगों को बता कर सभी छात्राओं को आकर्षित किया। सुरभि ने छात्राओं को कचरे के रिसाईक्लिंग करने के तरीके भी समझाये और जीवन में निरन्तर अपनाने लायक गुर बताये।

पल्स पोलियो का प्रशिक्षण

एनएसएस की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में यहां आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के सभागार में सभी स्वयंसेविकाओं के लिये पल्स

पोलियो प्रशिक्षण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें राजकीय चिकित्सालय से आये चिकित्सक डॉ. बाबूराम सारण ने स्वयंसेवी छात्राओं को पल्स पोलियो अभियान के बारे में जानकारी दी और बताया कि देश में पोलियो रोग का उन्मूलन सफलता पूर्वक किया जा चुका, लेकिन पड़ौसी देश में पोलियो तेजी से फैल रहा है, जिससे यह संभावना बनी हुई है कि कहीं यहां भी वह संक्रमण नहीं आ जाये। भारत सरकार पोलियो को पूरी तरह से जीरो की स्थिति पर लाने के साथ उसे बनाये रखने पर जोर दे रही है, ताकि अबोध बच्चों को विकलांग होने से बचाया जा सके। उन्होंने टीकाकरण के बारे में पूर्ण जानकारी दी और पोलियो ड्रोप पिलाये जाने के बारे में स्वयंसेविकाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया। डॉ. बलबीर सिंह चारण ने बताया कि स्वयंसेविकायें इसके बाद घर-घर जाकर खुराक पीने से वंचित रहे बच्चों को भी ड्रॉप्स पिलाने के काम में सरकार की मदद करेंगी।

यातायात नियमों का जानना ही नहीं पालना भी आवश्यक

एनएसएस के सड़क सुरक्षा सप्ताह

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई प्रथम व द्वितीय के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे सड़क सुरक्षा सप्ताह का समापन 18 जनवरी को समारोह पूर्वक किया गया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्रार्थना सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने यातायात नियमों एवं उनमें आये बदलावों की जानकारी देते हुये कहा कि सड़क पर बरती जाने वाली लापरवाहियों और नियमों की अनदेखी की वजह से बहुत ज्यादा तादाद में मौतें होती हैं, जिनसे बचने के लिये केवल नियमों की जानकारी का होना ही जरूरी नहीं है, बल्कि उनका पूर्ण रूप से पालन भी किया जाना आवश्यक है। एनएसएस की स्वयंसेविका आईशा सिंह ने भी महत्वपूर्ण यातायात नियमों के बारे में बताते हुये कहा कि वाहन चालक और सड़क पर चलने वालों की सुरक्षा की दृष्टि से इनका पालन सबको करना चाहिये। इससे पूर्व एनएसएस की प्रथम ईकाई प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने सप्ताह भर में आयोजित किये गये विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। अंत में द्वितीय ईकाई प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह चारण ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन महिमा प्रजापत ने किया।

एनएसएस की छात्राओं ने किया पौधारोपण

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई के तत्वावधान में 08 सितम्बर को विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने एनएसएस स्वयंसेविकाओं को धरती व पर्यावरण के लिये वृक्षों की उपयोगिता के बारे में बताया और पेड़ लगाने की आवश्यकता बताई। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, एनएसएस प्रभारी डा. प्रगति भटनागर, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, विताधिकारी राकेश कुमार जैन, डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डा. बीरबल सिंह चारण आदि के साथ स्वयंसेविकायें भी कार्यक्रम में उपस्थित रही और परिसर में 21 छायादार व पुष्पवान पौधों का रोपण किया।

भारत सरकार के मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई प्रथम व द्वितीय के संयुक्त तत्वावधान में एनएसएस की स्वयंसेविकाओं ने विश्वविद्यालय के स्टाफ के साथ मिलकर 17 जनवरी को परिसर में वृक्षारोपण का कार्य किया। एनएसएस के सात दिवसीय शिविर के अन्तर्गत चल रहे स्वच्छता अभियान में किये गये इस वृक्षारोपण कार्यक्रम में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने कहा कि पर्यावरण के संरक्षण की दिशा में लगाया जाने वाला एक-एक पौधा अपना महत्व रखता है। स्वच्छता केवल भौतिक ही नहीं होती, बल्कि वायु प्रदूषण से मुक्ति और शुद्ध हवा के संचार में भी स्वच्छता रहती है। इस अवसर पर कुलसचिव मेहता के साथ दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, विताधिकारी आरके जैन, अहिंसा एवं शांति विभाग के विभाध्यक्ष प्रो. अनिल धर, समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बिजेन्द्र प्रधान, एनएसएस की ईकाई प्रभारी प्रगति भटनागर, डॉ. बलवीर सिंह चारण, डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, जगदीश यायावर आदि एवं एनएसएस की छात्रायें उपस्थित थी। इस अवसर पर एक दर्जन पौधों का रोपण किया गया।

राष्ट्रीय एकता दिवस पर आयोजित क्विज प्रतियोगिता में संगीता व नफीसा प्रथम रही

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वाधान में 3 अक्टूबर को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' तीन चरणों में मनाया गया। कुलपति प्रोफेसर बछराज दूग्गड़ के निर्देशन एवं संरक्षण में केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार आयोजित किये गये इस कार्यक्रम में प्रथम चरण में शपथ ग्रहण समारोह कार्यक्रम तथा दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन, द्वितीय चरण में ऑनलाईन व्याख्यान और तृतीय चरण में राष्ट्रीय एकता क्विज का आयोजन किया गया। शपथ ग्रहण एवं एकता रन में सभी संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों ने राष्ट्रीय एकता व अखंडता को बनाए रखने की शपथ ली।

ऑनलाइन व्याख्यान कार्यक्रम में में मुख्य वक्ता प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने राष्ट्रीय एकता के महत्व को उजागर करते हुए धर्म सहिष्णुता, परस्पर सहयोग और समन्वय की भावना को राष्ट्रीय एकता का महत्वपूर्ण आधार माना और सरदार वल्लभभाई पटेल के राष्ट्रीय एकता में योगदान पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में ममता कंवर, प्रियंका प्रजापत, हिमांशी डबरिया, दिव्यता कोठारी, स्नेहा पारीक, अर्चना शर्मा, वर्षा रांकावत आदि विद्यार्थियों ने भाषण, कविता एवं गायन के माध्यम से अपने विचारों की प्रस्तुतियां दी। तीसरे चरण में 'राष्ट्रीय एकता' थीम पर ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता रखी गई, जिसमें छात्रा संगीता चौधरी व नफीसा बानो संयुक्त रूप से प्रथम स्थान पर रही तथा ममता कंवर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रारम्भ में प्रभारी डा. प्रगति भटनागर ने परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ बलबीर सिंह ने किया ।

गांधी जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वाधान में 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के उपलक्ष में महात्मा गांधी की विचारधारा से संबंधित एकल गायन प्रतियोगिता कार्यक्रम का ऑनलाइन आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण में आयोजित इस ऑनलाईन कार्यक्रम में मुख्य वक्ता दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि गांधी दर्शन केवल एक दर्शन ही नहीं है, बल्कि उच्च एवं श्रेष्ठ जीवन जीने का माध्यम भी है। उन्होंने अहिंसा के अलग-अलग स्वरूपों पर चर्चा की। एकल गायन प्रतियोगिता में स्वयंसेविकाओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में स्नेहा पारीक प्रथम रही। कुसुम नाई द्वितीय तथा भावना भाटी और रितिका दाधीच तृतीय स्थान पर रही। प्रतियोगिता में निर्णायक समाज कार्य विभाग की सहायक आचार्या डा. पुष्पा मिश्रा तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की सहायक आचार्या श्वेता खटेड़ थी। कार्यक्रम की शुरूआत में एनएसएस की प्रथम इकाई के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। अंत में इकाई प्रथम की प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

हमारी संस्कृति में महिला के दिव्य स्वरूप वमहता की पहचान

विश्व महिला दिवस एवं जेंडर चैम्पियनशिप कार्यशाला आयोजित

संस्थान एवं राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में यहां आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं जेंडर चेम्पियन से सम्बंधित कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुये प्रो. रेखा तिवाड़ी ने कहा कि महिला व पुरूष परस्पर एक दूसरे के पूरक होते हैं। एक के बिना दूसरा अधूरा रहता है। महिला सशक्तिकरण को कभी पुरूष विरोधी नहीं बनाया जाना चाहिये। एनएसएस प्रभारी डा. प्रगति भटनागर ने छात्रओं को अबला के बजाये सबला बनने और सामाजिक दायित्वों को वहन करने की सलाह दी। डा. विनोद सियाग ने महिला दिवस की सार्थकता बताई और महिलाओं को अपने आपको कमजोर नहीं समझने के लिये प्रेरित किया। कार्यक्रम में नफीसा, स्नेहा पारीक, महिमा प्रजापत, दक्षता आदि स्वयंसेवी छात्रओं ने महिला दिवस सम्बंधी कविताओं का पाठ किया। रूबीना बानो, दिव्यता कोठारी, नवनिधि दौलावत, सविता भोजक, योगिता, मुस्कान बल्खी आदि ने महिला सशक्तिकरण एवं लैंगिक भेदभाव मिटाने के सम्बंध में अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में डा. विकास शर्मा, डा. पुष्पा मिश्रा, अभिषेक चारण, अभिषेक शर्मा, मांगीलाल, अजयपाल सिंह भाटी आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन दक्षता कोठारी व आयशा ने किया।

नेशनल केडेट कोर का पुरस्कार व पदक वितरण एवं सांस्कृतिक समारोह आयोजित

एनसीसी के 3 राज गर्ल्स बटालियन के कर्नल अभिषेक चतुर्वेदी ने कहा है कि एनसीसी देश के युवाओं को देश के जज्बे के सम्पर्क में रखने वाला ऐसा प्लेटफार्म है, जिसमें युवाओं का व्यवहार, स्मार्टनेस, समयबद्धता, निष्ठा सभी में सुधार आता है। वे 20 जनवरी को यहां जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के महाश्रमण अ०डिटोरियम में आयोजित नेशनल केडेट कोर से पुरस्कार व पदक वितरण एवं सांस्कृतिक समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर सम्बोधित कर रहे थे। कर्नल चतुर्वेदी ने कहा कि हम बरसों से सुनते आ रहे हैं कि भारत एक विकासशील देश है, लेकिन आखिर यह विकसित देश कब बनेगा, यह सवाल सबको कौंधता है। विकसित देशों और भारत में स्वच्छता, अनुशासन आदि का फर्क ही नहीं है, बल्कि सबसे महत्वपूर्ण फर्क यह है कि यहां के नागरिक अपने काम को शत-प्रतिशत पूरा नहीं करते हैं, जबकि वहां पर लोग अपना काम पूर्ण निष्ठा से सम्पन्न करते हैं। अगर हम सभी अपने-अपने काम को पूरा करने लगें, तो हमारा देश विकसित बनते देर नहीं लगेगी। हमें स्वच्छता के साथ नैतिक मूल्यों की ओर भी ध्यान देना होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन व विमल विद्या विहार की प्राचार्या विनीता धर थी। कार्यक्रम में एनसीसी में गोल्ड मैडल व अन्य पुरस्कार विजेता केडेट छात्रओं को कर्नल एवं अन्य अतिथियों ने पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया। इस अवसर एनसीसी की छात्रओं ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कर्नल अभिषेक चतुर्वेदी के विश्वविद्यालय में आगमन पर शुरू में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ द्वारा उनका सम्मान किया गया। कार्यक्रम में एएनओ आयुषी शर्मा, विनीता पाठक, एसएम गिरधारीलाल, खेल प्रशिक्षक अजयपाल सिंह, प्रगति जैन, शेर सिंह, अभिषेक शर्मा, डा. अमिता जैन, डा. प्रगति भटनागर, डा. बलबीर सिंह चारण, अभिषेक चारण आदि उपस्थित रहे।

आदतों में बदलाव लाने, भ्रांतियां दूर करने, अभावग्रस्तों पर ध्यान देने का आग्रह

एक दिवसीय ऑनलाइन अभिमुखीकरण कार्यक्रम

प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक एवं राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारियों के साथ राष्ट्रीय सेवा योजना की एक दिवसीय ऑनलाइन अभिमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन 30 अप्रेल को किया गया। इसमें प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री भंवर सिंह भाटी, कॉलेज शिक्षा आयुक्त सुरुचि शर्मा, राष्ट्रीय सेवा योजना के क्षेत्रीय निदेशक एसपी भटनागर, राष्ट्रीय सेवा योजना के राज्य संपर्क अधिकारी डॉ धर्मेंद्र सिंह एवं अन्य कई अधिकारी एवं कर्मचारी ऑनलाइन उपस्थित रहे। कार्यक्रम में संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के प्रभारियों डॉ. प्रगति भटनागर तथा डॉ. बलबीर सिंह ने भी भाग लिया। कार्यक्रम में वर्तमान समय में वैश्विक समस्या के रूप में उभरी कोरोना महामारी के बचाव एवं इसके लिए सार्थक प्रयास समाज तक पहुंचाने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना की भूमिका एवं सहयोग के बिंदुओं पर विचार विमर्श किया गया। डॉ. प्रगति भटनागर ने बताया कि राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों की भूमिका पर चिंतन, कोरोना महामारी के कारण समाज में उभरी अनेक समस्याओं जैसे सामाजिक भेदभाव, लोगों का अभावग्रस्त जीवन, लोगों के मन में विभिन्न भ्रांतियां आदि के निराकरण पर बल दिया गया। विभिन्न ऑनलाइन ऐप जैसे व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि से जुड़कर समाज के लोगों को इस हेतु जागरूक बनाने पर बल दिया। डॉ. बलवीर सिंह ने बताया कि आगामी समय में इस महामारी के बचाव हेतु अपने दैनिक जीवनचर्या में एवं अपनी आदतों में बदलाव करना आवश्यक है। कार्यक्रम में सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा के साथ ही इसके संदेश को स्वयंसेविकाओं एवं स्वयंसेवकों के माध्यम से समाज में पहुंचाने पर बल दिया गया।

एनसीसी ने दी पुलवामा शहीदों को श्रद्धांजलि

संस्थान में राष्ट्रीय केडेट्स कोर (एनसीसी) के कैडेट्स ने 14 फरवरी को एक कार्यक्रम आयोजित करके पुलवामा के हमले में शहीद हुये जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर कैडेट्स ने शहीदों की स्मृति में गान प्रस्तुत किया। एनसीसी की एएनओ आयुषी शर्मा ने शहीदों की शहादत को याद किया। अध्यक्षता करते हुये आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि देश के जवानों के प्रति पूर्ण सम्मान प्रत्येक देशवासी के दिल में होना आवश्यक है। इस अवसर पर डॉ. प्रगति भटनागर, श्वेता खटेड़, सोमवीर सांगवान, अभिषेक शर्मा, शेरसिंह, शिवानी, आरती, मनीषा बुगालिया, मनीषा शर्मा, प्रियंका, पूजा, निरमा, गीता, पुष्पा, वर्षा आदि उपस्थित रहे। मुख्य एनसीसी प्रभारी अजयपाल सिंह भाटी ने कार्यक्रम का संचालन किया।